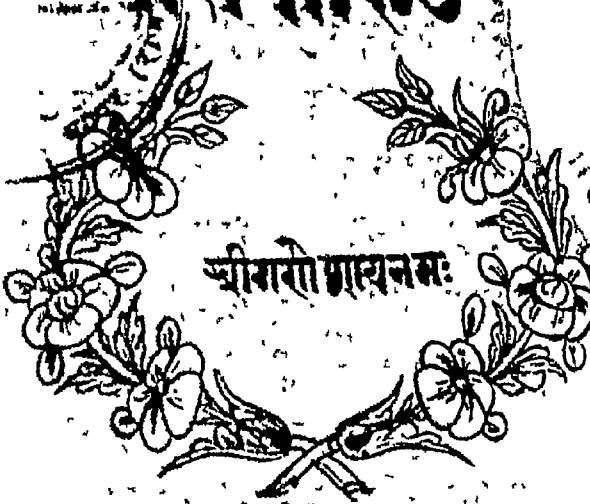


# शिवकारण्ड



श्रीगणेशाय नमः

श्लोक

वरानामर्शसङ्घननां रसानां कृन्द सामापि संरां ला  
 नाञ्च कर्तारो वन्दे वारणीविनायको ॥ १ ॥ भवानी प्रकृतौ  
 वन्दे अदाविपुवास रूपिरो । वाभ्याविनायन पपूयन्ति सि  
 द्धाः स्वान्तः स्वमी प्रवरं ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयन्तित्यं गुरु  
 प्रहुर रूपिरो । यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्ववन्द्य  
 ते ॥ ३ ॥ सीता राम गुरतग्राम पुराया स्वयविहारि रौ  
 वन्दे विश्वविज्ञानौ कवी प्रवर कपी प्रवरौ ॥ ४ ॥ उद्भूत  
 स्थिति संहार कारिणीं क्रेप्राहारिणीं सर्वश्रेयस्करिं सीता  
 नतोहं रामवल्लभां ॥ ५ ॥ यन्माया वपुर्वति विपुवमखित्वं  
 ब्रह्मादि देवास्सुरा यत्स त्वाद स्तयैव भातिसकलं रक्षो-य  
 थाह भुसः । यत्पादसूत्रमेव भातिहि भवाम्भोधेस्ति तीर्था  
 वतो वन्देः हं तमपूय कारणा करं रामा ख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥  
 जाना पुराणा निरामाराम सस्मते यद्गमाय रौ निगादितं ।  
 क्वचिदन्य तोपि स्वान्तस्सुरवाय तुलसी रघुनाथ गांशाभाया  
 निवन्द्य मति संजुल मात नोति ॥ ७ ॥

सौरा

जेहि सुमिरत सिधि होइ गगानायक करिवरवदन  
 करे अतुग्रह मोइ बुद्धिरासि अम गुसा मदन ॥  
 मूकहोइ वाचाल पुत्रा चटहि गिरिवर गहन  
 जासु कृपा सुदयाल द्रवी सकल करि मलदहन  
 नीलसरोरुह पूयास तरुणा अरुणवर्मिजनयन  
 करहु सुमम उरधाम सदा शीर सागर पूयन  
 कुन्नु इन्दु समदेह उमा रमणा करुणा अयन  
 जाहि दीन पर नेह करहु कृपा सर्वत मयन ॥  
 वन्दौ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि ॥  
 महा मोह तम पुज जासु वचन विकर विकर  
 चौपाई

वन्दौ गुरु पद पद्म पराशा  
 अमिय मूरि मय चरणा चारु  
 सुकृत प्रभु तन विमल विभूती  
 जनमजसजु मुकर मलहर नी  
 आगरु पदन रवमणि गगानोती  
 दलन मोह तम हंस प्रकास  
 उषरि विमल विलोचन हियके  
 सुकृति राम चरित मणि मारिका

सुकवि सुवास सरस अचुराणा  
 समन सकल भव रुज परिवा  
 मंजुल मंगल मोद प्रसन्ती  
 किये निलकण्ठ गगाना वस करनी  
 सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती  
 बडे भाग्य उर आवहि जासु ॥  
 मिरहि दोष दुरव भव रजनी के  
 गुप्त प्रगाद ज्वर जोजेहि खानिक

सोइ यथा सुअजन अजि हंस साधक सिद्ध सुजान ॥  
 कौतुक देव हीं प्रैल वन भूतल भूरि निधाना ॥१॥

गुरु पद अमर दुमंजुल अजन  
 तैहिक विमल विवेक विलोचन  
 वन्दौ प्रथम मही प्रवर चरणा

नयन अमिय हृग दोष विभजन  
 वरणा राम चरित भव मोचन  
 मोह जनित संग्राय सवहरणा

प्रभा सांड ली के सीह न गुसाई तुलसीदासजी को भी गस चरित का वार्तन करना



सुजन समाज सकल गुराध्वनि  
 साधु चरित प्रभुमसरस कयास ॥  
 जो सहि दूरव परिमिदु दुरादा  
 मुद्मंगल मै संत समाज ॥  
 राम भक्ति जहं सुरसर धारा

दरौ प्रणामः सप्रेम खुबानी  
 निरस विप्राद् गुरासय फल जय  
 वन्द नीय जेहि जरा यप्रा पात्रा  
 जो जरा जगस तीरथ राज ॥  
 सर स्वति ब्रह्मविचार प्रचार

विधिनियेधमय कलिमलहरणी  
 हरिहर कथा विराजत वेनी ॥  
 बटविपुवास अचलनिजधर्मा ॥  
 सबहिं सुलभसवदिनसबवेष्टा  
 अकथयत्लोकिक तीरथराज

कर्मकथारविनन्दन चरणी  
 सुनत सकल सुद संगलदेनी  
 तीरथराजसमाज सुकर्मा ॥  
 सेवतसादर समन कलेष्टा  
 देइसद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दोहा सुनि समुक्तहिजन सुदितमनमज्जहि अतिअनुराण  
 लहहिं चारिफल अछत तनुसाधु समाजप्रयाग २

मज्जन फल देखिबू ततकाला  
 सुनि अचर्य करै जानिकोई  
 बालमीक नाह बट योनी ॥  
 जलचरथलचरनभचरनाना  
 मति कीरति गति भूतिभलाई  
 सोजानव सत संग प्रभाऊ ॥  
 विनसतसंग विवेक नहोई  
 सतसंगत सुद संगल मूला  
 सबसुधरहिंसतसंगत पाई ॥  
 विधि वस मुजनकुसंगति परही  
 विधि हरिहर कवि कोविद वानी  
 सोसोहिंसनकहिजात न कैसे

काकहोहिं पिकवकठमगला  
 सतसंगत सहिसानहिं रोई  
 निजनिजसुवनकही निजहोनी  
 जेजडवेतन जीव जहाना  
 जवजेहि जतन जहां जेहि पाई  
 लोकोहु वेदन आन उपाऊ  
 रामकृपा विन सुलभ न सोई  
 मोइ फलसिधि सब साधनफूला  
 पारस प्रसि कुधातु सुहाई ॥  
 फरिाभरिाससनिजगुरा अनुसरहि  
 कहत साधु सहिसासकुचानी  
 शाक वनिकु मरिागगागुराजैसे

दोहा वन्देसंतसमानचितहितअनहितनहिं कोउ ॥  
 अजलगतअभसुमनजिसिसमसुगन्ध करदोउ  
 संतसरलचितजगतहितजानिसुभाव सनेहु ॥ ॥  
 बालविनयसुनिकरि कृपाएसचरणारतिदेहु ॥ ४॥

बहुनि बंदिखलगरा सन्नभाये जेविनुकाज रहिने वार्ये ॥  
 परहित हानि लाभजिन्हको उजरेहरष विषाद वसेरे

हरिहरयज्ञा राके प्रा ऋ से ॥  
 जेपर दोय लखहिं सह सारखी  
 तेज कृपानु रोष सहि प्रोया ॥  
 उदय केतु समहितसवहीके  
 परअकाजल गितचु परिहरही  
 वन्दौ खलजस प्रोषसरोया  
 पुनि प्रयावोष्टराज समाना  
 वहु रिप्राक्रमविनवौ तेही ॥  
 वचन वञ्जेहि सदा पियारे ॥

परअकाज भट सहस चाहु मे ॥  
 परहित घृतजिनके मनसामखी  
 अघ अत्रगुराधन धनिक धनेप्रा  
 कुम्भ करणासम सोवतनीके  
 जिसिहि मउपल कधीदलगरही  
 सहसवदन वरने पर दोया ॥  
 परअघमुनहिं सहसदसकाना  
 संततसुरानीके हितजेही ॥  
 सहसनयन पर दोय निहार ॥

दोहा उदासीन अरिमीतहित मुनतजरीहरिखलरीति  
 जानि पानिजुगजेरि करि विनय करौ संपीति

मै आपनदिशाकीन्ह निहोरा  
 वायुस पालिय अति अचुरागा  
 वन्दौ संत असज्जन चरणा ॥  
 वि कुरत एकप्राया हरिलेही  
 उपजिहिएकसंवा जल साही  
 सुध मुरासमसाधु असाधु ॥  
 भल्ल अनभल्लनिजनिजकरतौ  
 सुधासुधाकरसुरसरिसाधु ॥  
 गुरा अत्रगुरा जानतसवकोई

तिननिज अरनलाउव सोरा  
 होहिंनिरामिय कवहुंक कागा  
 दुरव प्रदुभय वीचकठुवराणा  
 मिलत एकदारुणा दुरवदेही  
 जलजजेकजिसिगुराविलगाही  
 जनक एकजाजलधि अगाधु  
 लहतसुयप्रा अपलोकविभूती  
 ररल अनलकलिमलीसीअघ  
 जोजेहिभाव नीक तेहि सोई

दोहा भलेभलाईपेलहहिलहहिंनिचाई नीच ॥ ॥  
 सुधासराहिय असरता गरलसराहिय मीच ६

खलसहि अगुरासाधुमुरागाह  
 तेहिं तें कठु गुरा दोयवरवाने  
 भलेउ पोचसवविधि उपजाये

उभय अपार उदाधि अत्रगोहा ॥  
 संग्रह त्यागनविनु पहिचाने  
 मारा गुरादोष वेद विलगाये

कहहिं वेद इतिहाम पुराणा  
 इवमुख पापपुराय दिनराती  
 वानवदेव ऊंच अरु नीच ॥  
 साया ब्रह्मजी वजरादी प्रा  
 काप्री भगहसुरसरिकर्मनासा  
 स्वर्ग नर्क अनुराग विरागा

विधि प्रपञ्च गुरा श्रवणुसा साना  
 साधु असाधु सुजात कुजाती  
 अभिय सजीवन माहुर सीच  
 लच्छ अलच्छरंक अनीप्रा  
 महमा लक्षमहदेव गवासा ॥  
 निगासा राम गुरा दोष विभागा

दोहा अइ चेतन गुरा दोष मय विप्रव कीन्ह कर्तार ॥  
 संतहं सगुरा गृह विपय परिश्रि वारि विकार ७

अथ विवेक जव देइ वेधाता  
 काल स्वभाव कर्म वरि आई  
 सो सुधारि रहि जनजि मिले ही  
 रव लठ करइ मल पाइ सु संग  
 लरिव सुवेय जग वंचक जेऊ  
 उघरहि अंतन होइ निवाह  
 किये कुवेय साधु मन सान  
 हाम कुसंग सुसंगत लाह ॥  
 गमान चढे खपवन प्रभंगा ॥  
 साधु असाधु सदन सुक सारी  
 धूम कुसंगत कारख होई ॥  
 सोइ जल अनल अनिल संघाता

तवतजि दोष गुराहि मनराता  
 मलेउ प्रकृति वस चक भलाई  
 रिलि वरव दोष विमलय प्रदेही  
 मिटहि नमलिन सुभाव अंग  
 वेय प्रताप पूजियत तेऊ ॥  
 काल नेमि जिमि गवरा राह ॥  
 जिमि जग जाम वत हनुमान  
 लोक दुवेद विदित सब काह  
 कीचहि मिले नोच जल संग  
 सुमि रहि राम देहि गरा गारी ॥  
 लिरि वप मुश रा मंजु मिसोई  
 होइ जल दजग जीवन दाता ॥

दोहा अइ भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सु जोग ॥  
 होइ कुवस्त सुवस्तु जग लरवहि सुस्त शरालोग ८  
 समप्रका प्रा तम पारव दुहु नाम भेद विधि कीन्ह  
 प्राप्ति पोषक सोषक समुक्ति जगय प्रा अपप्रा दीन्ह ८  
 अइ चेतन जग जीव जे सकल रास मय जानि ॥

वन्दौसवकेपदकमलमहाजोरिजुगपानि ॥ १०

देवदनुजनरजागरवगप्रेतपितरकन्धर्व ॥

वन्दौकिन्नरजनिचररूपाकरदभवसर्व ११

अकरचालारवचौरासो ॥

मिपाराममयसवज्जाजानी

जानि कृपाकारिकिकरसोह ॥

निजवलबुद्धिभोससोहिंनही

करनवहोरघुपतिगुणागाहा ॥

सुभनशकोआउपाऊ ॥

गतिअतिनीचऊचिह्विअछी

हमिहहिंसजनमेरिटिठार्ड ॥

ज्योवालककहिं तोतरवाता

हंसिहहिं कूरकुटिलकुक्वारी

निलकवितकैहिलागुननीका

जेपरभरिातसुनतहरयाही

जगवहुनरसरितासमभाई ॥

सजनसुकृतसिधुसमकोई

जातजोवनभजलथलवासो

कोरोप्रणामजोरिजुगपानी

सवमिलिकरहुकाडिहलकोह

तातेविनयकोसवेपाही ॥

लघुमतिमोरिचरितअवगाहा

मममतिरकमनोरथराऊ ॥

बहियअतियजगजुरेनछाछी

सुनिहहिंवालकवनमनलोई

सुनिहिसुदितमनपितुअरुमाता

जेपरदयाराभयाराधारि ॥

सरसहोउअथवाअतिफीका

तेवरपुरुषवहुतजगनाही

जेनिजवादबढाहिंजलपाई ॥

देरिवपूविधुवाढहिंजोई ॥

दाहाभागछोटअभिलायददकरोएकविपुवास ॥

पैहहिंसुरवसुनिसुजनजनखलकरिहैउपहस १२

खलपरिहासहाइहितमारा

हंसहिंरकदादुरचातकही ॥

कवितरसिकनरासपदनेह ॥

आयाभरिातमोरिमतिमोरी ॥

अमुपदपीतिनसामुकिनीकी

हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी

काककहहिंकलकंदकढोर

हंसहिंमलिनरवलविमलवतकही

तिन्हकहंसुरवहंससरसएह ॥

हंसवेथोराहंसैनीहंखोरी ॥

तिनिहिकथासुनिलगिहिफीकी

तिन्हकहंसधुरकथारघुवकी



रामभक्तिभयित जिय जानी  
 कविनहोउ नहि चतुरपवीना  
 आवर अर्थ अलंकृत नाना  
 भावभेदस भेद अपारा ॥  
 कवितविवेक एक नहि मोरे ॥

सुनिहहि सुजन सराहि सुवानी  
 सकल कलासवविद्याहीना  
 छन्दप्रवध अनेक विधाना  
 कवितलोषगुराविविधिप्रकार  
 सत्यकहौलिरिवकागदकोरे

देहा भगिातमोरसवगुरारहितविप्रवादिदितगुरा एक  
 सोविचारिसुनिहहि सुमतिजिनकेविमलविवेक १३

इहिसहं रघुपतिनाम उदारा ॥  
 मंगलभवन असंगलहारी ॥  
 भगिात विचित्रसुकविहोतजोउ  
 विधुवदनीसवभाति संवारी ॥  
 सवगुरारहितकुक्कविकृतवानी  
 सादरकहहि सुनहि बुध ताही  
 यदीकवितगुराएकीनाही  
 सोइभगेस मोरे मन आवा ॥  
 धमउ तजे सहज करुआई ॥  
 भनित भेदस वस्तुभलवणी

अतिपावन पुरारा अतिसारा  
 उसासहित जेहिजपतपुरारी  
 रामनामविन्दु सोहन सोऊ ॥  
 सोहन वसनविना वरनारी ॥  
 रामनाम यथा अंकितजानी ॥  
 मधुकरसरिस संतगुरायाही ॥  
 रामप्रतापप्रगट इहि माही ॥  
 केहिनसुसंग वडप्यन पासा  
 अगप्रसंग सुगन्ध वसाई  
 रामकथाजगभंगल करनी

छन्द मालकरनिकलितमलहरनितुलसीकथारघुनाथकी  
 गतिकर कवितासरितकी ज्यो परम पावन पाशुकी  
 प्रभुसुयप्रसातभनितभलहोइहेसुजनगनसावनी  
 भवअंगभूतभसानकी सुभिरत सुहावन पावनी  
 दोहा प्रियलागाहिअति सवहिममभनित राम यथा संग  
 वरविचारिकिकेइकोउ वन्दियभलय प्रसंग ॥  
 स्यास सुरभि पयविप्राद अनियुनद करहि पयपान  
 मिराथाससिय गह यथा गाइहि सुनहि सुजान १५

सगिा सागिाक मुक्ता छविजैसी  
 न्तप किरीट तरुणी तनु पाई  
 तेसहि मुकविकवित वुधकहही  
 मक्ति हेतु विधि भवन विहाइ  
 राम चरित सरविनु अन्ह वाये ॥  
 कविकोविद अम हृदय विचारी  
 कीन्ह पाकज नगुरा गाता ॥  
 हृदयसिंधुमति मीप समांना  
 जोवरये वर वारि विचार ॥

अहि गिरिगजसि मोह नने सी  
 लहहि सकल प्रीसा अधिकई  
 उपजहि अंत २ छवि लहि ही ॥  
 सुमिरत प्रारव धा वनि थाई ॥  
 सो अम जाइ न कोटि उपाये ॥  
 गावहि हरि गुरा कालमलहारी  
 प्रिरधुनि गिरा लोपि पक्ति ताता  
 स्वानी प्रारव कहहि मुजाना  
 होहि कवित मुक्ता मगिा चारु

देहा मुक्तिबेधि पुनिपोहिये राम चरित वरलाग ॥

पहिरै मज्जन विमलतुर प्रीभा अति अनुगाग २६

जेजनमे कलि काल काराला  
 चलत कुपंश वेदमग छुंडे  
 वंचक भक्ति कहाय राम के  
 तिनमह प्रथम रेवजरा सोरी  
 जो अपने अवरगुरा सब कहऊ  
 ताते मै अति अत्य वरवाने ॥  
 समुक्ति विविधिविधिविनीमोरी  
 रतेहु पर करिहहिजे प्रांका  
 कवित होहु नहि चंतुर कहऊ  
 कहं रघुपति के चरित अषारा ॥  
 जीहसारुत गिरि भेरुडडा ही ॥  
 समुक्त अमित राम प्रभुताई

करतव वायस वष सगली  
 कपट कलेवर कलिसल भांडे  
 किङ्कर कचच कोह काम के  
 धिग धरम ध्वज धंधक धोरा  
 वाढे कथा पार नहिं तहहं ॥  
 थारे महं जानि हहिं सत्यने ॥  
 कोउन कथा सुनिदेइहि खोरी  
 मोहिं ते अधिकते जडमनिबंका  
 मति अनु रूप राम गुरा गाऊ  
 कहसति मोरि निरत संसारा  
 कहहु तल कोहि तैरे प्रीभाही ॥  
 करत कथासन अति कदराई

देहा प्रारद प्रीय महेश्वरिधि आगमो नमस पुरा गा

नेतिनेति कहि जासु गुरा करहिं निरतर वामन २७

संभोजनत प्रभु प्रभुता सोई ॥  
 जहां वेद अस कारणा राखी  
 एक अनीह अरूप अमाना  
 व्यापक विषय रूप भगवाना  
 सो केवल भक्तन हित लागी  
 जेहि जन परममता अरु छोह  
 गणवहो गरीबनि राज ॥  
 बुध वरराहिं हरिपति असजानी  
 तेहि वल्लभै रघुपति गुरा गाथा  
 मनिन्ह प्रथम हरि कीरत गाई

तदपि कहे विन रहान कोई ॥  
 भजस प्रभाव भाति बहु भाषा  
 अजस विद्वानन्द परधामा ॥  
 ते अरि देह चरित कृत नाना  
 परम कृपाले प्रसात अनुगामी  
 तेहि करुणा कर कीन्हन कोई  
 सरल सबल साहिब रघुराज  
 करहिं पुनीत सुफल निज बानी  
 कहिहो नाइ राम पद भाषा ॥  
 तेहि सरा चलत सुगम सोहि भाई

सोहा अति अपारज सरित कर जो न्यप सेतु कराहिं ॥

चटि पिपीलिका परमल घुविनु असपारहिं जाहिं १८

एह प्रकार वल्लभनीहि हृदाई ॥  
 वासे आदिक कवि पुंगव नाना  
 चरणा कमल बन्दौ सब करे  
 कलिके कविन करौ परगामा  
 जेशकृत कवि परम सयाने ॥  
 भयेजे प्रहीजे होइ है आगे ॥  
 होहु प्रयत्न देहु वरदान ॥  
 जोषवन्ध बुध नीहि आवरही ॥  
 कीरति भणित भूति भल सोई ॥  
 राम सुकीरत भणित भंवेसा  
 कुम्हरी कृपा सुलभ सोउ सोरे ॥  
 करहु अनुग्रह असजिमजानी

करिहो रघुपति कथा सुहाई  
 जिन्ह सादर हरि चरित बखाना  
 पुरुवहु सकल मनोरथ मेरे ॥  
 जिन बने रघुपति गुरा ग्रामा  
 भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने  
 प्रतावों सबहि कपट छल त्याग  
 साधु समाज भणित समान ॥  
 सो अस चादि वाल कवि कारही  
 सुरसरिसमसव कहं हित होई  
 असमंजस अस सोहि अदेसा ॥  
 क्षियनि सुहावु नि पाट पटोरे  
 विसल पशहिं अनुहरइ सुबानी

सोहा सरल कवित कीरति बिलस सोइ आदरहिं सजात्र

सहज वयर विसगारिपु जो सुनि करहि वरवाम ॥  
 सो न होइ विनु विमलसनि मोहि मति बल अति शौर  
 करहु कृपा हरियण कहों पुनि पुनि करउनि होर ॥  
 कवि को विदर घुवर चरित मानस मंजु मया ल ॥  
 बाल विनय सुनि सुरुचलरि वमो पर को हु कृपाल २६  
 वन्दौ सुनि पद कंज रामायणा जिन्ह निमीयो ॥  
 सखरस कोमल मंजु दोष रहित दूषरा सहित  
 वन्दौ चारु वेद भव वारिधि बोहित सरिस ॥  
 जिनहि न सपनेहु खेद वरन तरघुपति विप्रदश्या  
 वन्दौ विधि पदेनु भवसागर जिन कीन्ह यह ॥  
 संव सुधा प्राप्ति धेनु प्रगटे खल विष वारुनी ३  
 विवध विप्र बुध गुर वररा बन्दि कहों कर जोरि  
 होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि २०

सौरा

दोहा

पुनि वन्दौ शारद सुर सरिता  
 मञ्जन पान पाप हरण का ॥  
 गुरुपितु मातु महेष्वा भवानी ॥  
 सेवक स्वामिसखसि यपी के  
 कलि विलोकि जगहित हर गिरिज  
 अनमिल अखर अर्थ न जापू ॥  
 सो महेष्वा सो पर अनु कूला  
 सुभिर शिवाशिव पाय पसाऊ  
 भरोन मोरि शिव रूपा विभांती  
 जोयह कथा सनेह समेता ॥  
 होइ कहिं राम चरता अन्न रागी

पुंगल पुनीत मनोहर चरिता  
 कहत सुनत इक हर अविवेका  
 प्रशावों दीन वन्धु दिन दानी  
 हित निरुपधिसवविधि तुलसीके  
 साचर मंत्र जाल जिन सिरजा  
 प्रगट प्रभाव महेष्वा प्रतापू ॥  
 करौ कथा सु ह मंगल मूला  
 वरगौरा राम चरित चित चाऊ ॥  
 प्राप्ति समाज सिद्धि मनहु सुराली  
 कहि कहिं सुनि कहिं समुभिसचेता  
 कलिमल रहित सुमेगल भागी

दोहा सपनेहु सांचेइ मोहि पर जो हरि गौरि पसाड ॥

तीफुर होउ जो बल्लु

वन्दौ अवधि पुरी अति पावन  
 प्रशावौ पुरन नारि वहोरी ॥  
 सियनिन्दक अघ ओघ नसाये  
 वन्दौ कौशल्यादिशि प्राची ॥  
 प्रगटेउ जहं रघुपति प्राणि चारु  
 द्यारण राउ सहित सब रानी ॥  
 करौ प्रणाम कर्म मन बानी ॥  
 जिनहिं विचि बड भयो विधाता

सरजू सरिकलिकलुषनसावन  
 समताजिन परप्रभुहिंन थोरि  
 लोकविप्रोक वनाय बसाये ॥  
 कीरतिजासु सकलदिशांवी  
 विशुबसुरवदखलकमल तुसाह  
 सुकृतसुमगल भूरतिखानी  
 करहु कपासुत सेवक जानी  
 महिसा अवधि रामपितुमाता

सोखा वन्दौ अवधिभुआलसत्प्रेमजोहि राम पद ॥

विकुरतहीनदयाल पियतनत्तरा इव परिहरेउ ॥

प्रशावौ परिजनसहित विदेह ॥  
 योगभाता महं राखेउ गोई ॥  
 प्रशावौ प्रथमभरत के चरना  
 रामचरणा पंकजमनजासु ॥  
 वन्दौ लक्ष्मणा पदजलजाता  
 रघुपति कीरतिविमलपताका  
 शेषसहस्र प्राणि जगकारन  
 सदासोसाबुकूलरहुसोपर ॥  
 रिपुसूदनपर कमलनमासी  
 महावीरबिनवों हनुमाना

जाहिरामपदगूढ मनेहू ॥  
 रामविलोकत प्रगटेउ सोई ॥  
 जासुनियमवत जाइन बरना  
 लुब्धमधुपद्वतजैनवासू ॥  
 सीतलसुमगभक्तसुरवदाता  
 दंडसमानभयो यशु जाका  
 जो अवतरेउ भूमिभय रासन  
 कपासिंधुसोमित्रगुराकर  
 शरसु प्रीतलभरत अनुगामी  
 रामजासु यशु आप वरदाना

सोखा वन्दौ पवनकुमार खलवन पावकज्ञान घन ॥

जासु हृदय आगावसेहि राम प्रारचापधरि ६

रूपि पति जच्छ निप्रावरजा  
 वन्दौ सबके चरणा मुहाये ॥

चंगदादि जेकीशु समाजा  
 अधम शरीरराम जिन पाये

रघुपति चरणा उपासक जेते ॥  
 वन्दौ पदमरोज सब करे ॥  
 प्रक संकादि आदि मुनि नाद  
 प्रयावो सबहि धरनि धरि प्रीणा  
 जनक सुता जरा जतनि जानकी  
 ताके जुग पद कमल सनाऊ  
 पुनि मन वचन कसे रघुनायक  
 राजिवनयन धरे धनु प्रायक ॥

रवा मरुगा सुर नर असुर समेते  
 जेविन कातरास के चरे ॥  
 जे मुनिवर विज्ञान विप्रारद ॥  
 करहु कृपा जज जानि मुनी प्रा ॥  
 अति प्राय प्रिय करुणा निधानकी  
 जा सुकृपानिर्मल मति पाऊ ॥  
 चरणा कमल वन्दौ सब स्तुतियक  
 भक्त विपति भजन सुख दायक

दोहा गिरा अर्थ जल वीचिसम कहिये भिन्न न भिन्न ॥  
 वन्दौ सीताराम पद जिनिहिं परम प्रियरि वन्द २२

वन्दौ राम नाम रघुवर के ॥  
 विधि हरि हर समय वेद प्रा रासे  
 महा मंत्र जो अपत सहै प्र ॥  
 महिमा जासु जानि गरा राऊ ॥  
 जानि आदि कवि नाम प्रताप ॥  
 सहस नाम सम मुनि प्रिवचानी  
 हरये हेतु हेरि हर ही को  
 नाम प्रभाव जानि प्रिध नीके

हेतु कृपान भानु हिम करके  
 अगुणा अनूपम गुणानिधानसे  
 कापी मुक्ति हेतु उपदेश ॥  
 प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥  
 भयेउ सिद्ध करि उलटा जापू ॥  
 जपिजे चीज शिव संग भवानी  
 किय भूषण तिय भूषण तीको  
 काल कट फल दीन्हु चसी के ॥

दोहा वर्या अतुर रघुपति भग ति तुलसी प्रालि सुदास  
 राम नामावर वररा जुग सावन भादौ मास ॥ २३ ॥

आखर मधुर मनो हर दोऊ  
 सुमिरत सुलभ सुखद सब काह  
 कहत सुनत सुमिरत सुदि नीके  
 वरणात वरणा प्रीति विलगाती  
 गरनारायणा सरिस सुभाता

वर्या विलोचन जन जिय जोऊ  
 लोक लाहु पर लोक निवाह  
 राम लखणा सम प्रिय तुलसीके  
 प्रह्न जीव सम सह ज संघाती  
 जरा पालक विप्रोष जनजाती

भक्ति मुक्तिय कल्ल करन विमूषण स्वाद तोय सम सुगति सुधा के जनमन मंजु कंज मधु करसे ॥	जगहित हेतु विमल विध पूषण कमठ भोय सम धा व सुधा के ॥ जीह यणो मति हरि हल्ल धरसे
---	--

दीहा एक श्रुच इक मु कट मरिण स वरणान पर जोइ  
तुलसी रघुवर नाम के वरण विराजत देह २४

समुकत शरस नाम अरुनासी नामरूप होठ ई प्रा उपाधी ॥ कोवड छोटे कहत अ पराधू ॥ देखिय रूप नाम आधीना रूप विशेष नाम विनु जाने सुभिरिय नाम रूप विनु देखे नाम रूप गति अकथ कहानी अगुरा सगुरा विच नाम सुसाखी	पौते परस्पर प्रभु अनुगामी अकथ अनादि सुसा मुक्ति साधी सुनिगुरा भेद समुक्ति है साधू रूप ज्ञान नहि नाम विहीना करत लगति न परहिं पहिचाने आवत हृदय सेने ह विप्रोये ॥ समुकत सुखद न परत वखानी उभय प्रबोधक चतुर दुभायी
---	--

दीहा राम नाम मरिण दीप धरि जीह देहरी द्वार ॥ ॥ ॥  
तुलसी भीतर चाहिरो जो चाहसि उजियार २५

नाम जीह जपि जागहिं योगी ब्रह्म सुरवाहिं अनुभवहि अ नूपा जाना चाहिं गद्गति जेऊ ॥ साधक नाम जपहिं लय लाये जपहिं नाम जन आरत भारी ॥ राम भक्ति जग चारि प्रकार ॥ चहुं चतुर न कहं नाम अधारा चहुं पुग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ	विरति विचार प्रपंच वि योगी ॥ अकथ अनामय नाम चरुपा ॥ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ होहिं सिद्ध अणि मादि कपाये सिद्धि कु संकट होहिं सुरवारी मुकती चोख अनघ उदारा ॥ जानी प्रभुहिं विशेष पियारा ॥ कलि विशेष नहिं आन उपऊ
---	---

दीहा सकल कामताहीन जे राम भक्ति रस लीन ॥  
नाम सुप्रेम पियोय हृदलिनहिं कियो मन सीन २६

अगुरासगुरा दोउ वहा स्वरूपा  
 मोरेसत वड नामवुह ते ॥  
 प्रह सुजनजेवगर्ह मने की  
 एकदरुगतदोस्वय सक ॥  
 उभय अगस युगागुमनामते  
 व्यापक एक ब्रह्म अविनाप्री  
 असप्रसु हृदय अकृत अविकारी  
 नामनिहपरा नामजतन ते

अकथ असाधि अनादि अनूपा  
 किये जेहियुगनिज वसनिजहोत  
 कहउ प्रतीति प्रीति रुचमनकी  
 पावक युगसम ब्रह्मविवेक  
 कह नाम वड ब्रह्म राम ते  
 सत चेतनधन आनन्द राणी  
 सकलजीवजरादीनदुरवारी  
 सोठ प्रगट तजिमि सोस्मरतनते

दोहा निगुरातेइहि भातिवड नामप्रभाव अपार ॥  
 कहउ नामवड रामते निजविचार अनुसार ॥२७

रामभक्त हित नरतनु धारी  
 नामसप्रेमजपत अनया सा  
 राम एक नापसतिय नारी  
 अविहितराम मुकेतमुताकी  
 सहित दोय दुरवदासदुगासा  
 मजेउ राम आपु भव चाप  
 दडक वन प्रभुकीन्हमुहावन  
 निशि अतिकादलेउरवतद

सहितसकट किय साधुसुरवारी  
 भक्ति होहि सुद मंगल वासा  
 नामकोटि खलकु नतिमुधारी  
 सहितसेन सुत कीन्ह विवासी  
 हलइ नामजिमि रविनिप्रनासा  
 भवभय भजन नाम प्रतापू ॥  
 जनमन अमित नामकिप्रपावन  
 नामसकलकलिकलुषनिकंद

दोहा प्रावरा गीधमुसेवकानि सुगति दीन्ह रघुनाथ  
 नामठधारे अमितखलवेदविदित गुरागाथ ७

रामसुकटविभायरा दोऊ  
 नाम अनेक गरीब निवाजे  
 रामभाल कपिकटकवटोरा  
 नामलेतभुवसिंधुसुरवाही  
 रामसकुलारा रावरा मारा

राखेपाररा जानसव कोरु  
 लोकेवेद वरविद विराजे ॥  
 सेतु हेतु अमकीन्हनथोरा ॥  
 करहुविचार सुजनमनभाही  
 सीयसहितनिजपुस्पगुबारा



राजाराम अवधरज धानी ॥ सेवक सुमिरत नाम सपीती फिरत सनेह भगन मन अपने	गावतशुरासुरमुनिवर वानी विभुधम प्रवलमोहदलजीती नाम प्रसाद प्रोचनहिंसपने
--	---

दोहा ब्रह्मरामते नाम वड वरदायक वरदानि ॥ ॥

रामचरित पूत कोटिमहं लियमहेप्राजियजानि २६

नाम प्रसाद प्रामु अविना प्री शुकसनकादि सिद्ध मुनियोगी नारद जानेउ नाम प्रताप ॥ नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसाद ॥ धर्वसगलातनि जपेउ हरि नाम सुमिरि पवन सुत पावन नाम अपरा अजामिल गज गनिकाह कहुउ कहां लगी नाम वडाई	साज असे नाल भगल रा प्री नाम प्रसाद ब्रह्मसुरवभेगी जगप्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू भक्त प्रिये भरी भे प्रह्लाद पायेउ अचल अनूपम ठाम् ॥ अपने वप्रा करि रावेउ राम भये मुक्ति हरि नाम प्रभाऊ ॥ राम न सकहि नाम प्रसागाई
---	---

दोहा राम नाम को कल्पतरु कलि कल्यानि निवास

जो सुमिरत भये भागते मुलसी तुलसी दास ३०

चहु युग तीनि कालि त्रिह लोका वेद प्राणा सलमत एह ॥ ध्यान प्रथम युग माख युगद्वेज कलिकेवल मलमूलमलीने नाम काम तरु काले कराला राम नाम कलि अभिसत दाता नहि कलिकर्म नमक्ति विवेक काल नेमि कलिकपटनिधान	भये नाम जाये जीव विप्रोका सकल मुकत फल राम सनेह हापर परि तोषत प्रभु पूजे पापयोनिधि जन मन मोना सुमिरत समन सकल जंजाला हित पर लोक लोक पितु माता राम नाम अवलंब नए क् ॥ नाम सुगति समरथ हनुमान्
--	---

दोहा राम नाम नरके सरी कनक कशिपु कलिकाख

आपक जन प्रह्लाद जिमि पालहिं कलि सुर साल ३१

भाय कुभाय अजरव चालसद्व  
 सुभिर सुनामरामपुरागाथा  
 मोरिसुधारहि सो सब भांती  
 रामस्व स्वामिकु मेवक भोस  
 लोकहु वेद सुसाहेव रीती ॥  
 गभीगरीव गाम नर नागर  
 सुकविकु कविनिजमति अनुहा  
 साध सुजान सुशील नरपाला  
 सुनि सनमानहि सवहि सुवानी  
 यह शाक्त तमहि पालसुभाऊ  
 रीकृत राम सनेद नि सोते ॥

नामजपत भगलादिप्रादसह  
 कोनाइरधुनाथहि माथा ॥  
 जासुक्तपा नहि कृपा अघाती  
 निजदिशि देवदयानिधिपरे  
 विनय सनत पहि चानतपीती  
 पसिडतमूढ मलीन उजागर  
 न्तपहि सोहत सवनर नारी  
 ईश अशु भव परम कृपाला  
 अनितमक्ति मति गति पहिचानी  
 जानिशिरो मणिकोश्लराऊ  
 कोजगसंद मलिनमतिमोते

होहा सदसेवक कीपीति रुचिररिवहहि राम कृपाल  
 उपलकि सजलजानेजहि सचिव सुमतिकपिभाल ३२  
 होहु कहवतसवकहत राम सहत उपहास ॥  
 साहेवसीतानाथसे सेवक तलसीदास ॥ ३३

अतिवडि मोरि टिटाई खोरी  
 समुक्ति सहमिमोहि अपडर अपने  
 सुनि अवलोकि मुचितवखु चाही  
 कहतनसाइ होइ अति नीकी  
 रहतन प्रभु चित्तवृक कियेकी  
 जेहि अघवधेउ व्याधेनिमिवाली  
 सोइ करतूति विभीषणा केरी  
 ते भरतहि भेटत सनमाने

सुनि अघ नरकहु नाकसिकोरी  
 सोसुधि रामकीन्ह नहिसपने ॥  
 भक्तिमोरी मतिस्वामिसराही ॥  
 रीकृत राम जान जन जीका  
 कारत सुरति सो चारहियेकी  
 फिरसुकंठ सोई कीन्ह कुचाली  
 सपनेहु सो नराम हिय हेरी  
 राजसमारुवीर वरवाने

होइ प्रभु मरुतर कपिडारपर तेकिय चापु समान ॥  
 तलमी कहं नराम मे साहेव श्री लनि धान ॥ ३४

रामानकाइ रावरहे सब ही को नीक ॥  
 जो यह सांचो है सदा तो नीको तुलसीक ३५  
 ग्रहं विधिनिज गुरा होय कहि सबहिवहूरीशिरनाइ  
 वरगौरु सुवराविपाव यूपामुनिकलिकलुषनसाइ ३६

यात्रवल्क्य जो कथा मुहाइ  
 काह हो साइ सवाद वरवा नी  
 प्रभु कीन्ह यहि चरित मुहावा  
 सोइ प्रिवकाक भुमुयडहिंदीन्ह  
 तोहि सन यात्रवल्क्य पुनि पावा  
 ते आता वक्ता सम प्रीला ॥  
 जानहिं तीन कालनिज ज्ञाना  
 औरो जे हरि भक्ति र जाना ॥

भरदाज मुनि वरहि सुनाइ  
 सुनहु सकल सज्जन सुखमानी  
 बहुरि कृपा करिउ महिं मुनावा  
 राम भक्ति अधिकारी चीन्हा  
 तिन पुनि भरदाज प्रति गावा  
 सम दरशी जानहिं हरि लीला  
 करतल गीत आमलक समावा  
 कहहिं सुनहिं समुफहिविधिनां

दो० मैपुंजिद्विद्वयःरः  
 समुक्ति परानहिं बालपन तव आंतरहेठ अचेत ३०  
 औता वक्ता ज्ञाननिधि कथा रामकी गूढ ॥  
 किसिसमुंके इहि जीवजड कलि मलाशित विमद ३२

तदपि कही गुरु वारहिं वा राता  
 भायावन्ध करवमै सोई ॥  
 जस कछु बुधिविवेक वल्लभो  
 निजसे देह मोह भ्रम हरणी  
 बुधिविचाम सकल जतरंजनि  
 राम कथा कलि मन्नग भरणी  
 राम कथा कलि कामद गाई  
 सोइ वसुधा तल सुधा तरंगिन  
 असुरे सेन समनकी निकेदनि  
 संत समाज पयोधि रमा स्त्री  
 यम गण सुहमस जगय मुनासी

समुक्ति बरी ककुम त अनुसाय  
 मेरे मन प्रवोष जेहि होई  
 तसु कहि हौं हिय हरिके प्रेरे ॥  
 कारो कथा भवसरिता तरणी  
 राम कथा कलि कलुष विभंजनि  
 पुनि विवेक पावक कह्य अणी  
 सुजन सजीवन मूर सुहाई  
 भवभजनि धर्मभेक भु अगिनि  
 साधु विबुधि कुलहित गिरिनंदीम  
 विप्रवभार धर अचलक्षमासी  
 जीवन मुक्त हेतु जनुका प्री

रामहि प्रिय पावन तुलसीसी  
प्रियप्रियमेकल प्रौल सुख सी  
सुदगुरासुरगारा अश्व अदितिशी

तुलसिदासहिनहियदुलसीसी  
सकलसिद्धिप्रद संपातिगहो  
रघुवरभक्तिप्रेमपरिमितिसो

दोहा राम कथा मंदाकिनी चित्रकूटचित्त चारु  
तुलसीसुखममनेहवनमियरघुवीर विहास ३६

संतप्रसातोदर सासिगाह  
दानमुक्तिधनधर्मभामके

रामचरितचिन्तामरिा चारु  
जाभंगलशुभाशामरामके  
सदगुरुज्ञानविशगयोगके  
जननिजनकमियरामप्रेमके  
शुभनपापसंतापशोकके  
सचिवसुभरभूपतिविचारके  
कापकोहकालिमलकारिगाके  
अतिथिप्रज्यप्रियतमपुरारके  
मत्रमहामरिाविययव्यालके  
हरनमोहतमदिनकरकरसे  
अभिमतदारिदेवतरुवरसे  
सुकविप्रारदभमनडुगारासे  
सकलमुक्तफलमुरैभोगसे  
सेवकमनमानसमरालसे

दानमुक्तिधनधर्मभामके  
विबुधवैद्यभवसीमरोगके  
वीजसकलव्रतधर्मनेमके  
प्रियपालकपल्लोकलोकके  
कुंभजलोभउदधिअपारके  
केहरिसावकजनमनवनके  
कामदघनदारिद्रद्वारिके  
सेतकठिनकुअंकभालके  
सेवकप्रालिपालजलधरसे  
सेवतसुलससुरवदहारेहसे  
रामभक्तजनजीवनवनसे  
जाहितचिरुपधिसाधुलोमसे  
पावनगारातरगमालसे ॥

दोहा कुपथकुतक कुचालिकालिकपटदंसपाथगड  
दहनरामगुरायामडुमिईधनअनलपचराड ४९  
रामचरितरकेशकरसरिससुरवदसवकाहु  
सखनकुमुदचकोरचितहितविशेषवडलाहु ४९

जेहिचिधिप्रकारकहाकवान  
कथाप्रबन्धविचित्तवनाई

कीन्हप्रभजेहिभांतिभवानी  
सोसर्वहेतुकहवमोंगार्ड

जेहिचिधिप्रकारकहाकवान  
कथाप्रबन्धविचित्तवनाई

जिन यह कथा सुनी नहि होई  
कथा अलौकिक सुनी हिनो ज्ञानी  
राम कथा की भक्ति जा नाहीं  
नाजाभात राम अब तारा ॥  
कल्पभेद हरे चरित सुहाये  
करिय न सप्राय अस डर श्रानी

जनि आश्चर्य करै सुनि सोई  
तहि आश्चर्य काहि अस जानी  
असपती तितिन के मन गाहीं  
रामायण प्राप्त कोटि अपारा  
भाति अनेक मुनी श्रान गाये  
सुनिय कथा सादर रति मानी

रोहा राम अनन्त अनन्त गुरा अमित कथा विस्तार  
सुनि आश्चर्य न मानि हहि जिनके विमल विचार ४२

इहिविधि सब सप्राय करि दूरी  
पुनि सब ही दिन वों कर जोरी  
सादर प्रीति नहि नाइ अब माथा  
सम्बत सोरह सो इकतीस  
नौमी भोमवार मधु मासा  
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावति  
असुर नागरवग नर मुनि देवा  
जन्म महोत्सव रचि सुजानी

सिर धरि गुरु पद पकज धुरी  
कारत कथा जेहि लागु न खोरी  
वरनौ विप्रद राम गुरा गाथा  
करो कथा हरि पद धरि सीसा  
अवध पुरी यहि चरित प्रकासा  
तीरय सकल तहां चलि आवहि  
आय करहि रघु नायक सेवा  
करहि राम कल कीरति गाना

रोहा मज्जहि सज्जन वृन्द बहु पावन सरयू नीर ॥  
जपहि राम धरि ध्यान डर सुन्दर प्रयास प्रीर ४३

दर प्रापरा मज्जन अरु पाना  
नदी पुनी त अमित महिमा श्रुति  
राम धामदा पुरी सुहावनि ॥  
चारि रवानि जग जीव अपारा  
सर्वविधि पुरी मनोहर जानी  
विमल कथा कर कीह अभा  
राम धरित मानस यह नामी

हरे पाप कोहि वेद पुरा ना ॥  
कोहिन सकहि प्रार्थ विमल माति  
लोक समस्त विदित जग पावन  
अवध तजे तन नहि संसारा  
सकल सिद्ध प्रद भंगल रवानी  
सुनत न साहि काम मद्द मा  
सुनत अवन पाइय विधासा

मन करिवियय अनल वनजही  
 राम चरित मानस मनभाव न  
 विविधि दोषदुरवदारिद्रावन  
 रचिमेहेप्रनिजमानस राखा  
 ताते राम चरित मानस वर  
 कहौ कथा सोइ सुरवद सुहाई

होइ सुखी जो इहि भर पर ही ॥  
 विरचेउ प्रभु सुहावन पावन  
 कलिकुचालिकलिकलुपनमान  
 पाइ सुसमय प्रिवासन भाया  
 धरेउ नामहिय हेरहरयि हर  
 सादर सुजन सुनहु मनलाई

दोहा जस मानस जोहि विधि भयो जग प्रचार जोहि हेत ॥

अव सोइ कहौ प्रसंग अवन सुमिरिउ मा वष केनु ६४

प्रभु प्रसाद सुमतिहियहुलसी  
 करउ मनोहर मति अचुहारी  
 सुमतिभूमिशतहृदय अगाध  
 वरयहिराम सुयप्र वर वारि ॥  
 लीला सुगुरा जो कहौ हंखवानी  
 प्रेम भक्ति जो वरिणी न जाई  
 सो जल मुक्तत प्रालिहित होई  
 मेधा भद्रिगत सो जल पावन  
 भरेउ सुमानस प्रिथिल थिरान

राम चरित मानस कवि तुलसी  
 सुजन सुचेत मुनिलेहु सुधासी  
 वेद पुराणा उदधि घन साधु ॥  
 मधुर मनोहर मंगल कासी  
 सोइ स्वच्छता करै मलहानी  
 सोइ मधुरता सुप्रतिस्त नोई ॥  
 राम भक्त जग जीवन सोई  
 सिमिति अवराम गुवलेउ सुहावन  
 सुरवद प्रीतरुचि चारु चिराना

दोहा सुद सुदर संवाद वर विरचेउ बुद्धि विचार  
 तेइ याहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ६५

सप्र प्रवन्ध सुभग सो पाजा  
 रघुपति महिमा अगुरा अवाध  
 राम सीयथप्रालिल मुधासम  
 फूडन सवन चारु चौ पाई  
 छन्द सोरठा सुदर दोहा ॥  
 अर्थ अनूप सुभाव सुभासा

ज्ञान नयन निरवत मनमाना  
 चरन व सोइ वर वारि अगाधा  
 उयता कीचिविलास मनोरमा ॥  
 युक्ति मजु मरिणी सीप सोहाई  
 सोइ वहु रंग कमल कुल सोहा  
 जोइ पराग मकरंद सु बासा

सुकृत पुंज मज्जुल अलिमाला  
 धुनि अवर वकवित्तपुणाजाती  
 अर्थधर्म कामादिक चारी  
 नवरसजप तप योगविरागा  
 सुकृती साधुनामगुरा गाना  
 संतसमाचक्रुंदिश अंवरार्द्र  
 भक्ति निरूपणाविविधिविधाना  
 संयमनियम फूल फलज्ञाना  
 शैरो कथा अनेक प्रसंगा

ज्ञानविराग विचारमरात्ता ॥  
 मोनमनोहरते बहुभाती  
 कहव ज्ञानविज्ञानविचारी  
 तेसवेजलचरचारुतडागा  
 तिविचित्रजलविहंगसमाना  
 अद्वा ऋतु वसंत समगार्द्र  
 समादयाद्रुम लताविताना  
 हरिपदरति रसवेदवरवाना  
 तेइ अकपिकं कुरुवणाविहंगा ॥

देहा पुद्गुपवाटिका वागवन  
 मात्मीसुमनसनेहजल सींचत लोचनचारु ४६

सुरवसुविहंगविहार

जगावृद्धि यह चरितसंभारे  
 सदा सुनहिं सा दर नरभारी  
 अतिरवतजेविषयी वककागा  
 संवकभेकसिवांसमाना  
 तेहि कारणा आवतहियहारे  
 आवत इहि सर अतिकठनाई  
 कठिनकुसंगकुपयकराला  
 गृहकारज नानाजजात्ता  
 वनचक्रु विषयमोहमदमाना

तेराहे तालचतुरारववार  
 तेइसुरवरमानस अधिकारी  
 इहिसरनेकदनजाहिअमागा  
 इहोनविषयकथा रस नाना  
 कामीकाकवलाक विचारे  
 रामकृणाविनु आइ नजाई ॥  
 तिनकेवचन व्याधुहरियाला  
 तेइ अतिदुर्गम शैलीविप्रात्ता  
 नदीकुत केभयकरना नी

देहा जे अद्वा सवलरहित नहि सतन कर साथ ॥ ४७  
 तिन कहमानस अगम अतिजिनहिं नपिपरघुनाथ

जो करिकेजाइ पुनि कोई  
 जडताजाइ विषमरुत्तागा  
 करिनजाइ सर मज्जनपाजा

जातहि नीदजुडाई होई  
 गयउन मज्जन पाव अभागा  
 फिरि आवैसमेत अभिमाना

जोवहोरिकोउपूठनआवा  
 सकलविघ्नव्यापहिनिहितेही  
 सोइसादरसामञ्जनकरही  
 तेनरयहसरतजहिनकाहु  
 जोनहाइचहइहिसेरआइ  
 असमानसमानसचरवचाह  
 वयोहृदयआनन्दउछाह  
 चलीसुभासरितासरितासो  
 सरयनाससुसंगलमूला  
 जदीपुनीतसुभानसनदिनि

सरनिदाकारिताहिमुनाडा  
 रामकृपाकरिवितवहिजेही  
 महाघोरत्रयतापनजरही  
 जिनकेरामचरितमलसा  
 सोसतसगकरौमलवतइ  
 भइकविवृद्धिविमलश्रगाह  
 उमगोउप्रेमप्रसोदप्रबाह  
 रामविमलयप्रोजलभरिता  
 लोकवेदसंतमंजुलकला  
 कलिमलतरतरुमूलनिवो

दोहा श्रोतात्रिविधिसमाजपुरयामनगरदुहुकुल  
 सतसमाअनुपमअवधसकलसुसंगलसखे ४८

रामभक्तिसुरसरिनीहजदि  
 सानुजगमससरयप्रपावन  
 युगविचभक्तिदेवधुनधारा  
 त्रिविधितापत्रासकत्रिमहान  
 मानसमूलमिलीसुरसरिही  
 विचविचकथाविविचविभागा  
 उमामहयुगविराहवराती  
 रघुवरजन्मअनन्दवधाई

मिलीसुकीरितसुरयुसुहाज  
 मिलेउमहानदखोनसुहावन  
 सोहितसहितसुनिरीविचार  
 रामस्वरूपसिंधुसमुहाजी  
 मुनतयुजनमनपावनकारही  
 जनुसरितीरतीरवनवागा  
 तेजलचरअगणितदुभाति  
 भवरतरंगमनोहरनाई ॥

दोहा बालचरितचहुवधुकेवनजविपुलवहुरा  
 नृपानीपरिजनसुकृतमधुकरवारिवहंग ४९

सोयस्वयम्बरकथासुहाई  
 नहीनाववटपश्याअनेका  
 पुमिअनुकथनपरस्परहोई

सरितसुहावनसोहविछ  
 केवटकुपुलउतरसविवेका  
 पथिकेसमाजसोहसरिसोई



घोरघारभृगुनाथ रिशानी ॥  
 सानुज रामविवाह ठकाह ॥  
 कहत सुनत हरषाह पुलकाही  
 रामतिलकहित मंगलसोजा  
 काई कुमति के काई केरी ॥

घाटसुवन्ध राम वर नानी  
 सो अम उमरा सुखदसवकाह  
 ते सुहाती जनमुदित नहाही  
 पर्व योगजनु जुरेउ समाजा  
 परीजासु फलविपति घनेरी

देहा ससन अमित उत्पात सब भरत चरित जपयोग  
 करि अघरवल अघराक धनते जल मल वक काग ५०

कीरति लरित कृहं जवु रुरी  
 हि संहिस प्रील सुतो प्रिवथाह  
 वर नव रामविवाह समाज ॥  
 गीयम दुसह रामवनगवन  
 वर्षा घोरनिष्ठा चर रासी  
 रामराज सुख विनय वडाई  
 सतीप्रिरो मगिसिय गुणागाथा  
 भरतरभावसु प्रीतल ताई

समय दुहा वनि पावन मुरी ॥  
 प्रिभार सुखद प्रभु जन्म कृह  
 सो नुद मंगल मय नरु राज  
 पथ काशा खर अतप पवन  
 सुकूल प्रालि सु मंगल कारि  
 विप्राद सुखद सोद प्राद सुहाई  
 सोद पुरा अमल अनपम पाथी  
 सदा एकरस वरशि नजाई

हेहा अवलोकन बोलने मिलनि प्रीति परस्पर हाम  
 मायपभलिल चहुं वन्धुकी जल माधुरी सुवास ५१

आरति दिनयदीनतां मेरी  
 अद्भुत सलिल सुनत गुणाकारि  
 राम सुप्रेमहि पोयत पानी  
 भव अम प्रोषक तोषक तोषा  
 कामकोह भदभोहनसावन  
 सादर मज्जन पान किये ते ॥  
 जिन थह वारि नमान सधोये  
 तृषित निरखि विकार भव वारि

लघुता तलित सुवारि नखोरी  
 आसपियास मनोमल हारी  
 हरत सकल कलिकलुषा लानी  
 प्रामन दुरित दुखदारि देवा  
 विमल विवेक विराग वढावन  
 मिरहि पापपरिताप हिये ते ॥  
 तेकाथर कलि काल विगोये  
 फिरहि मृगा जिमि जीव दुख वारि

बेहा मति अनुहारि सुवारिवरगुरागरामन अहवाइ  
 सुमिरि भवानी प्रांकरहि कहि कविकथासुहाइ ५२  
 भरद्वाजजिसि अश्रु किय याज्ञवल्क्यमुनिपाय  
 प्रथममुख्य संवाद सोइ कहिहो हेतुवभाय ५३  
 अवरघुपति पदपंकरुह द्वियधरि पायअसाइ ॥  
 कहौ युगल मुनि वर्य को मिलन सुभगसंवाद ॥ ५४

भरद्वाज सुमि वराहि प्रयागा  
 तापस समा द्मदया मिधाना  
 साधसकराति रवि जव होई  
 देवदनुज किन्तु नर अरागी  
 पूजहि साधव पद जलजाता  
 भरद्वाज आश्रम अति पावन  
 तहां होय मुनि काषय समाज  
 सज्जहि प्रात समेत उछाहा

जिनहि रामपद अति अनुराग  
 परमाथ पश्य परम मुजा ना  
 तीरथ पतिहि आवसव कोई  
 सादर मज्जहि सकल त्रिवेरागी  
 परसि अक्यवद हरितगाता  
 परमरस्य मुनि वरमन भावन  
 जाहि जेमज्जन तीरथ राजा  
 कहहि परस्पर हरिगुरागाहा

बेहा ब्रह्मनिरूपराधमविधि वरनहि तत्त्वविभाग  
 कहहि भक्त भगवंत की संयुत ज्ञान विराग ५५

इह प्रकार भरिसकर नहाही  
 प्रति संवत असहोइ अनन्दा  
 एक बार भरिसकर नहाये ॥  
 याज्ञवल्क्य मुनि परमविवेकी  
 सादर चरणा सरोज परिवारे  
 कारि पूजा मुनि सुयशकवानी  
 नाश एक संप्रय वड मोरे ॥  
 कहत मोहि लागत भय लाजा

पुनिसवनिजनेज अश्रम जाह  
 मकरमज्जि गवनहि मुनि वृन्द  
 सब मुनी पू आश्रम निरिधार्य  
 भरद्वाज राखेउ पदटे की ॥  
 अति प्रणीत आसन वैठारे  
 बोले अति प्रणीत मरदुवाची  
 करतल वेद तत्त्वसव तीरे  
 जो नकही वड होइ अकाजा

बेहा सन्न कहहि असनीत प्रभु अति पुराणा जोगाव

होइ नविमल्ले विवेक उरगुरु सो किये वराव

असविचार प्रगटेउ निज मोह  
 राम नाम कर अमित प्रभावा  
 सतत जपत प्रभु अविनासी  
 आचार चारि जीव जग अह ही  
 सोपि राम भहि मा सुनि राया  
 राम कौन प्रभु पूछे तो ही  
 एक राम अवध प्रो कुमारा  
 नारि विरह वरव लै हेउ अपारा

कुरहु नाथ करि जन पर छोड  
 सत पुरारा उपनिषद गावा  
 शिव भगवान ज्ञान गुणारासी  
 काशी मरत परम पद लह ही  
 शिव उ पद प्र करत करि दाप  
 कहो बुझाडू कृपा निधि मोही  
 तिन कर चारै त विदित समार  
 भय उ गव रारा वरा मारा

दोहा प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत विपुरारि  
 सत्य धाम सरव जतुम कहहु विवेक विचारि ५०

जैसे मिटे मोह अम भारी  
 याज्ञवल्क्य बोलै मुस काई  
 राम भक्त तुम मन कस वानी  
 चाहहु मुने राम गुण गुढा  
 तात सुनहु सादा मन लाई ॥  
 महा मोह महि प्रेष विप्राला  
 राम कथा प्राप्ति करि रा समान  
 रोसेइ संप्राय कौन्ह भवानी

कहहु सो कथानाथ विस्तारि  
 तुमहि विदित मधुपति प्रभु ताई  
 चतुर्गड तुम्हार में जानी ॥  
 कोन्हेउ पप्रमनहु अति मूढा  
 कहउ राम की कथा सुहाई  
 राम कथा कालिका कराला  
 सत चकोर करहि तेहि पाना  
 महा देव तव कह्य वरवानी

दोहा कहौ सामति अनुहार अव उमा प्रभु सवाइ ॥

भयठ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मि अहि विवाद ५०

एक वार चिता युग सो ही ॥  
 संग सती जग जननि भवानी  
 राम कथा मुनि वर्ण्य वरवानी  
 अथि पूछो हरि भक्त सुहाई

प्रभु गये कु मज अथि पाही  
 पूज अथि अरि वले अजानी  
 सुनी महेश परम सुरवमानी  
 कही प्रभु अधिकारी यही ॥

कुरुत सुनत रघुपति गुरागाथ  
 मुनि सनविदा मागि विपुरारी  
 तेहि अवसर भजनमहिभारा  
 पिता वचनतजि राजउदासी

कहु दिनतहांहि गिरिनाथा  
 चले भवनसंग दक्ष कुमारी  
 हरि रधुप्र लीन्ह अवतारा  
 देहक वनविचरत अविनासी

देहा हृदयविचारमजात हरकहि विधि दरपानहोइ  
 गुप्त रूप अचरते द प्रभु गये जान सव कोइ ५८  
 सोया प्रकर उर अति होम सती न जानहि मर्म सोइ  
 तुल्य प्री दरपान लोभ मन डर लोवन लालची ५९

रावरा मरणा मनुजे कर राचा  
 जैमहि जाउ रहै पछितोदा  
 इहि विधि भये प्रोचवसइ प्री  
 लीन्ह नीचमारी चहिसंगा  
 कारि केल मूढ हरी वैदेही  
 मृगवध बहु सहिते हरि आयै  
 विरह विकल नरद्वरपुराई  
 कवह योग वियोग मेजाके

प्रभु विधि वचन कौन्ह चहिमाच्य  
 करत विचार नवनतवना जा  
 ताही समय जाइ दृश प्री प्री  
 भयउ तुरत सोइ कपट करगा  
 प्रभु प्रताप उर विदित नतेही  
 आयस देखिन यन जल छोप  
 स्वोजत विपिन पित्त दोह भाई  
 देखा प्रगट विरह दुख ताके ॥

देहा अति विचर रघुपति चरित जानहि गंगमनुजाम  
 जमति मन्दविमोह वषा हृदय धरि कहु आम ६०

प्रभु समय तेहि रामहि देखा  
 भरिलोचन क्विसिंधुनिहारी  
 जयसविदानन्दे जग यावने ॥  
 चले जाता प्रोवसती समेता  
 सती सो दृशा प्रभुकी देखा ॥  
 प्रोकर जात वंश जगदी प्री  
 तिन न्यपसुतहि कीन्ह पराभा

उपजाहिय अति हर्ष विप्रोया  
 कुसमय जानिन कीन्ह चिन्हारी  
 अस कहि चले उममोजनसावन  
 पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता  
 उर उपजा संदेह विप्रोयी ॥  
 सुरनर मुनिसवना चहि प्री प्री  
 काहिसविदानन्द पर धारा ॥

भये मरान छविता बुविलोकी अजहुं प्रीति उरहत नरोकी

वोहा ब्रह्म जो व्यापक विज्ञ अज अकल अनीह अमद  
 सोकि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेदा ॥ ६१ ॥

विष्णु जो सुरहित नर तेन धारी  
 खोजत सोकि अज इव नारी  
 प्रभु गिरा पुनि नृया न होई ॥  
 अस मंप्राय मन भया अपारा  
 यद्यपि प्रगर न कहै उभवानी  
 सुनहु मनी तव नारी सुभाऊ  
 जासु कथा कुंभज नृप गार्द ॥  
 सोइ ममदृष्ट देव रघु वीरा ॥

भाउ मर वज यथा चिदुरारी  
 ज्ञान धाम श्री पति असुरारी  
 शिव मर वज जान सब कोई  
 होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥  
 हर अंतर्यामी सब जानी  
 मंप्राय असन धरिय उर काऊ  
 भक्ति जासु मै सु नहि सु नाई  
 सेवत जाहि सदा सुनि धीरा

छंद सुनि धीर योगी सिद्ध सन्त विमल मन जिहि हृदया ब्रह्म  
 कहि नेति निगम पुराणा आगम जासु की रति गावही  
 सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन नि काय पति साया घनी  
 अवतरे उ अपने भक्त हित निज तच नित रघु कुल मनी  
 सोइदा लागन उ पदेषा यदपि कहै उ शिव वार वहु  
 वोले विहंसि महे प्र हरि माया बल जानि जिय ॥ ६२ ॥

जो तुम्हरे मन अति सदे ह ॥  
 तव लागि वैठि रहौ कट छाही  
 जैसे जाइ मोह अम भारी  
 चली सती शिव आयस पाई  
 उ हा प्रभु अस मन अनुमाना  
 मारेहु कहे न संप्राय जाई  
 होई सो जो राम रचि राखा  
 अस केहि लगे जपन हरि नाम

तो किन जाइ परीसा लह ॥  
 जव लागि तुम सै हहु मोहि पोही  
 करहु सोयतन विवेके विचारी  
 करहि विचार करी का माई  
 दस सुता कहै नहि कल्पाना  
 विधि विपरीत भलाई नाही  
 को करि तर्क वदा वृत्ति साखा  
 गई सती जह प्रभु मुख धामा

हाहा पुनि पुनि हृदयविचार करि धरि सीता कर रूप  
आगे होइ बालपथत हे जाहे आवत रभप ६२

लोहमरादेरि उमा कृतवशा  
कहि न सकत कछु अतिगभीरा  
सती कपट जानेउ मुरस्वामी  
सुमिरत जहि भिटे अज्ञाना ॥  
सती कीन्ह नहत हृदय दुराजं  
निज प्राया नल हृदय वखानी  
जेरि पानि प्रभु कीन्ह प्रणाम  
कहेउ बहोरि कहां देख केत

चाकेत हृदय भ्रम भय विप्राम  
प्रमु प्रभाव जानत मति धीरा  
सगद सीसव अंतर जामी  
सेइ सर्वज्ञ राम भगवाना  
देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ  
बोले विहसि राम मरुवानी  
पिता सेसेत लीन्ह निज नाम  
विपिन अकल फिरहु केहि हेत

देहा राम वचत म्हु गूढ सुनि  
सती समीत महे प्रपह

उपजा अति संकोच  
बली हृदय बड सो व ६३

मेशकर का कहान माना ॥  
जाइउतर अब देही काहा ॥  
जाना राम सती दुख पावा  
सती देख कौतुकि गजामा  
फिरि चित वा पाठे प्रभु देखा  
जे हो चित बहि तह प्रभु आसीना  
दखे प्राव विधि विरह अनेका  
बन्दत चरगा करत प्रभु सेवा

निज अज्ञान राम पहि आता  
ठरठपजा अति दारुणा दाहा  
निज प्रभाव कछु प्रारिजमाया  
शो राम सहित मिय भ्राता  
सहित बन्धु सिय सुन्दर बेश  
सेवहि सिद्ध मुनी मधुबान्त  
असित प्रभाव एकते एका  
विविधि वेय देखे सब दवा

देहा सती विप्रा जो दन्दा देखा  
जेहि जोह वेव जे जादि मुर्ता हति हितत अनु रूप ६३

असित अनूप ॥

देखे जह तह रघुपति जेते  
जोद चरा चर जे ससारा ॥  
पूजहि प्रभुहि देव बदे बेया ॥

शोकेन सहित सकल सुरतेते  
देखे सकल अतेक प्रकारा  
राम रूप दूसर नहि देखा ॥

अवलोकने रघुपति बहु तेरे ॥  
 सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मिणा सीता  
 हृदयकपतनु सुधि ककुनाही  
 वहु रिबिलोकेउ नयन उधारी  
 पुनिपुनिनाइ रामपद प्रीप्ता

सीतासहित सुबेय घनेरे  
 दरिवसती अतिभईसभीता  
 नयनमदि बैठा भग साही ॥  
 ककुनदीवतहृदय कुमारी  
 चलोतहोजहं रंके गिरीसा

दोहा गइ समोपमहप्रातव  
 लीन्हपरीक्षा कवनविधि कहइ सत्यसवधात ६५

हसि पूछीकुप्रलोत

सतीसमुक्ति रघुवीर प्रभाऊ  
 कहनपरीक्षा लीन्ह गुसाई  
 जोतुम कहा सोभया न होइ  
 तव प्राकरदेखेठ धरिघाना  
 वहु रिराममायहि प्रिरनावा  
 हीइच्छा भावीवलवाना ॥  
 सतीकीन्ह सीता कर वेषा  
 जोअव करौ सतीसनप्रीती

भयवसप्रिावसनकीन्हदुराऊ  
 कीन्हप्रणाम तुम्हापिहिनाई  
 मोरसनप्रतीत अस सोई  
 सतीजोकीन्हअजेतसव जाना  
 प्रिरसतिहिजोह मूठ कवावा  
 हृदयविचारत प्रामुखुजाना  
 प्रिवठरभयोविधादविशेषा  
 मिदै भक्तिपथहोइबनीती ॥

दोहा पमप्रेमभहिंजाइतजि कियेप्रेमवडपाप ॥  
 प्रगटनकहतमहेशकुकुहृदयअधिकसंतप ६६

कियेप्रेमवडपाप ॥

तवाहे शसुप्रसुद्धाशरन्नावा  
 इहितनुसतिहि मेरमोहिनाही  
 असाविचारिप्रकारमतिधीरा  
 बलतगमान भइ गिरासुहाई  
 असप्रयातुमविनुकीकोअना  
 मुनिनभगिरासतीप्रसोच ॥  
 कीन्ह कवनप्रणकहहुकपाल  
 यहीपसती प्रह्व बहु भोलीत

सुभिरतराम हृदय असआवा  
 प्रिवसकल्पकीन्हमनमाही  
 चलेभवनसुभिरतरघुवीरा  
 जयमहेशमलिभक्तहृदाई  
 एमभक्तसमरथभगवाना ॥  
 पूछीप्रिवहि समेतसकोच ॥  
 सत्यभामप्रभु दीनदयाला ॥  
 तदीपवकहउचिपुरआराती ॥

रोहा सती हृदय अनुमान किय सव जाना सर्वज्ञ ॥  
कीन्ह कपट मै प्राम्भुसन नारिसहजजड अज्ञ ॥ ६०  
सोपडा जल पय सरिसविकाइ देखहु प्रीति कीरिति भलि  
विहागोहोइ स्वजाइ कपट रव दाई परतही ॥ ७ ॥

हृदय साच सभु भाता नज पारना  
कृपाविधु प्रिव परम आधा  
प्रकर करव अवलेकि भवानी  
निज अघ समुसन ककु कहि जाई  
सतिहि ससोच जानि दृषके न  
वज्रत पंथ विविधि इतिहासा  
तह पुनि समुक्ति प्राम्भु प्रण अपन  
प्रकर सहज स्वरूप संभारता ॥

जिना नहि वानी  
प्रगत न केहे उमोर अपराधा ॥  
प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी  
तपे अवाइ वउर अधिकाई ॥  
कहेउ कथा सुन्दर सुख हेतू ॥  
विपूवनाथ पहुचै कैला प्रा  
वैटे वर तर कारि कसलासान ॥  
लागि समाधि अरवाड अपारा

रोहा सती वसहि कैला प्रातव अधिक सोच मन साहि ॥  
समन कोऊ जान ककु कुसम दिवस सिराहि ॥

नित नव सोच सती उर भारी ॥  
मैजे कीन्ह रघुपति अपमाना ॥  
सोफल मोहिं विधाता दीन्हा ॥  
अकविधि असवुफिय नहि तोही  
कहिन जाइ ककु हृदय गलानी  
जो प्रभु दीने ह्याले कहावा  
तोमै विनय करौ कर जोरी  
जो मोरे प्रिव चरणा सनेह ॥

कवजेही दुख सागर पारा ॥  
पुनिपति वचन मया करि जाना  
जो ककु उचित रहसो कीन्ह  
प्रकार विमुरवजियावहु भोही ॥  
मन सहै रामहिं सुमिर सयानी  
आत हरन वेद यप्रा गावा ॥  
कहे वेग देह अब मोरी ॥  
मन क्रम वचन सत्य वत एह

रोहा तोस अदृशी सुनिय प्रभु करौ सु वेगि उपाइ ॥  
होइ मरन जो विनिहिं अम दुसह विपति विहाइ ६६

इहि विधि दुखित प्रजेस कुमारी ॥ अकथनीय दारुणा दुख भारी ॥



अवलोकने रघुपति बहु तेरे ॥  
 सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मिणा सीता  
 हृदय कपतनु सुधि कछु नाही  
 बहु रिविलोके उ नयन उघारी  
 पुनि पुनि नीइ राम पद श्री प्रा

सीता सहित सुबेस घनेरे  
 दरिव मती अति भई सभोता  
 नयन मंद वैठी भग माही ॥  
 कछु न दोखत हृदय कुमारी  
 चलोत हो जहं रहे गिरीसा

देहा गई समोप मह प्रा तव  
 लीन्ह परीक्षा कवन विधि कहइ सो न्यसव वात

होसि पूछी कुशलोत  
 भय वसो शिवसन कीन्ह डुराऊ

सतीस मुक्ति रघुवर प्रभाऊ  
 कहु न परीक्षा लीन्ह गुसाई  
 जो तुम कहा सो मया न होई  
 तव प्रांकार देखे धरि घ्या ना  
 बहु रीगम मायहि प्रि रना वा  
 होइ च्छा भावी वल वाना ॥  
 सती कीन्ह सीता कर वेसा  
 जो अब करौ सती सन प्रीती

कीन्ह पराणम तुम्हायि हि नाई  
 मोर मन प्रतीत अस सोई  
 सती जो कीन्ह सने सद जाना  
 प्री सतिहि जोहि मूढ कलावा  
 हृदय विचार प्रामु सु जाना  
 शिव उर भयो वियाद विशेषा  
 मिदै भक्ति पथ होइ चनी ती ॥

देहा परम प्रेम नहि जाइ तजि  
 प्रगट न कहत मह प्रा कछु

किये प्रेम बड पाप ॥  
 हृदय अधिक संताप ६६

तबहि प्रामु प्रमुपद शिरनात्रा  
 इहि तनु सतिहि मेर मोहि नाही  
 असा विचारि प्रांकार मति धीरा  
 बलत गमान भइ गिरा सुहाई  
 अस प्रया तुम विनु कीको अना  
 युनि न भगिरा सती प्र सोच ॥  
 कीन्ह कवन प्रा कहु कपाल  
 यही सती पूछा बहु भांसी ता

सुभिर तराम हृदय अस जाला  
 शिव संकल्प कीन्ह मन माही  
 चले भवन सुभिरत रघु वीरा  
 जय मह प्रा मलिभक्त हदाई  
 राम भक्त समरथ भग घाना ॥  
 पूछा शिवहि समेत सकोच ॥  
 सत्य भाम प्रभु दीन दयाला ॥  
 तदीय कहे उत्रि पुर जाय ती ॥

दोहा सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ॥  
 कीन्ह कपट मैं प्राम्भुसन नारिसहजजड अज्ञ ॥ ६०  
 सोरठा जल पय सरिसविकाइ देरव हु शीति कीरिति भलि  
 विस्मय होइ रसजाइ कपट रव दाई परत ही ॥ ७ ॥

हृदय सोच समुक्त तो निज करनी  
 कृपा बिधु प्रिव परम आधा  
 प्रकर करव अवलोकि भवानी  
 निज अथ समुक्त न कछु कहि जाई  
 सतिहि ससोच जानि छपकेत  
 वरनत पंथ विविधि इतिहासा  
 तह पुनि समुक्ति प्राम्भु प्रया अपन  
 प्रकर सहज स्वरूप संभारा ॥

चिता अमित जाइ नोह वरनी  
 प्रगटन कहेठ सोर अपराधा ॥  
 प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी  
 तपे अवाइवउ अथि काई ॥  
 कहेठ कथा सुन्दर सुखहेतु ॥  
 विपूवनाथ पहुंचे कैलाशा  
 वैटे वट तर करि कमलासान ॥  
 लतागि समाधि अरकाड अपारा

दोहा सती वसहि कैलाशा तव अधिक सोच मन साहि ॥  
 मर्मन कोऊ जान कछु सुगम दिवस सिराहि ॥

नित नव सोच सती उरभारा ॥  
 मैजो कीन्ह रघुपति अपमाना ॥  
 सो फल मोहिं विधाता दीन्ह ॥  
 अखी विधि असव फिय नहि तोही  
 कहिन जाइ कछु हृदय गलानी  
 जो प्रभु दीन दयाले कहावा  
 तौमै विनय करौ कर जोरी  
 जो मोरे प्रिव चरया सनेह ॥

कवजेहो दुख सागर पारा ॥  
 पुनिपति वचन भया करि जाना  
 जो कछु उचित रहसो कीन्हा  
 प्रकर विमुरवजिया वहु भोही ॥  
 मन सह रामहिं सुमिर सयानी  
 आरत हरन वेद यप्रा गावा ॥  
 छुटै वेग देह अब सोरी ॥  
 मन क्रम वचन सत्यवत एहा ॥

दोहा तौसय दृष्टी सुनिय प्रभु करौ सु वेगि उपाइ ॥  
 होइ मरन लो विनिहिं अम दुसह विपत्ति विहाइ ६८

इतिविधि दुरित प्रजेस कुमारी अकथनीय दारुणा दुख भारी

बोले संवत सहस्र सतासी  
 राघनासप्रिव सुभिरा लारो  
 जाइप्रांमुपद वन्दन कीन्हा ॥  
 लो कहन हरिकथा रसा ला  
 बरवा विधि विचार सव लायक  
 वड अधिकार दस ज ब यावा ॥  
 नहिं कोउ अस जन से उ जग साहि

तनी समाधि प्राप्नु अविनासी  
 जाने उ सती जगत पति जारो  
 सन्मुख प्राकर आसन दीन्हा  
 दस प्रजे स भये तेहि काला  
 दसहि कीन्हु प्रजापति नायक  
 अति अभिमान हव्य तेहि आवा  
 प्रभुता पाइ काहि सद नाही ॥

बोहा दस तिये मुनि बोले सव कर ज लरो वड यास  
 नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥७०॥

किन्नर नारा सिद्ध गन्धर्वा ॥  
 विश्व विरच महे प्र विद्वाइ ॥  
 सती विलोकें उ गगन विमाना  
 सुर सुन्दरी काहिं कलिगाना  
 पहे उ ककु शिव केहे उ बरवानी  
 जो सहे प्रा साहिं आय सु दे ही ॥  
 पति परि त्याग हृदय दुरव भरी  
 बोली सती मनाहर वानी

वधन समेत चले सुर सवो ॥  
 चले सकल सुर यान वनाई  
 जात चले सुन्दर विधि नाना  
 सुनत अवरग छुटहि मुनि ध्याना  
 पिता यज्ञ सुनिके हेर यानी  
 ककु दिन जाइ रहौ मिस एही  
 कहै न निज अपराध विचारी  
 भय संकोच प्रेम रस सानी

बोहा पता भवन उत्सव परम जो प्रसु आय सु होइ ॥  
 तौ सै जाव कृपायतन सादर देरवन सोइ ७१

कहे उ नीक सोरे उ मन भावा  
 दस सकल निज सुता बुलाई  
 ब्रह्म सभा हससन कुरवमाना  
 जो विनु बोले जाइ भवानी  
 यदपि भिन्न प्रभु पिनु गुर रोहा  
 तदपि विरोध मानि जह कोइ

यहि अनुचित नहिं नेवत पडावा  
 कर्म पै वैर कर्महिं विसराई ॥  
 तेहि ते अजहुं करहिं अपमाना  
 रहै न प्रीत सनेह न कानी  
 जाइ यविन बोले न संदेहा  
 तहांगये कल्पान न होई ॥

आति चनेक प्रांभु समुक्तावा ।	भावी वस नज्ञान उर आवा ।
क ह प्रमु जाहु जो विनाहि वलाये ।	निहि भलत वात हु मारे भाये ।

दोहा काहि देर बाहर यतन वहरहि उन दक्ष कु मारि ॥  
दिये मुरव गरा संगत व विदा कीन्हु त्रिपुरारि ०२

पिता भवने जव राई भवानी ॥	दक्ष त्रास कोहु न सन मानो ।
सादर भलिहि मिली ब्रक माता ।	भरिनी मिली बहु तमुसकाता ।
दक्षन कुछू पछी कुसलाता ।	सतिहि विलोकि जरे सब गाता ।
सती जाइ देर बैठ तव यागा ।	कतहुं न देखि व प्रांभु कर भागा ।
तव चित चढउ जो प्रांकर केहेऊ ।	प्रमु अपमान समुभि उर बहेऊ ।
पाछिल दुर व न हृदय अस व्यापा ।	जस यहि भयो महा परितापा ।
यद्यपि जगदा रुरा दुर व नाना ।	सवते कठिन जात अपमाना ।
समुक्ति सो सतिहि भयो अतिकोथा ।	बहु विधि जननी कीन्हु प्रबोधा ।

दोहा प्रिव अपमान न जाइ तहि हृदय न होव प्रबोध ७७  
सकल सभहिं हठि हटकि तव बोली बचन सकोष

सुनहु सभा सद सकल मुनि न्दा ।	कही सुनी जिन्हु प्रकर निन्दा ।
सो फल तुरत लहव सब काहु ।	भली भाति पछिता व पिताहु ॥
संत प्रांभु श्रीपति अप वादा ।	सुनी जहां तहुं श्रीस मर्यादा ।
काटिय तासु जीभ जो वसाई ।	अवशा मदि नहिं चलिय पराई ।
जगदात्मा महे प्रां पुरारी ॥	जगत जनक सब केहेत कारी ।
पिता मन्द मति निन्दत तेही ॥	दक्ष अक्र समव यहि वही ॥
तजिहो देह मुरत यहि हेत ॥	उर धरि चन्द्र मौलि वृष केत ।
अस कहि योग अग्नि तन जारा ।	अयउ सकल मरव हाहा कारा ।

दोहा सती मरन सुनि प्रांभु गरा लगे करन मरव रबीस  
यज्ञा विध्वंस विलोकि भुगुरहा कीन्हु सुनी प्रां ७८

समाचार जव प्रांकर पाये ॥	वीर मद्र करि कोप पढाये ॥
--------------------------	--------------------------

रक्षजापतिकी यज्ञमें पारवती का सती होना और श्री महादेव जीके कोपसे वीर  
भद्र प्रगाढ हो कर दसकाशिराकार करि यज्ञके विध्वंस करना ॥



यज्ञविधिसंजाइतिन्ह कीन्ह  
 भइजगविदितदसराति सोई  
 यहिदतिहाससकलजगजाना  
 सती सरतहरसन वरमांगा ॥  
 तिहिकारणाहिमगिरिगृहजाई  
 जबतेउमा शैल गृह आई  
 जहंतहमुनिनसुअश्वमकीन्ह

सकलसुगृहविधितफलदीन्हा  
 जसककुप्रासविमुरवकीहोई  
 मोतमैसंशेषवरवाना ॥ २० ॥  
 जन्मजन्मशिवपदचतुरागा  
 जम्मीपार्वतीतनुपाई ॥  
 सकलसिद्धिसम्पाततहंछाई  
 उचितवासहिसअधरदीन्ह

दोहा सदासुमनफलसहितसवदुमनत्रनानोजाते ॥  
 प्रादीसुन्दरशैलपरमनआकरवहुभांति ७५

सरितासवपुनीतजलवहूही  
 संवजवैरसवजीवनत्यागा  
 रोहशैलगिरिगिरिगृहआवे ॥  
 नितनूतनसंगलगृहनास ॥  
 नारदसमाचारजवपाये ॥  
 शैलगजबडआवरकीन्ह  
 नारिसहितमुनिपदशिरनावा  
 निजसौभाराबहुतविधिवरया

एवगरुगसधुपसुरवीसवरहूही  
 गिरिपरिसकलकरहिचतुरागा  
 जिमिनररामभक्तिकेपाये  
 हृहमादिकगावहिप्राजासु  
 कौतुकहिमगिरिगेहसिधाय  
 पदारवारिवरआसनदीन्हा  
 अरुपारालिलसवभवनसिवावा  
 सुताबोलीमेलीमुनिचरया

दोहा त्रिकालजसर्वज्ञतुमगतसर्वत्रतुम्हारि ॥  
 कहाइसुताकेदोयगुरासुनिवरहृदयविचारि ७६

काहिमुनिविहसगृहसुदुबागी  
 सुन्दरसहजसुशीलसयानी  
 सबलक्षणासंपन्नकुमारी ॥  
 सदाअचलएहिकरअहिवाता  
 होइहैपूज्यसकलजगमाही ॥  
 इहिकरेनामसुमिरिसंसार

सुतातुम्हारिसकलगुरारानी  
 नामठमाअविकाभ्रानी ॥  
 होइहैसन्ततपियहिपियारी ॥  
 वहितैयप्रापैहहिपितृमाता  
 इहिसेवतकसुदुरलभनाही  
 तिरचदहिनितचतअसिधारा

प्रेतसुलक्षणासुता लुम्हारी अगुरा चमानसानु पितहीना	सुनहु जे अब अगुरागुद चारी उवासान सदस प्राय हीना ॥
--	--

दोहा योगीजटिल अकास मननगन अमरात्त भेष ॥  
असस्वामी इहि कह मिलिहि परीहस्त असिरेय

सुने सुगिरा गिरा स त्वजियजानी नारदहं यहि भेद म जाना सकलसरवी गिरिजागिरिमयना होइ नम्रयादेव अरु भि भाया ठपेउ शिवपद कमल सनेह जानि कु अवसर प्रीति वराई कठिन होइ देव अरु भि वानी उर धरि धरि कहैउ गिरिराऊ	दुरवदगतिहि उमा हरपानो दशा एक समुक्त विस्म गाना पुलक प्रापर भरे जल नयना उमा सो वचन हृदय धरि रारवा सिलन कठिन मन यह संदेह सरवी उछंगवैठि पुनि जाई सोचिहि दमति सरवी संयानी कहह नाथ का करिय उपाऊ
---	---

दोहा कह सुभी प्रहि मवत सुनि जो विधि लिखालि लार  
देव दनुज मरनाग सुनि कोऊ नमे टन द्वार ७८

रूपे एक मै कहौ उषई ॥ जसवर मै वेरनेउ तुम पाही ॥ जे जे वर के दोष वरगते ॥ जो विवाह प्राकर सम होई ॥ जो अहि सेज प्रायन हरि करेही भानु क प्रानु सर्वर सखाही ॥ प्रुम अरु अ प्रुम बलि सव वही समरथ कहं नहि दोष गुसाई ॥	होइ करे जो देव सहाई ॥ मिलिहि उसाहि कछु संप्रायनाही ते सब शिवपहं मै अनुमाने दोषहु गुरा सम कह सव कोई बुध कछु तिन कह दोष न धरिही तिन कहं मन्द वाहन कोउ नाही सुरसरि कोउन अपावन कहही रवि पावक सुरसरि की नाई
--	---

दोहा जो ऐसाहि इया करहि जह विवेक अभिमान ॥  
परहि कल्पभरि नर्क महं जीव कि ई प्रासमान ७९

सुरसरि जल कान वारुन जाना	कवहु नसन्त करहि तिहि पाता
--------------------------	---------------------------

सुरसरिभिले सुपावन कैसे ॥  
 शंभुमहन समरथ भगवाना  
 दुग्राध्यपै चहहिं सहे प्र ॥  
 जोतप करै कुमारि तुम्हारी  
 यद्यपि वर चनेक जग माहीं  
 वरदायक प्रयातारति भंजन ॥  
 इच्छित फलविनुशिव आराधे

इष्टा चनीप्राहि अन्तर जैसे ॥  
 इहिनिवाहसवविधिकल्याना  
 आशा तोष पुनि किये कलेश  
 भाविउमेदि सकहिं त्रिपुरारी  
 इहिकह शिवतजि दूसर नाहीं  
 कृपामिन्धुसेव कसनरजन  
 लहयन कोटि योगजपसाधे ॥

दोहा अमिकहि नारद सुमिरि हर गिरिजहिं हीन्ह अश्री  
 होइहियहिकल्याण अवसंप्रायतजद गिरिप्र २०

काह असब्रह्म भवन मुनिगयड  
 पीतिहि इकांत पाइ कहिमयना  
 जोवर वर कुल होइ अनूपा  
 नतो कन्या वरुहो कुमारी  
 जोनमिलहि वरगिरिजहिं योग  
 सोविचार पतिकरहु विवाह ॥  
 अमिकहि परी चरयाधरि प्रीशा  
 वरुपावक प्रगटे प्राप्तिमाहीं

आगिल चारत सुनहु जोसयऊ  
 नाथ नमै समुमे मुनि वयना  
 करिय विवाह सुता अनुरुपा  
 कन्तठमासम प्राणा पियारी  
 गिरिजइ सहज कहहिं सबलोग  
 जोहि नवहोरिहोइठर दाह ॥  
 वोलै सहित सनेह गिरिप्रा  
 नारद वचन अग्र्यथा नाहीं

दोहा प्रिया सोचपरिहरहु सेव सुमिरि हू थी भगवान ॥  
 पारवतीजिन निरमयऊ सोइ करिय कल्याण २१

अवजो तुमहिं सुता परनेह ॥  
 करै सुतपजोहि मिलैमहे प्र  
 नारद वचन सगर्भ सहेत ॥  
 अश्विचार तुम तजिसवप्रका  
 मुनिपति वचन दूर्यभनमाहीं  
 उसाहिं विलोकिनयनभरिवारी

तो असजाइ शिरवावनदेह ॥  
 आनउपादु नेपिरहिं कलेश  
 सुन्दर सवगुणनिधि वृषकेत  
 सवहिंभाति प्रांकर अकलका  
 गईतुरतउदि गिरिजा पाहीं  
 सहित सनेह गोद वैठारी ॥



वारहि वारले त उर लाई ॥  
जगत मातु सरवत्त भवानी

गंदगर करन कछु कहि जाई  
मातु सुखद बोली स्वदुवानी

बोहा सुनहु मातु भेही खिं अस सपन सुनाऊ तोहि ॥  
सुन्दर गौर सुविप्रवर अस उपदे प्रौउ मोहिं २२

करहु जाइ तप प्रील कु मारी  
मातु पितहि पुनि इह मनि भव  
तप वल्लर चै प्रपंच विधा ता  
तप वल्ल प्रभु कारहि संहारा  
तप अधार सब सुष्टि भवानी  
सुनत वचन विस्मित सहतारी  
मातु पितहि बहु विधि समुझाई  
प्रिय परिवारहि ता अरु माता

नारद कहा सुसत्य विचारी  
तप सुख प्रद दुख दायन सावा  
तप वल्ल विषास कल जग ज्ञाता  
तप वल्ल प्रोष धरहि सहि मारा  
करहु जाइ तप अस जिय जानी  
सपन सुनायेउ गिरिहिं हंकार्य  
चली उमा तप हित हर याई ॥  
भये विकल सुख आवन चाता

दाहा वेदांगर मुनि आयतव सर्वाह कहा समुझाई  
पार्वती सहि मा सुनत रहि प्रवोधाहि पाइ २३

उर्ध्वर उमा प्राणा गति चला  
अति मुक मारन तप या गा ॥  
नित नव चरणा उपजि चनु राम  
संवत सहस मूल फल खाये  
कछु दिन भोजन वारि वतासा  
वैल पाच सहि परे सुरवाई ॥  
पुनि परिहरेउ सुखाने ठपनी  
वेखि उमहिं तप क्षीया प्रारिरा

जाइ विपिन लागी तप करना  
पति पद सुभिरि तजेहु सब भाग  
विसरी देह तपहि मन ला गा  
प्राकरवाइ शत वर्ष गवाये  
किये कठिन कछु दिन उपवास  
तीन सहस सम्पत्त सो रवाई  
उमा नाम तव भयो अपनी  
ब्रह्म गिरि भद्र गगन गभीरा

दाहा भयो मनो गय सुफल तव सुनि गिरि राज कुमारे  
परिहरि दुसह कले सब अविमलिहहि विपुणारे २४

अस तप काहन कीन्ह भवानी भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥  
अदर धाऊ प्रह्न भवानी सत्य सवामतत सुचजानी ॥

अवैपिता बुलावन जव ही ॥  
 मिलहि तुमहि जव सपुत्र चरषीशा  
 सुनत गिरिबिध गगन वखानी  
 उमाचरित मै सुन्दर गात्रा  
 जव ते सती जाइत नु त्यागा ॥  
 जपहि सदार घुनायक नामा ॥

हठ परिहरी घर जायहु तवही  
 जानेहु तव प्रसारा वागीशा  
 पुलक गात गिरिजाहर बानी  
 सुनहु प्रभु कर चरित सुहावा  
 तव तो प्रिय मन भये उदिरागा  
 जह तेह सुनिहिर मगुरा घासा

दोहा चिदा नन्द सुख धाम प्रिव विगत सोह मद् काम  
 विचरिहि मदिधरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम २५

कतहुं रामगुरा करहिं बखाना  
 अलि विरह दुरवदुषित सुजाना  
 नित नव होइ राम पद प्रीती ॥  
 अविचल हृदय भक्ति की रेखा  
 रूप प्रीति निधि तेज विशाला  
 सुमीखन अखिल को निरबाहा  
 पारवती कर जन्म सुनावा ॥  
 विरसर सहित कृपानिधिवली

कतहुं मुनिन उपदेशि ज्ञानी  
 यदपि अकाम तदपि भगवाना  
 इह विधि गये काल बहु वीती  
 नेम प्रेम प्रंकार कर देखा  
 प्रगटे राम कान्त कृपास्ती  
 बहु प्रकार प्रकरहि सरा हा ॥  
 बहु विधि राम प्रिवहि सुमुखावा  
 अत पुनीत गिरिजा की करनी

दोहा अवीवन तो मम सुनहु प्रिव जो मो परनिज नहु  
 जाइ विवावहु प्रैल जहि यहि मोहिं मांगे देहु २७

कहि प्रिव यदपि अचित असनाही  
 सिरधरि आय सुकरिय तुम्हार  
 साहु पिता गुरु प्रभु की बानी  
 तुम सब भाति परसहित कारी  
 प्रभु तो येठ सुनि प्रंकार वचना  
 वह प्रभु हर तुम्हार प्रारहेठ  
 पंता ध्यान भये अस भाषी ॥

नाथ वचन पुनि मेदि न जाही ॥  
 परस धरस यह नाथ हमारा ॥  
 विनिहिं विचार करिय शुभजानी  
 आज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी ॥  
 भक्ति विवेक धर्म युत रचना  
 अवठरार वहु जो हम कहेऊ  
 प्रंकार सोइ सति उरारवी ॥

तबहिं सप्र ऋषिशिवपहंश्रये

बोले प्रभुअसवचनसुहाये ॥॥

दाहा पारवतीपहंजायतुम प्रेम परीक्षा लेइ ॥ ५॥५॥

गोरिहिं प्रेरि पठयेइ भवन दूरि करेइ संदेइ ॥५॥ २०

ऋषिन गौरि देखी नहं केसी  
बोले मुनि मुनि शैल कुमारी

मूराने दंत तपस्या जैसी ॥५॥  
करइ कवन कारणा तप भारी ॥

कोहे आराधइ का तुम चहइ  
मन्न ऋषिन के वचन भवानी

हम सन सत्य मम सब कहइ  
बोली गूढ मनाहर वानी ॥ ॥

तहत मर्म मन अति मकुवाइ

हंसि हइ मुनि हमारि जड़ताइ

मन हठ परान मुने सिखावा

चहत वारि परभीति उठावा ॥

नारद कह्य मत्य सोइ जाना

बिनु परवन हम चहहिं उडाना

देखिय मुनि अविवेक हमारा

चाहत पाति शंकर अविकारा

दाहा सुनत वचन विहसे ऋषय गिरि समवतव देह

नारद कर उपदेश मुनि कहइ वसे को रोइ ॥५॥ २८

पुंम मुतन्ह उपदेशिन जाइ

तिन फिर भवन न देखि आइ

वत्रकेतु कर धर उज घाला

कनक काशिपुकार पुनि अमहाल

नारद सिखजु सुनहिं नरनारी

अवशि भवन तजि होहिं भिरवारी

मन कपटी तन सज्जन चीन्हा

आप सरिस सब हीं चहंकीन्ह

तेहि के वचन मानि विश्वासा

तुम चाहइ पाति सहज उदासा

निर्गुणा निलज कुवेष कपाली

अकुल अगेह दिगम्बरव्याली ॥

कहइ वचन सुख असवर पाये

भलभू लेइ ठगके वीराये ॥॥

पंच कहें शिव सती विवाही ॥

पुनि अब डेर मराइन ताही

दाहा अब सुख सोवत सोच नहिं भीरव मारि भवस्वाहिं

सहज सकाकिन के भवन कबइ कि नारिखटाहिं २९

अजइ मानइ कहां हमारा

हम तुम कह वर नीक पिचारा

शुनि सुन्दर सुच सुखद सुशीला

गावहिं वेदजासु यश लीला

दूषनरहित सकलगुरा राशी ।  
 असवर तुमहिं मिलोउव्यानी  
 सत्यकहह गिरि भवतन सहा  
 कनको पुनि पखानते होई ॥  
 नारद वचन नसै परि हरकुं ॥  
 गुरुके वचन प्रतीति नजे ही ॥

श्रीपति पुरवेकुंठ निवासी ॥ ॥  
 सुनतविहंसिकह वचन भवानी  
 हठनकूट कूटे वरु देहा ॥ ५ ॥  
 जारेह सहजन परि हरिसोई  
 वसो भवन उजरी नाहेंडरज ॥  
 सपनेह सुगमन सुखविधिदेही

दोहा महादेव अवगुन भवन विष्णु सकल गुरागाम ॥

जोहिकर मन्तरमजाहि सनताहि ताहि सनकाम ६०

जो तुम मिलतेउ प्रथम सुनीशा  
 अब मै जन्मधनु हित हारा ॥  
 जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी  
 तो कोतुकि अन्ह आलसताही  
 जन्मकोटिल गिरगारह मारी  
 नजो न नारद कर उपदेश ॥ ॥  
 मैया यसे कहै जगदम्बा ॥  
 देखे प्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥ ॥ ॥

सुनतिउं संखतुम्हारे धोषोशा  
 को गुरा दोषहिं करै विचार  
 रहिन जाइ विनु किये बरे की  
 बरकन्या अनेक जगसाही  
 वरो शंभु नतुर होकु मारी ॥ ॥  
 आप कहहिं शतवार सहशु  
 तुम सह गवनेउ मयेउ विलखा  
 जय जय जय जगदम्ब भवानी

दोहा तुम नाया भगवान शिव सकल जगत पितु मात

नाय चरगा सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गान ६१

जाय मुनिन्ह हिमवंत पठाये ॥  
 बहुरिस प्रच्छिषि शिव पहजई  
 भये मगन शिव सुनत सनेहा  
 सत्थिर करि तब शंभु सुजाना  
 तारक असुर भयेउ तेहि काला  
 तेइ सब लोक लोक पति जीते  
 अजर अमर सो जीति न जाई

कोरावनती गिरजोहें सहलख्य  
 कथाउभाकी सकल सुनाई ॥  
 हरषिस प्रच्छिषि गवनेगेहा ॥  
 लगेकरन धुनायक ध्याता ॥  
 भुज प्रताप वलतज विशाला ॥  
 मये देव सुख संपति रीति ॥ ॥  
 हारे सुर करि विधि प्रातराई

तव विरंचसन जाय पुकारे ॥ देरवे विधि सब देव दुरवारे ॥  
 रोहा सबसन कहा बुभाय विधि दनुजनिधन तव होय  
 शंभु शुक्र समूत सुत इहि जी तै रया सोय ६२

मोर कहा सुन करहु उपाई ॥  
 सती जो तजी दक्ष सरवदेहा ॥  
 तेइ तप कीन्ह प्रामुपनि लागी ॥  
 यदपि अहे अस संजस भारी ॥  
 पदबहु कामजाइ शिव पाही ॥  
 तव हगजाइ शिवहि सिरनाई ॥  
 इहिविधि भलहि देवाहित होई ॥  
 खस्तुति सुरन कीन्ह अतिहेता ॥

होइहि ई प्रवर करिय सहाई ॥  
 जनमोजाइ हिमाचल गेहा ॥  
 शिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥  
 तदपि वातइ क सुनहुह मारी ॥  
 करै छेभ प्रकर मन माही ॥  
 कारवाठव विवाह वरियाई ॥  
 मत अति नीक कही सबकोई ॥  
 प्रगटेउ वियस वारिचरि केत ॥

रोहा सुरन कहोनि जे विपति सब सुनि मन कोन्ह विचार  
 शंभु विरोधन कु प्राल सोहिं विहंसि कहै उअसमार ६३

तदपि करवने काज तुहारा ॥  
 परहित लागि तजे जो देही ॥  
 असि कहि चलेउ सबहिं सिरनाई ॥  
 चलत मारि नसह दय विचारा ॥  
 तव आपन प्रभाव विस्तारा ॥  
 कोपेउ जवीहं वारिचर केत ॥  
 इह अर्थ प्रल संयम नाता ॥  
 सदाचार जय योग विरागा ॥

अति कहि परम धर्म उपकारा ॥  
 सन्तत सन्त प्रप्रांसहिं तेही ॥  
 सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥  
 शिव विरोध ध्रुव मरन हमारा ॥  
 निज वस कीन्ह सकल सै सारा ॥  
 क्षरा महं मिटे सकल अतिसेत ॥  
 धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाता ॥  
 समय विवेक कटक सबभागा ॥

छ ० भागो विवेक सहाइ सहित सो सुभट संयुगा यहि सुरे  
 रुदयं पर्वत कन्दरन महं जाइ तेहि अवसरदुरे  
 होनि हार का कर्तार कोर ववार जग वार भरपरा ॥  
 दुइ साथ कोहि रति नाथ जेहि कहं कोप धनु प्रार करधरा ३

देहा जेसजीवजग अचरचर नारि पुरुष अस नाम  
तेनिजनिजमर्याद तजि भये सकल वसकाम

सबके हृदय मदन अभिलाषा  
नदीउमगि अंशुषिकहं धर्दा ॥  
जहं अस दशा जडन की वरणी  
पशुपक्षी नमजल अलचारी  
मदन अंध व्याकुल सब लोका  
देवदनुज नरकिं प्तर व्याला  
इनकी दशा नहिं कहें वरवानी  
सिद्धविरक्त महा सुनियोगी

लतानिहारिन वहिं तरु प्रारखा  
संगम करहिं तलाव तलाई  
को कहिसके सचेतन करनी  
भये कामस समयविसारी ॥  
निष्पिदिन नहिं चवत्तो कहिंकोका  
प्रेतपिशाचभूत वै ताला ॥  
सदा कामके चैरे जानी ॥  
तेपि कामदशा भयेवियोगी

छंद भये कामवशा योगी प्रतापसयां वरनकी को कहें ॥  
देरवहिं चरचर नारि मयजे ब्रह्म मयदेरवतरहे ॥ ॥  
अविलाविलो कहिं पुरुष मयजग पुरुष सब चवला मय  
दुदराडभरि ब्रह्माडभीतर काम कृत कौतुक अयं ॥ ४  
सौरा धरनकाह धीर सबके मनमनसिज हरे ॥  
जेहि राखेदुग्ध वीर तेउबरेतेहि काल सहें ॥

उभये घरा अस कौतुक भयह  
मिचहिं विलोकिसर्गके उमाह  
मये नुरत जगजीव सुरवारे ॥  
रुद्रहिं देखरिसदन मय जाना  
फिरतलान कछु कहि नहिं जाई  
प्रगटेसि तुरत रुचिरचक्र नुरजा  
वनउपदन दादि कातडागा ॥  
जहं तहं जनु उमरात अनुरागा

जवलासी काम प्रभु पहंगयेऊ  
भयेउयशायित सब संसार ॥  
जिमसदउत्तरि गये सतवारे ॥  
दुराधर्य दुगित भगवाना ॥  
सरत ठानिसनरचेसि उपाई ॥  
कुमुगितनवता राजविराजा ॥  
परत सुभगशवदिशा विंसागा  
देरिव सुख ह मनमनसिज जागा

छंद जागोउ मनोभवसुसमं वन सुभगता न परे कही ॥

सीतल सुगन्ध सुमन्द मासुत नदन अचल सत्वा सही  
 विकसे सरन्ह बह कज गुंजत पुंज मंचुल मधुकरा ॥४  
 कलहंस पिक सुक सरै रच करि गान नायाहे अक्षरा  
 दोहा सकल कला करि कोटि विधि हरे उ सेन ममेत ॥  
 चली नञ्चल समाधि शिव कोपे उह र यजिकोत ॥ ५३

देखि रसाल विटप वर शाखा ॥  
 सुमन चाप निज सर संधाने ॥  
 छुडे विषम विशिख उर लागे ॥  
 भये उईश मन कोस विशेखी ॥  
 सौरभ पल्लव मदन विलोका ॥  
 तब शिव तीसर नयन उधारा ॥  
 हाहा कार भये उ जग भारी ॥  
 समुझि काम सुख सोचिहि भोगी ॥

नेहि पर चंद उ मदन मन माखा ॥  
 अनिरिस्ता कि धवन लसता नि  
 छूटि समाधि शंभु नव जागे ॥  
 नयन उधारि सकल दिश देखी ॥  
 भये उ कोप केपे उ त्रय लोका ॥  
 चित्तवत काम भये उ जरि कारा ॥  
 डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥  
 भये अकै ट्क साधक यारी ॥

कंद योगी अकै ट्क मधे उ पति राति सुन नि राति सूकृत पयी  
 रो दति वदति बह भानि करुणा करत शंकर पह गयी  
 अनि प्रेम करि विनती विविध विधि जोरि कर सन्मुख सही  
 प्रभु आसु तोष कपालु शिव अवलातिरख वेलि सही ५  
 दोहा अब ने रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंरा ॥६  
 बिनु वपु व्यापहि सबहिं पुनि सुनि त्तिज मिलन संसय ६५

जब यदुवंश कृष्णा अवनारा ॥  
 कृष्णा तनय होइहि पति तोरा  
 रति रावनी सुनि शंकर वानी ॥  
 वेवत समाचार सब पाये ॥६  
 सब सुर विष्णु विरंचि समेता  
 प्रथक प्रथक तिन कोन्ह प्रशंसा

होइहि हरन महा महिभारा ॥  
 बचन अन्यथा होइ न सोरा ॥  
 कथा अपर अब कहौं वखानी  
 ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये ॥  
 गये जहां शिवरूपा तिकता  
 भये प्रसन्न चन्द्र अब तंसा ॥

देवता राशों की द्वाशा मे काम करके कैलाश पर्वत पर श्री महादेव जीकी मसाधि  
 से जगाना श्रीर श्री महादेवके कोपसे काम काम म्म होता



देवतागण





बोले कृपासिंधु वृषु के ल ॥  
कहि विधि तुम प्रभु अंतरागी

कहुहु अमर आयेंहु केहि हेतु  
तदपि भक्ति वसविन वें स्वामी

दोहा सकल मुरन के हृदय अस प्रकर परम उच्छ्राह  
निजनयनन देखा चहहिं नाथ तुम्हारे विवाह

पहुहु तसव देरिवयसारे लोचन  
कामजारी रति कहं वर दीन्ह  
संक्षिप्त करि पुनि करहिं पसाऊ  
पारवती तप कीन्ह अपारा  
सुनि विधि वचन समुनि प्रभु वानी  
तव देवन बुंद भी वजाई ॥ ॥  
अब सर जानि सप्त ऋषि आयें  
प्रथम राये जहां रही भवानी

सोकहु करिय सदन सद मोचन  
कृपा सिंधु यहि अति भल कीन्ह  
नाथ प्रभु न कर सहज सुभाऊ  
करहु तासु अब अंगी कारा  
सोई होउ कहा मुरव सानी  
वसिय सुमन जय जय मुरसाई  
तुरतहि विधि गिरि भवन पठायें  
बोले वचन सधुर कूल सानी

दोहा कहा हमारे न सुनेहु तव नारद कर उपदेश ॥  
अवभासूत तुम्हारे प्रजा जारेउ काम सहेष ॥

सुनि बोली सुस काये भवानी ॥  
तुम्हारे जान काम अब जारा  
हसरे जान सदा प्रिय योरो  
जो सै प्रिय वसेयेउ अस जानी  
तो हमारे प्रजा सुनेहु सुनी प्रा  
तुम जो कहा हरजारेउ मारा  
तात अनल कर सहज सुभाऊ  
गये समीप सो अवापि नसाई

उचित कहेउ सुनि वर विज्ञानी  
अवलसि प्रांभु रहे सविकारा  
अज अनवद्य अकाम अमोरा  
प्रीति समेत कर्म मन वानी  
करिहिं सत्य कृपानिधि ईशा  
सो अति बड अदि दे कतुम्हारे  
हिमतेहि निकल जाइ नहिं काऊ  
जिस संपाति निज पच्छु गांवाई

दोहा हिय हरये सुनि वचन सुनि देरिव प्रीति वि पूवास  
चले भवानी नाइ प्रिय रायेहि सा चलत पास ६६

सव प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा

सदन देहन सुनि अति दुरवपावा

बहुरि कहै उरति कार वरदाना  
हृदय विचारि शंभु प्रभुनाइ ॥  
सुनि सुनवन मुधरी मुहाई ॥  
पत्री सप्रवरपिन मोइ दोन्हा ॥  
जाइ विधिहि तिन दोन्हा सो पाते  
लगन बाचि अज सबहे सुनाई  
नुमन वृष्टि नभवाजन बाज ॥५॥

सुनि हि सवन बहुरि मुखमाना  
सादा सुनि वरलिये मुलाई ॥५॥  
वेगि वेद विधि लगन धाई ॥५॥  
गहि पदविनय हिमाचल कीहा  
वाचत प्रीतन हृदय समानी ॥  
हरषे सुनि सब सुर मनुदाइ  
संगल कलशदशहृदो मिजे

दोहा । लगे समहारन सकल सुर वाहन विविध विनान  
होहि संगल मवाल सुभ करहि अश्रार गाज ॥ १०० ॥

शिवाहि शंभु गराकर हि सिंगार  
कुडल कंकारो पाहरे व्याला ॥  
शशि लिलार सुन्दर शिर रंगा  
गरल कण्ठ उर नर शिर माला  
कर विमल अरु डमरु विराजा ॥  
दोख शिवाहि सुर त्रिय सुसकाही  
विष्णुतिरिचि आदि सुर व्रता ॥  
सुर समाज सब भाति अनुपा ॥

जय मुकट अहि मोर सवारा ॥  
नन विभक्ति पद केहारे काली  
नयन तोनि उपचोत भुजगा ॥  
असिब भेष शिव धाम कृपाला  
चले बसह चदि बाजहि बाजा ॥  
वर लायक डलहि जगनाही  
चदि चदि वाहन चले बराता ॥  
नहि वरात डलह अजु कृपा ॥

दोहा । विष्णुकहा अस विहसित बोलि सकल दिशि राज  
विलग विलग होइ चलह सवनिज सहित समाज ॥ १०१ ॥

वर अनुहार बरात न भाई ॥५॥  
विष्णुवचन सुनि सुर सुसकाने  
मन ही मन महेश सुसकाही  
अति प्रिय वचन सुनत हारि करे  
शिव अनुशासन सुनि सब आय  
नाना वाहन नाना वषा ॥५॥

हंसी करै हह पर सुर जाई ॥५॥  
निज रसेन सहित विलराने ॥  
हरिके व्यंगवचन नहि जाही ॥  
भुङ्गी प्रेरि सकल शारा टेरे ॥५॥  
प्रभु पदजलज शीस तिन नाये ॥  
विहस शिव समाज निज दरवा ॥

कोउ मुखहीन विपुलमुखका ह  
विपुलनयनकोउ नयनविहीना

विनुपदकरकोउ बहुपद बाहू ॥  
रिष्टपुष्टकोउ अति तनुक्षीना ॥

छन्द तनुक्षीराकोउ अतिपीन पावनकोउ अत्रपावन तनुधरे  
भूषणाकालकपालकर सबसद्य शोणित तनुभरे ॥  
खरस्वानसुत्र अगालमुखगारावेष अगणितकोगने  
बहुजि सिधेतपिशाचयोगिनि भाति वररात नहिबन्ते ७  
सोरठा नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ॥ ५ ॥  
देवत अति विपरीत बोलहिं वचनविचित्र विधि ॥ ६

जस दलह तसि बनी बराता  
इहां विमाचल रचेउ विताना ॥  
शैल सकल जह लागि जगसाही  
वन सागर नद नदी नलावा ॥  
कामरूप सुन्दर तनु धारी ॥ ॥  
आये सकल हिमाचल रोहा ॥  
प्रथमहिं गिरिबहु गढह संवराये  
पुर शोभा अवलोकि सुहाई ॥

कोतुक विविधिहोहिं मगुजाता  
अति विचित्र नहिं जायवरवाना  
लघु विशाल नहिं बरनि सिराहो ॥  
हिमगिर सब कहं नवतपराका  
सहित समाज सहित वर नारी ॥  
गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥  
यथा योग जह तहं सब छाये ॥  
लागे लघु विरंचि निपुराई ॥

छन्द लघु लागि विधि की निपुराता अवलोकि पुरशोभासही  
वन बागकूपतडाग सरिता सुभगता सकको कही  
मंगल विपुल तोरन पताका केतु गढह गढह सोहही  
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर कवि देखि मुनि मन मोहही ८  
दोहा जगदम्बा जह अवती सो पुरवरगान जाइ ॥ ५ ॥  
रिद्धि सिद्धि सपति सकल नित नूतन अधिकाइ ९०२

नगर निकट बरान सुनि आइ  
करि बनाव सजिवाहन नाना  
हिय हरये सुरसेन निहारी ॥

पुर खर भर शोभा अधिकाइ  
चले लैन मातर अगवाना ॥  
हरिहि देखि अति भये सुखारी

शिव समाज जब देवत लागे ॥  
 धारि धारज तह रहे सयाने ॥ ५  
 राय भवन पूछहि पितु साता ॥  
 कहिय कहा कहि जाइ नवाता ॥  
 बर बौराह बरद असवारा ॥ ५

विडरि चले वाहन सब भागे ॥  
 वालक सब ले जाव पराने ॥  
 कहहि वचन भय कपित गाता  
 यमकर धारि कीधौ बरियाता ॥  
 ब्याल कपाल विभूषणाकारा ॥

छन्द तनु कार ब्याल कपाल भूपत नगन जाल्क भयकार  
 संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट भुवरजनी चरा  
 जो जियत रहिहि बरात देवत पुण्य बह तिहिकर सही  
 देवहि सो उमा विवाह घर घर बात असलरि कनकही  
 दोहा समुझि महेश समाज सब जननि जनक मसकाहि  
 वालबु भाये विविधि विधि नडर हो उ डर नाहि ॥ १०३

लै अगवान वरातहि आये ॥ ५  
 मैना शुभ आरती सवारी ॥ ५ ॥  
 कंचन थार सोह वर पानी ॥ ५  
 विकट भेष जब रुझिहि देखा ॥  
 भागि भवन पैठी अति वासा ॥  
 मैना हृदय भयेउ दरवभारी ॥  
 अधिक सनेह शोद बैठारी ॥  
 जेहि विधि तुम्हहि रूप असदीन्हा

दिये सबहि जनवा स सुहाये ॥  
 संग सुमंगल गावाहि नारी ॥ ५  
 परछन चली हरहि हरषानी ॥  
 अवलनि उर भय भयेउ विसेखा  
 गये महेश जहाँ उनि वासा ॥  
 लीन्हा बोलि गिरीश कुमारी ॥  
 श्याम सराज नयन भरि वारी ॥  
 तेइ जडवर वाउर कस कीन्हा ॥

छन्द कस कीन्हा वर बौराह विधि जेइ तुमहि मुन्दरताई  
 जो फल चाहिय सुर तरुहि सो वरवम बवूरहि लागई  
 तुम सहित गिरते गिरी पावक जरी जल निधि मरि परी  
 घर जाउ अपजस होउ जग जीवत विवाह नहो करी ॥ १०  
 दोहा भयी बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरि नारि  
 करि विलाप रोदति कदति मुता सनेह संभारि ॥ ५ ॥ १०४

नारद कर से कहा बिगारा ॥३॥  
 अस उपदेश उमहि जिन दीन्हा  
 सोचहु उनके माह न साया ॥४॥  
 पर घर घालक लाजन भीरा ॥  
 जननहि विकल्प विलोकि भवानी  
 अस विचार सोचहु भति माता ॥  
 कर्म लिखा जो वाकर नाह ॥३॥  
 तमसनमिदहि विविधके अंका

भवनमोर जिन बसन उजारा ॥  
 वारे बरहि लागि तप कीन्हा ॥  
 उदामीन धान घाम न जाया ॥  
 वाक कि जान प्रमद को पीरा ॥  
 बोलीयुत विवक मृदु बानी ॥४॥  
 मोन टरै जो रचे विधाता ॥५॥  
 तो कत दोष लगाइय काहु  
 मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका

छंद जनि लेहु मात कलंक करुणा परि हरहु अवसर नही  
 दुख सुख लिखा जो लिलार हमरे जाव जहु पाउवतही  
 मुनि उगाववन विनीत को भूल सकला अवला सोचही  
 बड़ भाति विधिहि लगाइ दुषन नयन वारि विमोचही ११  
 दोहा तेहि अवसर नारद ऋषिये श्री ऋषि सप्र समेत ॥  
 समाचार सुनि तुहिन गिरि रावने बुरत जिकेत ॥ १०५

नव नारद सबहो समुभावा ॥  
 मयना सत्य सुनहु समवानी ॥  
 अजाअनादि शक्ति अविनाशिन  
 जगसंभव प्रालन लयकारिन  
 जनमा प्रथम दक्ष रह जाई ॥  
 नहंउ शती शंकरहि विवाही ॥  
 एकवार आवति शिव संगी ॥  
 भयेउ सोह शिव कहान कीन्हा

पूरे कथा प्रसंग सुनावा ॥ ५ ॥  
 जगदम्बा तव सुता भवानी ॥  
 सदा शशु अरधत निवासित ॥  
 निज इक्ष्वा लीला वपु धारिनि ॥  
 नाम सती सुन्दर तनु पाई ॥ ६ ॥  
 कथा प्रसिद्ध सकल जगसाही  
 देखेउ शुक्ल कमल पतंगा  
 अजवस भेष सीयकर लीन्हा ॥

छन्द सिय वेष सती जो कीन्हा तेहि अपराध शंकरपरिहरी  
 हर विरह जाइ वहीरि पितु के येन योगानल जरी ॥  
 अब जनास तुम्हरे भवन तिज पनि लागि दारुन तप किया

असं जानि संशय तजह गिरिजा सर्वदा शंकर प्रिया ॥ १२

दोहा

सुनि नारद के बचन नव सब कर भिता विषाद ॥ ५

सारा मह व्यापिउ सकल पुर घर घर यह संवाद ॥ ५ १०६

तव भयना हिमवत अनंद ॥ ५  
 नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ॥  
 लगे होत पुर संभल गाना ॥  
 भांति अनेक भई जेव नारा ॥ ५  
 सो जेव नार कि जाइ बरवानी ॥  
 मादर बोले सकल बरवानी ॥ ५  
 विविध पाति बैठी जेव नारा  
 नारि रन्द सुजइत जानी ॥

पुनि पुनि पारवती पद बंदे ॥ ५ ॥  
 नगर लोक सब अति हर घाने ॥  
 सजे सर्वाहे हाटक घट नाना ॥  
 सूप शास्त्र जस कहु व्यवहारा ॥  
 बसहि भवन जेहि सातु भवानी ॥  
 विष्णु विरंचि देव सर्व जाती ॥  
 लगे परोसन निपुरा सुआरा ॥  
 लार्गी देन गारि सुडवानी ॥ ५

छन्द

गारो मधुर सुर दीह सुन्दरि व्यग बचन सुनि वहा  
 भोजन करीह सुर अति विलंब विनोद सुनि सचु पावही  
 जेवत जो बहो अतं द सो मुख कोटिह न परे कह्यो  
 अचवाइ दीन्ह पान गवने बास जह जाको रह्यो ॥ १३

दोहा

बहारी सुनि न हिमवत कह लगन जनाई आइ ॥

समय बिलोकि विवाह कर पठये देव बुलाइ ॥ ५ १०७

गोल सकल सुर सादर लीन्ह  
 वेदी वेद विधान मवारी ॥ ५ ॥  
 सिंहासन अति दिव्य सुहावा  
 बैठे शिव विप्रन्ह सिर नाई ॥  
 बहारी सुनीसन उमा बुलाई ॥  
 देवत रूप सकल सुर मोहै ॥  
 जगदिका जानि भवभासा ॥  
 सुन्दरता मर्याद भवानी ॥ ५

सर्वाह यथोचित आसन दीन्ह  
 सुभग सुमंगल गावहि नारी ॥  
 जाइ नवरति विरंचि बनावी ॥  
 हृदय सुमिरिनिज प्रथु रघु राई  
 करि भंगार सखी लै आई ॥ ५  
 वरने छवि अस जग कविकोहै  
 सुरन मनहि सत कीन्ह प्रसासा  
 जाइ न कोटिह बदन बरवानी ॥

कुंद कोटिङ्गवदन नहिं वने वरतत जगजननि सोभा महा  
 सकुचहिं कहत भुति शेष शारद मंदमनितुलसीकिहा  
 छविखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप शिवजहा  
 अस्तोक्ति सक्तहि न सकुचि पति पद कमलसन मधुकर तहें १४  
 दोहा मुनि अनुशासन गंगापतिहि पूजउ शंभु भवानि ॥५  
 कोउ सुनि संशय करै जनि सुर अनादि जिय जानि १०८

जस विवाह की विधि भुति गाइ  
 गहि गिरीश कुसकन्या पानी  
 पानि ग्रहन जब कीन्ह महेशा  
 वेद मंत्र मुनि वर उच्चरहें ॥ ५  
 बाजहिं बाजन विविधि विधाना  
 हर गिरिजा कर भये उ विवाह ॥  
 दासी दास तुरंग रथ नागा ॥  
 अन्न कनक भाजन भरि जाना ॥

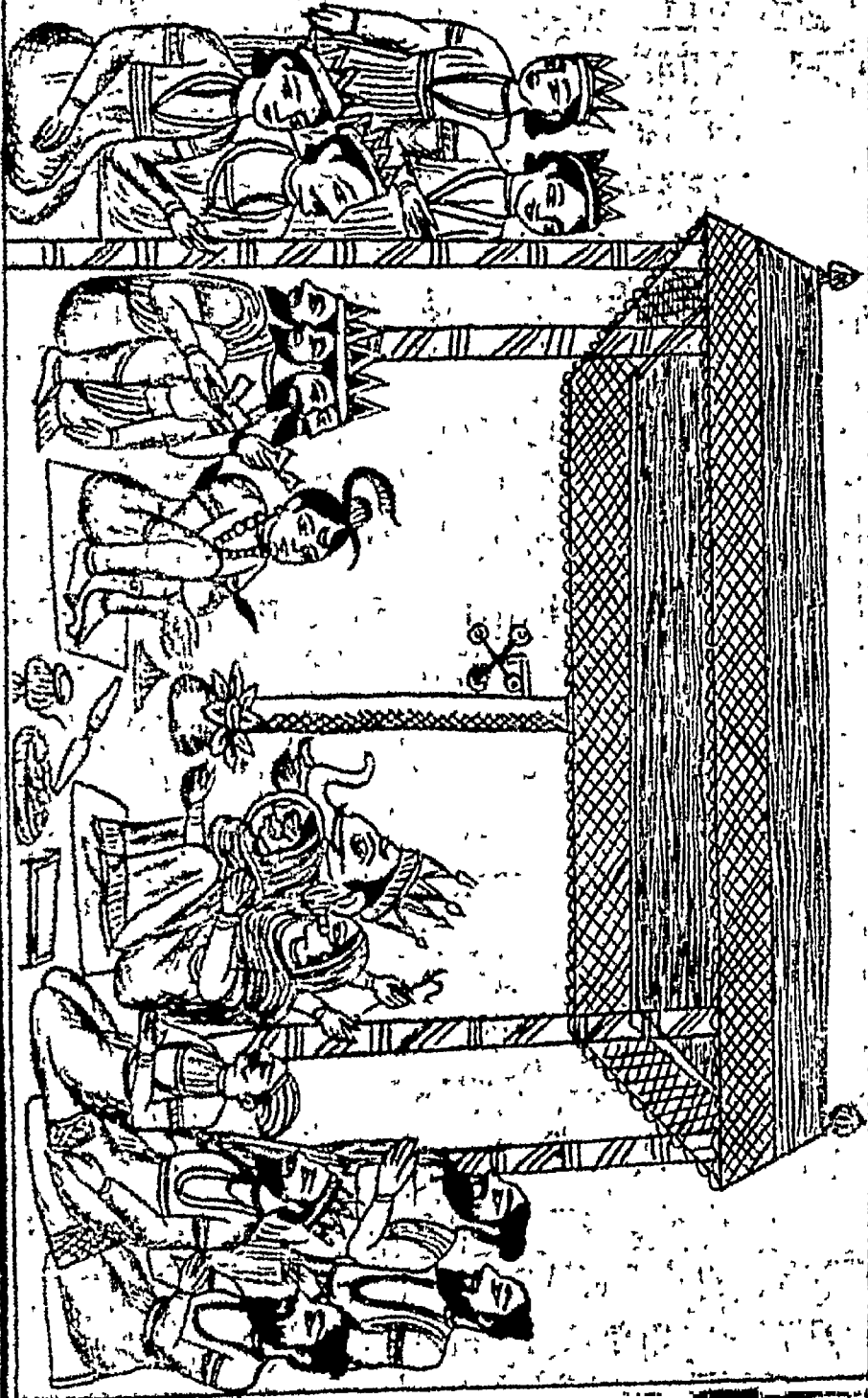
महा मुनि न सो सब करवाइ ॥ ५  
 शिवहिं समर्पि जानि भवानी ॥  
 हिय हारये नच सकल सुरेशा ॥  
 जयजयजय शंकर सुर करहीं ॥  
 सुमन लखि नभ भई विधि नाना  
 सकल भुवन भरि रहा उच्छाह ॥  
 धनु वसन मनि वस्तु विभागी  
 दाइज दीन्ह न जाय ववाना ॥

कुन्द दाइज दियो बहू भांति पुनिकर जोरि हिम भूधर कलौ  
 का देउ पूरणा काम शंकर चरणा पंकज गहि रह्यो ॥  
 शिव कृपा सागर समुकर परि तोष सब भांति न कियो  
 पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परि पूरणा हियो १५  
 दोहा नाथ उमा भम प्राणा सम गटह किं करी करेइ ॥ ५  
 हमेइ सकल अपराध सब होइ प्रसन्न वर देइ ॥

बहू विधि शंभु सास समुजाई  
 जननी उमा बोलि तब लोत्ही  
 करइ सदा शंकर पद पूजा ॥  
 वचन कहति भरि त्वोचन वारी  
 कत विधि मिरज नारि जगमाही

गवनी भवन चरणा मिरनाई  
 लै उच्छाह सुन्दर शिव दीन्ही ॥  
 नारि धर्म पति देवन दूजा ॥ ५  
 बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी ॥  
 पराधीन सपनेइ सुख नाही

हिमाचल के मन्दिर में शिवजी के व्याह के निमित्त ब्रह्मा विष्णु आदि सस्य  
रादेवतों को वरात में जाना और शिवपार्वती का व्याह होना





भद्र त्रिति प्रेम विकल सहनारी  
पुनिपुनि मिलति परति गहिचमगा  
सव नारिन मिलि भेदि भवानी

धीरजवीन्ह कुसमय विचारी ॥  
प्रेम विवसक कृजाइ नवर रागा ॥  
जाइ जननि उर पुनिल पटानी ॥

कृन्द जननिहिं वहरि मिलि चली उचिते अमी मव वकाह दई  
फिरि फिरि विलोकति मातु नन तव सखी लै शिवपहेगई  
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सहिन भवनहिं चले  
सव अमर हरषे सुमन वरंषि निशाजन भवाजहिं भले ॥१६  
दोहा चले संगहि मवंत तव पहंचावन अति हेतु ॥५॥५  
विविधि भाति परि तीषकार विद्याकीन्ह वृषकेतु ॥ ११०

तुरत भवन आये गिरि राई ॥५॥  
आदर दान विनय बहु माना ॥  
जवहिं शंभुकेला शहि आये ॥  
जगत मातु पितु शंभु भवानी ॥  
करहिं विविधि विधि भोग विलासा  
हर गिरिजा विहार नित नयऊ ॥  
तव जनमं षट बदन कुमारा ॥  
आगम जिगम प्रमिद्ध पुराना ॥

सकल शैल सरलिय बुलाई ॥  
सब कर विदा कीन्ह हिमवाना ॥  
सुर सब निजनिज लोक सिधाये  
तेहि भृंगार न कहौ बखानी ॥५  
गगान समेत वसहि केलाशा  
इहि विधि विपुल काल चलि गये  
नारक अ सुर समर जिन मारा ॥  
षट सुरव जन्म कर्म जम जागा ॥

कृन्द जगजाति षट सुरव जन्म कर्म घनाप पुरुषारथ महा  
नेहि हेतु मै वृषकेतु सुत कर चरित संक्षेपहिं कहा  
यह उमा शंभु विवाह जे नरनारि कहहिं जे गावही ॥  
कल्याणा काज विवाह मंगल सर्वदा सुख यावही ॥ ११०  
दोहा चरित सिंधु गिरिजा स्मन वेदन यावहिं पार ॥५॥  
वरने तुलसीदास किमि अति माते मंद गवार ॥५॥ १११

शंभु चरित सुनि मरम सुहावा  
वहलालसा कथा परवादी ॥५॥

भरद्वाज सुनि अति सुख यावा ॥  
नयन नीर रोमावलि ठावा ॥५॥

प्रेमविवस सुख आवन वानी ॥  
 अहो धन्य तव जन्म सुनीशा ॥  
 शिवपद कमल जिनहि रति नाही ॥  
 विनु छल विश्वनाथ पद तेह ॥  
 शिवसम को रघुपति व्रत धारी ॥  
 प्रसाकर रघुपति भक्ति दृढ़ आई ॥

दशादेवि हरवि सुनि जानी ॥  
 तुमहि प्राण सम प्रिय गौरीशा ॥  
 रामहि ते सपनेह न सुहाही ॥  
 रामभक्त कर लक्षणा रोह ॥ ५ ॥  
 विनु अघतजी सती अस नारी ॥  
 को शिवसम रामहि प्रिय भाई ॥

दोहा प्रथम कहे मै शिव चरित वृषा भरम तुम्हार ॥  
 सुचि सेवक तुम रामके रहित समस्त विकार ॥ ११२

मै जाना तुम्हार गुरा शाला ॥  
 सुनि सुनि आजु समागस तोरे ॥  
 राम चरित अति अनित सुनीशा ॥  
 तदपि यथा श्रुति कहौं परवाली ॥  
 सारद दारु नारि सम स्वासी ॥  
 जेहि पर लया करहि जनजानी ॥  
 प्रसाऊ सोइ कपालु रघुनाथा ॥  
 परम रथ्य गिरि वर केलासु ॥

कहौ सुनी अरु रघुपति लाला ॥  
 कहिन जाइ जस मुख मन मोरे ॥  
 कहिन सकाहि शत कोटि शहीला ॥  
 सुभिरि गिरा पति प्रभु धनु बाली ॥  
 राम सूत्र धर अंतर यासी ॥ ॥  
 कवि उर अजिर नचावहि वानी ॥  
 वरनऊ विशद तासु गुणा गाथा ॥  
 सदा जहां शिव उमा निवास ॥

दोहा सिद्धे तपोधन योगीजन सुर किन्दर सुनि वन्द ॥  
 वसहि जहां सकाती सकल सबहि शिव सुख कन्द ॥ ११३

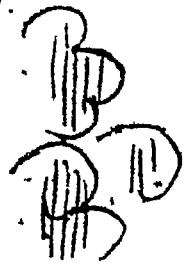
हरि हर विमुख धमे रत नाहौं ॥  
 तेहि गिरे पर बट विरप विशाला ॥  
 त्रिविधि ससीर सुशीतल छाया ॥  
 एक बार तेहि तर प्रभु गयेऊ ॥  
 निज कर डामि नागरे पुछाला ॥  
 कुन्द इन्दु वर गौर शरीरा ॥  
 तरुणा अरुणा अरु वुज सम चरणा ॥

ते चर तहां न सपनेह जाहौं ॥  
 नित नूनन सुन्दर सब काला ॥  
 शिव विभ्राम विरप श्रुति गावा ॥  
 तरु विलोकि उर अति सुख भयेऊ ॥  
 वेठे सहजहि शंभु कपाला ॥  
 भुज प्रलम्ब परि धन सुनि चौर ॥  
 नख डति भक्त हठ का महराणा ॥

श्री महादेव जीको कैलाश पर्वत पर चढ़के तले श्री पार्वती से रा  
मचरित्र कहना



पार्वतीजी



भुजगभक्तिपवरात्रिपुरारी॥

आनंदशरदचन्द्रविहारी॥

दोहा जटाकुटसुरसरित शिलोचनेनलिनविशाल  
नीलकंठलावन्यनिधिसोहवालविधभास्व॥ ११४

वैटमोहकाप्रियुकेसे॥५॥

धरेशरीरशास्त्ररसजैसे॥५॥

पारवतीमालअवसरजानी॥

गईशंभुपहमातुभवानी॥५॥

जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा

वामभागआसनहरदीन्हा॥

वैवीशिवसमीपहरषाई॥

पूरवजन्मकथाचितआई॥

पतिहियहेतुअधिकअनुमानी

विहसिउमाबोलीपियवानी

कथाजोसकललोकहितकारी

सोइपूछनचहशैलकुमारी

विश्वनाथममनाथपुरारी॥

त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हारी

अरअरुअचरनामनरदेवा॥

सकलकरहिपदपंकजसेवा

दोहा प्रभुसमर्थसर्वज्ञशिवसकलकलाशुराधाम॥

योगज्ञानवैराग्यनिधिप्रसातकल्पतरुनाम॥ ११५

जोमोपरप्रसन्नसुखरासी॥

जानियसत्यसोहेनिजदामी

तोप्रभुहरहमोरअज्ञाना॥॥

कहिखुनाथकथाविधिनावा

जामुभवनसुरतरुतरहोई॥

सहकिदरिद्रजनितदुखसोई

शशिभूषणअसहृदयविचारी

हरहनाथमममतिभंसभारी

प्रभुजेमुनिपरमारथबादी॥

कहहिंरामकहंज्ञहंअनादी॥

शेषशारदावेदपुराण॥५॥

सकलकरहिखुमातेसुरागाना

तुमपुनिरामनामदिनराती॥

सादरजपहअनंगअराती॥॥

रामसोअवचन्यतिसतसोई

क्रीअजअगाराअलखगतिकोई

दोहा जोन्यपतनयतोब्रह्मकिमिनारिविरहसतिभोसि

देखिअरितमहिमाभुनतभूमनिवृद्धिअतिसोसि॥ ११६

जोअनीहव्यापकविभुकोज

कहउखुजायनाथसोहसोज

अज्ञजानिरिसजनिउरचह

जेहिविधिसोहमिदिसोकरह

सैबल दीख राम प्रभुताई ॥ ५ ॥  
 तदपि मलिन मन बोधन आवा  
 अजहं कछु शंशय मनमोरे ॥  
 प्रभु नव मोहि बहू भाति प्रबोधा  
 नख कारअस विमोह मोहि नाहीं  
 कहह प्रतीत राम गुरा बाथा

अति भय विकल न तुमहि सुनाई  
 सो फल भली भांति मैं पावा ॥  
 करइ कृपा विलज्ज कर जोरे ॥  
 नाथ सो समुक्ति करइ जनिबोध  
 रामकथा पर कवि मन साहीं ॥  
 भूजग राज भूषणासुर नाथा

दोहा बंदी पद धरि धरनि सिर विनय करी कर जोरे ॥  
 वरणाह रघुवर विशद यक्ष धृति सिद्धांत निचोरे ११७

दासी मनकम वचन तुम्हरी  
 आरत अधिकारी जहं पावहि ॥  
 रघुपति कथा कहइ करिदाया  
 निरुणाब्रह्म सगुरा वपु धारी ॥  
 बालचरित पुनि कहइ उदारा ॥  
 राज तजा सो दूषणा काहा ॥  
 कहइ नाथ जिमि रावणा मारा  
 सकल कहइ शंकरसखशीला

यदापि योपिता अनअधिकारी  
 गली तत्व न साधु डरावहि ॥ ५ ॥  
 अति आरति पूछो सुरराया ॥  
 प्रथम सो कारणा कहइ विचारी  
 पुनि प्रभु कहइ राम अवतारा ॥  
 कहइ यथा जानकी विवाहा ॥  
 बनवास की ल्हेउ चरितअपारा  
 राज बैठि की ल्ही बहू लीला ॥

दोहा बहुरि कहइ करुणायतन कोन्ह जो अचरज राम ॥  
 प्रजा सहित रघुवंश मरिा किमि गवने निज धाम ११८

पुनि प्रभु कहइ सो तत्व बरवानी  
 भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ॥  
 त्रैलोक्य राम रहस्य अनेका ॥ ५ ॥  
 जो प्रभु मैं पूछा नहि होई ॥ ५ ॥  
 तुम त्रिभुवन गुरुवेद बरवाना ॥  
 प्रभु उमाकी सहज सुहाई ॥  
 हरि हिय राम चरित सब आयै

जेहि विज्ञान मगन सुनि ज्ञानी  
 पुनि सब बरणाह सहित विभागा  
 कहइ नाथ अति विमल विवेका  
 सोउ दयाल राखइ जनिगोई  
 आन जीव पामर का जाना ॥  
 कल विहीन सुनि शिव मन भाई  
 प्रेम पुलकि लोचन जल कसे

<p>श्रीरघुनाथ रूप उर आवा ॥</p>	<p>परमानंद अमित सुख पावा</p>
<p>सोहा भगवत ध्यान रस दंड युग युनि मन बाहिर कोन्ह रघुपति चरित महेश तव हरषित बरने लोन्ह ॥ ११६</p>	<p>जिभिभुजग विनु रजुपहिचाले जारी यथा सपन अमजाई ॥ सब विधि सुलभ जपत जमनाइ इवो सोदसरथ अजर विहारी ॥ हरषि सुधास भगिराउचारी तुम समान नहि कोउ उपकारी सकल लोक यश पावन रागा कोन्ह उ प्रभु जगत हित लागी</p>
<p>सूडै सत्य जाहि विनु जाने ॥ जेइ जाने जगजाइ हिराई ॥ बंदो बालरूप सोइ रामू ॥ ५ संगल भवन अ संगल हारी ॥ करि प्रणाम रामहिं विपुरारी ॥ धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ॥ हूछेइ रघुपति कथा प्रसंगा ॥ हम रघुवीर चरराअनु रागी ॥</p>	<p>कहत सुनत सब करिहत होइ श्रवन रंधु अहि भवन सजाना लोचन मार पंख कर लेखा ॥ जे न नमत हरि गुरु पद मूला जीवत सब समान ते प्राणी ॥ जीह सुदाडर जीह समाना ॥ सुनि हरि चरित तजोहर राती सुरहित डनुज विमोहन शीला</p>
<p>सोहा रामरूपते पावती सपनेइ तव मन सांही ॥ ५ शोक मोह संदेह प्रम सम विचार कछु नाहि ॥ १२०</p>	<p>दहापि अशका कोन्ह उ सोइ जिन हरि कथा सुनी नहिं काना नयन न सक्त दरशनहि देखा ते शिर कटु तमर समतूला ॥ जिन हरि भक्ति हृदय नहिं अनी जो नहिं करहिं रामगुरा गाना कुलिश कठोर निदुर सोइ छती गिरजा सुनइ राम कर लीला</p>
<p>दोहा राम कथा सुर धनु सम सेवत सब सुख दानि ॥ संत सभा सुरलोक सम कौन सुने अस जानि ॥ १२१</p>	<p>राम कथा सुन्दर कारतारी ॥ ५ राम कथा कलि विटप कुवारी</p>
<p>राम कथा सुन्दर कारतारी ॥ ५ राम कथा कलि विटप कुवारी</p>	<p>संशय विहंग उदावन हारी ॥ सादर सुनु गिरिराज कुमारी ॥</p>

रामनाम गुणान्वितसुहाय  
जथाश्रवन्तरामभगवान् ॥  
नदपि जथाश्रुतजसमतिमोह  
उमाप्रश्नतवसहजसुहाई ॥  
एकवातं नहि मोहि सोहानी ॥  
निभोजीकहा रामकोउआना ॥

जन्मकर्मआशानधुतिगाय  
तथा कथाकीरतिगुणाना  
कोहिहोदेखिप्रीतिअतिमोरी ॥  
सुखदसन्तसम्पतिमोहिभाई ॥  
यदीपिमोहवसकहहभवानी  
जोहिधुतिगावधरहिंसुनिध्यान

दोहा कहहि सुनीह्यसअधम नरगसेजेमोहपिशाच  
पाखंडीहरिपदविमुखजानहि भूठन सांच ॥ १२२

अज्ञअकोविदअन्धअभागी ॥  
लम्पटकांडीकुटिलविशेषी  
काहहि तेवेदअसम्मतवानी ॥  
सुकारमलिनअरुमयनविहीना  
जिनकेअगुणा नसगुणाविवेका  
हरिसायावशजगतभ्रमरही  
बालुलभूतविवसमतवारे ॥  
जिनकतमहामोहमदपाता

काईविषयमुकहुमनलागी  
सपनेइसंतसभानहिदेखी ॥  
जिनहिंनसुभलाभनहिहानी ॥  
रामरूपदेखाहिंकिमिदीना ॥  
जल्पाहिंकल्पतवचनअनेका  
तिनहिकहतकछुअघटितनाही  
तेनहिबोलहिंवचनसंभारे ॥  
तिनकहकहाकरियनहिंकाना

सोखी असनिजहृदयविचारितजिसशयमजुरामपद ॥  
मुनिगिरिराजकुमारिभ्रमतमरविकरवचनमसे ॥ १०

सगुणाहिएगुणाहेनहिकरुभेदा  
अगुणाअसपअलखअजजडि  
जोगुणारहितसगुणासोकैसे  
जासुनामभमतिभ्रयतंशा ॥  
रामसच्चिदानंददिनेशा ॥  
सहजप्रकाशरूपभगवाना  
हरषविषादज्ञानअज्ञाना ॥

भाषाहिमुनिपुराणाबुधवेदा ॥  
भक्तप्रेमबंससगुणासोहोई ॥  
जलहिंमउपलविलगानहिजेस  
तेहिकिमिकहियविमोहप्रसंगा  
नहिंनहंमोहनिशालवलेशा  
नहिंनहंपुनिविज्ञानविहाना  
जीवधमअहिमितिअभिमाना

रामब्रह्म व्यापक जगजाना ॥	मत्मानन्द परेश पुराना ॥
---------------------------	-------------------------

दोहा पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि प्रगत परावरत्नय रघुकल मरीचा मम स्वामि सोइ कहि शिवनाथ उमाथ १२३	
---	--

निज भ्रमनाहि ममुकाहे अज्ञानी यथा रागनघन पदल निहारी चितवजो लोचन अशुलिलाये उमारा म विषयक अस मोहा ॥ विषय करन सुरजीव समेता सब कर परम प्रकाशक जोई जगत प्रकाश्य प्रकाश करी मू जासु सत्यता ते जड माया ॥	प्रभु पर मोह धराहे जड प्राणी ॥ ज्ये उमानुका हदिकु विचारी ॥ प्रगत युगल शशि तेहि के साये नम तम धूम धुरे जिमि सोहा ॥ सकल एकते एक सेवेता ॥ राम अनादि अविधिपति सोई मायाधीश ज्ञान गुरा धाम ॥ भास सत्य इव मोह सहाया
---	---

दोहा रजत सीप मह भास जिमि यथा भानु कर वारि बंदीप मर्यातिहे काल सोइ भ्रमन सके कोउ वारि १२४	
---	--

इहि विधि जग हरि अश्रित रहई ज्यो सपने सिर काटे कोई ॥ जाहु कृपा अस भ्रम मिट जाई आदि अंत काउ जासुन पावा विनु पद चले सुने विनु काना ॥ आनन रहित सकल रस भोगी तनु विनु परस नयन विनु देवा अस सब भांति अलौकिक काली	यदापि असत्य देत डरव अहई विनु जागे डरव दूरिन होई गिरज मोइ कपालु रघुराई ॥ मति अनुमान निराम अस राव कर पितृवक करे विधि नाना विनुवाना वता बड योणी ॥ ग्रहे प्राणा विनु अस अशेषा ॥ महि साजासुजे इ नहि वरनी
--	--

जेहि इ मम वहि वेद बुध जाहि धरहि सु ने ध्यान ॥  
सोइ दमरथ सुत भक्त हित कोशल पति भगवन १२५

काशी मरत जनु अब लोकी सोइ प्रभु मार चराचर स्वामी	जासु नाम बल करी विशोकी रघुवर सब उर अंतर जाती ॥
--	---



दिवसह जासु नाम नरकाह हीं  
सादर सुनिरज जो नर कर हीं ।  
राम सो परमातला भवानी ॥  
अस संशय आनत उर माही ॥  
सुनि शिव के भुम मंजन वचला  
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती

जन्मअनेक सचिव अधदह हीं  
भव वारिधि गोपद इव तर हीं ॥  
तहं अम अति अविहित तव वानी  
ज्ञान विराग सकल गुन जा हीं  
सिदिवाइ सब कुतर्क की रचना  
दारुणा अ संभावना बीनी ॥

होहो पुनि पुनि प्रभु पद कमल गाहि जो रिपंकार अधान  
बोली गिरजा बचनवर मनहं प्रेम रस सानि ॥ १२६

शशिकर सम सुनि गिरा तुम्हारी  
तुम कपालु सब संशय हरेऊ ॥  
नाथ कृपा अब रायेउ विवादा ।  
अब मोहिं आपनि किं कर जानी  
प्रथम जो मैं पूंछा सोइ कह हूं ॥  
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ॥  
नाथ धरेउ नरतनु कीह हेतू ॥  
उमा बचन सुनि परम विनीता

मिटा सोह शरदा तपा वरा ॥  
राम स्वरूप जानि सोह परेऊ  
सुरवी भइउ प्रभु चरिगा प्रसादा  
यदपि सहज जड नारि अयाची  
जो सो पर प्रसन्न प्रभु अह ह ॥  
सर्व शांत सब उर पुर वाशी ॥  
मोहि समजाय कहइ वृषकेतू  
राम कथा पर प्रीति पुनीता ॥

होहा हिये हरषे कामारि तव शंकर सहज सुजान ॥  
बड विधि उमाहिं प्रसंसि पुनि बोले कृपा निधान १२७  
सोरा सुनु भुम कथ्य भवानि राम चरित मानस विमल  
कहा भुसुंड़ि वखानि सुना विहंग नायक गरुड ११  
सोइ संवाद उदार जेहि विधि भा अगि कहव ॥  
सुनइ राम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ ॥ १३  
हरि गुरा नाम अपार कथा रूप अगरीत अमित  
मै निज मति अनुसार कहौ उमा सादर सुनइ ॥ १३

सुनु गिरजा हरि चरित सुहाये विपुल विशद निरामागम राय

ही भ्रवतार हेतु जेहि होई ॥ ४ ॥  
 राम अतर्व्य वृद्धि मत्तवानी ॥  
 तदपि संत मुनि वेद पुराणा ॥  
 तसमै सुमुखि मुनावउं तोही ॥  
 जब जब हा इ धर्म की हानी ॥  
 करहि अनात जाय नहि वरना  
 तब तब प्रसु धरि विविधि शरीरा

इदमित्यं कहि जाइ न मोई ॥  
 मत्त हमार अस सुनइ भवानी  
 जस कछु कहिं स्वमति अनुमात  
 तसु फि परे जस कारणा मोही ॥  
 बादहि असुर अधम अभिमानी  
 सीदहि निप्र धनु सुर धरनी ॥  
 हरहि कृपा निधि सज्जन पीरा ॥

दोहा असुर मारि थापाहे सुरन्हि राखाहं निज श्रुतिनेतु  
 जग विस्तारिहि विशदयश राम जन्म कर हेतु ॥ १२८

सोयश गाइ मत्त भवत र ही ॥  
 राम जन्म के हेतु अने का ॥  
 जन्म एक दुइ कहौ वरवानी ॥  
 द्वारपाल हरिक प्रिय दोऊ ॥  
 विप्र प्रापते दोनौ भाई ॥ ५ ॥  
 कनक कासिपु अरु हाटकलाचन  
 विजई ससरवार विरथ्याता ॥  
 होइ नर हरि पुनि दुलार मारा

कपासिधु जनहित तनु धरही  
 परम विचित्र एक ते एका ॥  
 सावधान सुनु सुमति भवानी  
 जय अरु विजय जान सबको ॥  
 तामस असुर देहि तिन पाई ॥  
 जगत विदित सुरपति मद मोचन  
 धरि व राह वपु एक निपाता ॥  
 जन प्रदलाद सुयश विस्तारा ॥

दोहा भये निशचिर जायतव महावीरवलवान ॥ ४ ॥

कुम्भ कारा रावरा समट सुरविजई जग जान १२९

मुक्तन भयेउ हत भगवानो ॥  
 एकवार तिनके हित लागी  
 कश्यप अदिति तहा पितु साता  
 एक कल्प एहि विधि भ्रवतारा  
 एक कल्प सुर देरिव दुखारे  
 शंभु कीन्ह संग्राम अपारा ॥

तान जन्म द्विज वचन प्रमाना  
 धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥  
 दशरथ की शल्या विरथ्याता  
 चरित पवित्र किये संसारा ॥  
 ससरजल धरसन सब हारे ॥  
 दनुज पहावल मरे न मारा ॥

परमसती असुराधिपत्तारी ॥

तेहिबलताहिनजानपुरारी ॥

दोहा कलकारिदारखतासुझन प्रभुसुरकारजकोन्ह  
जबतेहिजातेउममें तवभ्रापकोपकोरिदीन्ह १३०

तासुभ्रापहारेकोन्हप्रभाता  
तहांजलंधरावराभयेऊ ॥

कौतुकनिधिकपालभगवाना  
रसाहतिरामपरमपददयऊ ॥

एकजन्मकरकारासेहा  
प्रतिअवतारकथाप्रभुकेरी ॥

जेहिलगिरामधरीनरदेहा ॥  
मुनिश्वरनीकविमधनेरी ॥

नारदभ्रापदीन्हयकवारा ॥

कल्पएकलरिनेहिअवतारा  
नारदविष्णुभक्तमुनिज्ञानी ॥

गिरजाचकितमईसुनिवानी  
काराकवनभ्रापमुनिदीन्हा ॥

काअपराधरमापतिकोन्हा ॥  
मुनिमनमोहसोअचरजभरि ॥

विष्णुभगवानकोजलंधरकीस्त्री वंदाकापतिअनमङ्ककरकेजलंधरका

तेजहतकरना



श्रीमहादेवजी और जलधर का युद्ध



रोहा बोले विहसि महेश तब शानी नूदन कोइ ॥ ३ ॥  
 जेहिजसर धुपति करहि जब मोतमनहि सरा होइ ॥ १३१ ॥  
 सोरया कहौ राम गुरागाथ भरद्वाज सादर सुनइ ॥ ४ ॥  
 भवभजन रथनाथ मज्जतुलसी ताज मान मद ॥ १४ ॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि  
 आश्रम परम पुनीत सुहावा ॥  
 निरखि शैल श्री विपिन विभागा  
 सुमिरत हरिहि आप गति वाधी  
 सुनि गति देखि सुरेश डराना ॥  
 सहित सहाय जाइ मम हेतू  
 मुनासीर गनमहं अति चासा ॥  
 जे कामी लोलुप जग माही ॥

वह समीप सुरसरित सुहावनि  
 देखि देव ऋषि मम अति भावा  
 भयेउ रमापति पद अनुरागा ॥  
 सहज विमल मनलारि सपा  
 कामहि बोलि कौन्ह मन्माना  
 चलेइ हरिषि हिय जलधर के  
 चहेत देव ऋषि मम पुरवामा  
 एगटिल काक इव सबहि डेराही

टोहा मखवाल ले भावा सत भवान निरखि मगराजा ॥

छीनिलेइजलि जान जइतिमि सुरपतिहिनलाज १३२

नेहिअमहि मदन जबरयेज  
कुमुमित विविधविदयवह रंगो  
बली सुहावनि विविधिवयासी॥  
रमादिक सुरनारि नवीना॥  
करहि गान वहनान तरंगा ॥  
देखि सहाय मदन हरबाना ॥  
कामकला कछु मुनिहि नव्यापी  
सीसकिचापसके कोउ नाम

निज माया वसंतनि मयऊ ॥  
कुजहिं कोकिल गुंजहि भंगगा ॥  
कामरुशानु वदावनिहारी ॥  
सकल अमम सर कला प्रवीना  
वह विधि क्रीडाहि यानि पतवा  
कीन्हैसि पुनि प्रपंचविधिना  
निज भवडरेउ मनो भवयापी  
वड रबबार रमाप्रति जासू ॥

दोहा सहिन सहाय सभोते अति मानि हारि मनचैन

गहैसि जाइ मुनि वर चरसा कहि मुठिआरत बैन १३३

अधेउ न नारद मन कछु रोखा  
नाय चरणा शिर आय मुपाई ॥  
मुनि सुशीतलना आपनि करनी  
सुनि सबके मन अचरज आया  
तव नारद गवने शिव पाही ॥  
कोस चरित शंकरहि सुनावा  
बारबार बिनवउ मुनि तोही ॥  
तिनिजनि हारीहि सुनावहु कवह

काहि प्रियवचन कामपरितोषा  
गयेउ मदन तव सहित सहाऊ  
सुरपति सभाजाय सब वरनी  
मुनिहि प्ररंसि हरहि शिरनात्रा  
जीत काम अहि मनि मनमाही  
अति प्रिय जानि महेशसिखाव  
जिमि यह कथा सुनायउ मोही  
चलेहु प्रसंग डरायहु तवहु ॥

दोहा शंभु दीन उपदेशहि नहि नारदाहे मुहाना ॥

भरहान कोनुक मुनहु हरि इच्छा वलवान ॥ १३४

राम कोन्ह चाहे सोइ होई ॥  
शंभु वचन मुनि मनहि न भाये  
एकबार करतल बरवीना ॥  
आर सिंधु गवने मुनि नाथा ॥

करे अत्यचा अस नहि कोई  
तव विरवि के लोक सिधाये ॥  
गावत हरि गुण गान प्रवीना  
जह वस श्रीनिवास मुनिमाथा ॥

हरवि मिले उठि रासा निकेना  
 वाले विहंसि चराचर राया ॥  
 कामचरित नारद सब भाषे ॥  
 अति प्रचण्ड रघुपतिकी माया

विदे आसन कृषय समेता ॥  
 बहने दिनन्ति कीन्ही मुनिदाया  
 यद्यपि प्रथम वरजि शिवरायो  
 जेहि न मोह असको जगजाया

दाहा रूख बदन करि वचन मद्द वाले श्री भगवान ॥  
 तुम्हेर सुमिरन ते मिटाहि मोह मार मद्मान ॥ १३५

सुनु मुनि मोह हाइ मनताके  
 बह्न चर्ये व्रत रत सति धीरा ॥  
 नारद कहेउ सहित अभिमान  
 करुणा निधि मन दीख विचारी  
 वेगि सो सैं डारि हों उपारी ॥  
 सुनि करहित मन कौतुक होई  
 तव नारद हरि प्रद शिर नाई ॥  
 श्री प्रति निज माया तव प्रेरी ॥

ज्ञान विराग हृदय नाह जाके  
 तुम्हाहिके करहि मनोभव पीर  
 रूपा तुम्हार सकल भगवान  
 उर अकरेउ गर्व तह मारी ॥ १३६ ॥  
 प्रणहमार सेवक हितकारी  
 श्रवसि उपाय करव मै सोई ॥  
 चले हृदय अहमति अधिकार  
 सुगड कठिन करनी तेहि करी

दाहा विरचउ अणु मह नगर तेहि सत योजन विस्तार  
 श्री निवास पुर ते अधिक रचना विविध प्रकार १३६

बसहि नगर सुन्दर नर नारी ॥  
 तेहि पुर वशे श्री निधिराजा  
 शत सुरेश सन विभव विलासा  
 विभव मोहना नासुकुमारी ॥  
 सो हरि माया सब सुरा रानी  
 कर भवेय तवर मो न्यप वाला  
 सुनि कौतुकी नगर तेहि गयेउ  
 सनि सब चरित भूप रदह अयि

जनु बहु अनसि जरीत तनु धारी  
 अगरीत हय गज सेन समाजा  
 रूप तेज बल नीत निवासा ॥  
 श्री विमोह जेहि रूप निहारी  
 शोभाता सुकि जाइ वरवानी ॥  
 आये तह आगरीत महिपाल  
 पुर वासिन सन वृजत भयेऊ  
 करि एजा न्यप मुनि बैठाये ॥

दाहा आनि दिखाई नारदाहि भूपाल राजकुमारी ॥ १३७

कहह नाथ गणादीप सब इहिकर हृदय विचारी ॥ १३७

देखि रूप मुनि विरति विसारी ॥ लक्षणा तासु विलोकि मुलाने जो इहिवरै अमर सो होई ॥ सेवाइ सकल चराचर ताही ॥ लक्षणा सब विचार उर रावै ॥ सुता सुलक्षणा कहि न्यपपाही करो जाइ सोइ यतन विचारी जपतय कछु न होइ याहिकाला	पड़ो वार लगि रहे निहारी ॥ ५ हृदय हर्ष नहि प्रनद वारवाने ॥ नमर भूनि तोहि जीत नकोई वै शील निधि कन्या जाही ॥ कछु कबनाइ भूप मन भावै ॥ नारद चले सोच मन माही ॥ जोहि प्रकार सोहिं वरै कुमारी ॥ हेविधि मिले कवन विधि बाला
---	--

दोहा इहिवर सचाहिय परम शोभा रूप विशाल ॥

जो विलोकि रीफे कुंवारि नव मैले जयमाल ॥ १३८

हरि मन मांगी सुन्दरताइ ॥ मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ बहु विधि विनय कीन्ह तेहिकाला प्रभु विलोकि मुनि नयन जुडाने अति आस्त कहि कथा सुनाई आपन रूप देउ प्रभु सोही ॥ ५ जोहि विधि नाथ होइ हित मोरा निज माया बल देखि विशाला	होइह जात राह रुच्यति भाई इहिवर सहाय सो होऊ प्ररादेउ प्रभु कौतुकी कपाला होइहिका जहिये हरषाने ॥ ५ करह कथा प्रभु होउ सहाई ॥ आन भांति नहिं पावउ सोही ॥ करो सोवेगि दास मै तोरा ॥ हिय हंसि बोले दीन दयाला ॥
---	--

दोहा जोहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार

सोइ हम करव न आन कछु बचन न सृषा हमार ॥ १३९

कुपथ मांगु रुज व्याकुल रोगी इहिविधि हित तुम्हार मै व्यऊ माया विवश भये मुनि मूढा ॥ गवने नुरत तहां नृषि राई ॥	वेदन देइ सुनहु सुति योगी कहिवस अंतर हित प्रभु भयेऊ समुफी नहिं हरि गिरानि गूढा जहा स्वयंवर भूमि बनाई ॥
--	--

<p>तिजतिज आसन वैठे राजा ॥  मुनिमन हर्ष रूप अति मोरे ॥  मुनिहित कारणा रूपानिधाना  सो चरित्र लषिका हुन पावा ॥</p>	<p>बहुवताव करि सहित समाजा  मोहित जिअन वरिहि नहि भोरे  दीन्ह कुरूप न जाइ वरवाना  नारद जानि सबहि शिर नावा</p>
---	---

दोहा रहे तहां उह रुद्र गारा ते जानाहि सब भउ ॥ ५  
विभेष देवत फिरि पाम कोतकी ते उ ॥ ५ १४७

<p>जोह समाज वैठे मुनि जाइ  तह वैठे महेश गारा दोऊ ॥ ५  करहि कूट नारदहि सुनाई ॥  रोकिहि राज कुं वरि छवि देवी  सुनहि मोह मन हाथ पराये ॥  यदपि सुनहि मुनि अटपट बानी  काहुन लखा सो चरित विशेषी  मकट वदन भयंकर देही ॥ ५</p>	<p>हृदय रूप अहि मति अधिक  विभेष गति लखेन कोऊ ॥  नीक दीन्ह हरि सुन्दर ताई ॥  इनहि वरिहि हरि जान विशेषी  हंसाहि शभु गारा अति सचु पाये  समुफिन परे बुद्धि सम साती  सो स्वरूप न्यप कन्या देवी ॥  देखत हृदय क्रोध भा तेही ॥</p>
---	--

दोहा सखी संग ले कुं वरि तव चलि जनु राज मराल  
देवत फिरै महीप सब कर सरोज मय माल ॥ १४९

<p>जोहि दिशि वैठे नारद फूली ॥  पुनि २ मुनि उकसहि अकुलाही  धरि न्यप तनु तह गयेउ रुयाला  दुलहिन लंगोल च्छिनि वासा ॥  मुनि अति विकल मोह मति नाठी  तव हर गारा बोले सुसकाई ॥  असकहि होउ भावो भय भारी ॥  भेष विलोकि क्रोध अति वादा</p>	<p>सो दिशि ते इन विलोकी सुली  देखि दशा हर गुरा सुसकाही  कुं वरि हरिषि मेलेउ जय माल  न्यप समाज सब मयेउ निरासा  मरिा गिरि गई छूटि जनु गाठी  निज मुख सुकर विलोकह जाई  वदन दोख मुनि वारि निहार ॥  तिनहि प्राप्प दीन्ह अति वादा</p>
--	--

दोहा होइ निशाचर जाइ नुम कपटो रापी दोउ ॥



हंसहहमहि सोलेहह कल बहरि हंमेउ मुनिकेउ १४२

पुनि जल दीवरूप निज याव  
 फाकत अधर कोय मनमाही  
 देहो आप कि मरि हो जाई ॥  
 बीचहि पंथ मिले दनुजारी ॥  
 बोले मधुर वचन सुर साई ॥  
 सुनत वचन उपजा अति क्रोधा  
 पर संपदा सकइ नहि देवी  
 मथत सिधु रुद्रहि वीराये ॥

तदपि हृदय संतापन आधा ॥  
 सपदि चले कमला पनि पाही  
 जगत मीरि उपहाम कराई ॥  
 मंगरना सोई राज कुमारी ॥  
 मुनिकइ चले विकल की नाई  
 माया वमन रहा मन बोधा ॥  
 तुमरे डीर्घा कपट विशेषी ॥  
 सुरन प्रेरि विष घान करायेइ ॥

दोहा अमुर मुरा विष शंकराहे अपुरमा मारो चारु

स्वार्थ साधक क्रादिल तुम मदा कपट ल्य बहार १४३

परम स्वतंत्र नशिर पर कोइ ॥  
 भलेहि मंद मंदहि मल करह  
 डहंकि उहंकि परिकेइ सब कोह  
 कर्म भुसा भुभ तुमहि न वाधा  
 भले भवन अद बाय न दीन्हा ॥  
 बंचेइ मोहि जवन धरि देहा  
 कपि आकति तुम कीन्ह हमारि  
 सम अणकार कीन्ह तुम भारी

भावे मनहि करइ तुम साई ॥  
 विस्मय हर्ष न हिय कछु धरह  
 अति अशक मन सदा उकाह ॥  
 अबल गि तुमहि न काह साधा  
 पावइ मो फल आपत कीन्हा  
 सोइ ननु धरइ श्राव सम येहा ॥  
 करि रहि कीस सहाइ तुम्हारी  
 नारि विरह तुम होउ दरवारी ॥

दोहा श्राप शीश धरि हरषि हिय प्रभु सुर कारज कीन्ह

निज माया की प्रवलता हरषि रुपा निधिलीन्ह १४४

जब हरि माया दरि निवारी ॥  
 तब मुनि अति सै भीत हरि चरणा  
 रुषा होउ सम श्राप रुपा ला  
 सै उर्वचन कहेउ बहनेरे ॥ ४

नहि नहरमान राज कुमारी ॥  
 गहे पाहि प्रगानारति हरणा ॥  
 सम इच्छा कह दीन दयाला ॥  
 कह मुनि पाय सिदहि किमि मरे

जमह जाइ शंकर शतनामा ॥  
 कीउ नहि शिवसमानप्रियमो ॥  
 जोहिं पर कपान करहि पुरारी ॥  
 असउर धीरमहि विचरह जाई

होइहे हृदय नुरतविभ्रामा ॥  
 अस प्रतीति त्यागेह जनिभारे ॥  
 सोन पाव सुनि भक्ति तुम्हारी ॥  
 अवनतुमहि माया निया गाई ॥

दीहा बह विधि नुनिहि प्रवाध प्रभुनव सन्नध्यात ॥ भै

सत्यलोकनारद चले करनराम गुरा गान ॥ १४५

हरगारा सुनिहि जान प्रथदेवी  
 अति समीत नारद पहं आये ॥  
 हरगारा हमन विप्रसुनिरामा  
 आप अनुग्रह करह कपाला  
 निश्चर जाय होउ तुम दीऊ  
 भुजवल विश्वजिनवतुसजाहं  
 समर मरगा हरि हाथ तुम्हारा  
 चले युगल मनि पद सिर नाई

विगत मोह मन हर्ष विशेषी  
 गहिपद आरत वचन सुनाये ॥  
 बड़अपराधकीन्ह फल पाया  
 बोले नारद दीन दयाला ॥  
 वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥  
 धरिहहिं विष्णु सतुजतनुतहिआ  
 होइहह मुक्तन पुनि संसारा ॥  
 भये निशाचर कालहिं पाई ॥

दीहा एक कल्प होइहेतु प्रसु लोन्ह मनुज अवतार ॥ ४

सर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भूभार ॥ ४ ॥ १४६

इहि विधि जन्मकर्म हरिकेरे  
 कल्प कल्प प्रति प्रभुश्रवतरही  
 तदतव कथा सुनीशन गाई ॥  
 विविध प्रसंगअनूप वखाने  
 हरिअनंत हरि कथा अंतता  
 रामचन्द्र के चरित सुहाये ॥ ४  
 यह प्रसंग मैं कहा भवानी ॥  
 प्रभु कौतुकी प्रगातहितकारी

सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे ॥  
 चारु चरित नानाविधिकरही ॥  
 पुरम पुनीत विचित सुहाई ॥  
 कहहिं न सुनि आचरजसयाने  
 कहहिं सुनिहिं बह विधि धुतिसंत  
 कल्प कोटि लगी जांहीन राये  
 हरि माया मोहहिं सुनि जानी  
 सेवत सुलभ सकल डरवहारी

सारवा सुरनर माने काउ नाह जोहि न मोह माया प्रवल

ब्रह्मविचार मनमाहि भजहि मत्समाया पतिहि १५

अपर हनुमुनुशील कुमारी ॥  
 जोहे काज अज अगुरा अनूपा  
 जो प्रभु विपिन फिरत तुम देख  
 जामु चरित अवलोकि भवानी ॥  
 अजह न छाया मितत तुम्हारी  
 लीला कीन्ह जो तहि अवतारा  
 भर हृदय मुनि शंकरवानी ॥  
 लगे बहारी वरनै वषकेतू ॥

कहा विचित्र कथा विस्तारा ॥  
 ब्रह्म भये कोशल सुर मूपा ॥  
 बंधु समेत किये सुनि मेया ॥  
 सती शरीर रहिउ वारावा ॥  
 तासु चरित मुनु भ्रम रुजहारी ॥  
 सो सब कहिहो मतिअनुसारा  
 सकुचिस प्रेम उमा मुमकानी  
 सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

होहा सो मै तुम मन कहौ सब सुनु सुनीश मनलाइ  
 राम कथा कलिमल हररा मंगल करनि सुहाइ १४०

ख्याय भू मनु अरु सतरूपा ॥  
 दम्पति धरम आचररा नीका  
 त्वपउत्तान पाद सुत तासू ॥  
 लघु सुत नाम प्रियावत ताही  
 देदहती पुनि तासु कुमारी ॥  
 आदि देव प्रभु दीनदयाला  
 सारव्य शास्त्र जिन प्रगटवषाना  
 तेहि मनु राज कीन्ह बहकाला

जिनते भइ नर स्तष्टिअनूपा ॥  
 अजह गाये भुति जिनकी लीका  
 भव हरि भक्ति भये सुत जासू ॥  
 वेद पुरान प्रशंसत जाही ॥४॥  
 जो सुनि कर्दम की प्रिय नारी  
 जठर जरेउ जेहि कपिल कपाला  
 तत्व विचार निपुरा भगवाना  
 प्रभु प्रायसु बह विधि प्रतिपा

सो० होइन विषय विराग भवन बसन भा चौथयान  
 हृदय बहत दुखलाग जन्म गयेउ हरि भक्ति बिन १६

बाबस राज सुतहि तव दीन्हा  
 तीरथ बरनै सिध विख्याता  
 बसहि जहो मुनि सिद्ध समाजा  
 पंथ जान सीहहि मतिधीरा ॥

नारि समेत गवन वन कीन्हा ॥  
 अति पुनीत साधक सिरदाता ॥  
 तह हिय हरषि चले मनु राजा ॥  
 ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥

पहुंचे जाइ धेनु सक्ति तीरा ॥  
 आये मिलन सिद्ध मुनिजानी  
 जहं जहं तीरथ रहे सुहाये ॥  
 कश शरीर मुनि पट परिधाना

हरषि नहाने निर्मल तीरा  
 धर्मधुरंधर त्वप चरषि जानी ॥  
 मुनिन सकल सादर करवाये  
 संतसभानित सुनहि पुराना ॥

दोहा द्वादश अक्षर मंत्र वर जपहि सहित अनुरागा ॥  
 वासुदेव पद एक रुह दम्पति मन अतिलागा १४६

करहि अहार शाक फल कल्दा  
 पुनिहरी हेतु करन तपलागे  
 उर अमिलाष निरंतर होइ  
 अगुणा अरवण्ड अनन अनादी  
 नैति नैति जेहि चेट प्रिजु पा ॥  
 शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना  
 ऐसे प्रभु सेवक वस अह ही ॥  
 जौ यह वचन सत्य अति भाषा

सुनिरहि ब्रह्म साञ्चि दा नदा  
 बारि अहार फूल फल त्यागे  
 देखिय नयन परम प्रभु सोई  
 जेहि चिंतहि परमारथ वादी ॥  
 चिदा नंद निरुपाधि अनूपा ॥  
 उपजहि जासु अंस ते जाना ॥  
 भक्ति हेतु लीला तनु गह ही ॥  
 तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

दोहा इहिविधि वीते वर्ष षट सहस वारि आहार ॥  
 सम्वत सप्त सहस पुनि रहे समीर आधार ॥ १४७

वरष सहस दश त्याग उ साऊ  
 विधि हरिहर तप देख अपा  
 मांगरु वर बहु भांति लुभाये  
 अस्थि मात्र होइ रहा शरीरा  
 प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी  
 मांगु मांगु वर भई नभवानी  
 मृतक जिआवनि गिरा सुहाई  
 हृय प्रुय नन भयेउ सुहाये ॥

वादे रहे एक पद दाऊ ॥ ५ ॥  
 मनु समीप अत्रिये बहु वारा ॥  
 परमधीर नहिं चलहिं चलाये  
 तदपि मनागपि नहिं मनपीरा  
 गति अनन्य तापस त्वपराणी ॥  
 परम गंभीर कपास्त सानी ॥  
 श्रवरा रंध होइ उर जव आई ॥  
 मानह अविहिं भवनते आयै ॥

दोहा श्रवरा सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुलित गान

बोले मनु कर दंडवत प्रेम न हृदय समात ॥ १५०

मनु सेवक सुरतरु सुरधनु ॥  
सेवत सुलभ सकल सुखदायक  
जो अनाथ हित हम परनेह ॥  
जो स्वरूप वंश शिव मत माहीं ॥  
जो भुसुरिड मनमान सहसा ॥  
देखा है हमसो रूप भरिलोचन ॥  
दंपति वचन प्रेम प्रिय लागे ॥  
भक्ति बहल प्रभु कृपानिघोना ॥

विधि हरिहर वंदित पद रनु ॥  
परात पाल सचराचर नायक  
तो प्रसन्न होइ यह वर दह ॥  
जोहि कारणा मुनियत न करोही  
अगुरासगुरा जोहि निराम प्रशर  
कृपा करहु प्ररा तोरति मोचन  
मदल विनीत प्रेम रस पागे  
विश्रव वास प्रगटे भरावाना ॥

दोहा नील सरोरुह नीलसासो नीर धीर धर श्याम  
लाजहि तनु शोभा निरखि कोटि कोटि शतकाम १५१

धारद मयक बदन छवि सीवा ॥  
अधर अरुणा रद सुन्दर नासा ॥  
नव अंबुज अंबक छवि नीकी ॥  
भृकुटि मनोज चाप छवि हारी ॥  
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा  
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला ॥  
केहरि कंधर चारु जनेऊ ॥ ॥  
कीर कर सरिस भुभग भुज दंडा

चारु कपोल चिबुक दर ग्रीषा  
विधु कर निंवार विनिंदक हाहा  
चितवनिल ललित भावती जीकी  
तिलकललाट पटल दुति कारी  
कुटिल केश जनु मधुप समाजा  
पदकि अहार भूषणा सरिजाल  
वाहु विमूषणा सुन्दर ते ऊ  
कोटि निबंध कर सर को दंडा

दोहा तड़ित विनिंदक पीत पट उदर रेख वर तीनि ॥  
नाभिमनोहर लेविजनु मुनिजप भवर छवि छीन १५२

पद राजीव वरनि नहिं जाही ॥  
वासभाग शोभित अनुकूला  
जामु अंश उपजहिं गुरागवानी ॥  
भृकुटि विलास जामु जग होई

मुनि मत्त मधुप वसहिं जोहि माहि  
आदि शक्ति छवि निधि जग मूल  
अगारिात उभा रसा ब्रह्मानी ॥  
रामवास दिशि सीता सोई ॥

इवि समुन्द्र हरि रूप विलोकी  
 चितवहिं सादर रूप अनूया  
 हर्ष विवस तनु दशाभुतानि  
 सिर परजे प्रभु निज कर कजा

इकटक रहे नवत पर रेकी  
 रघिन मानहिं मजु शत रूप्या ॥  
 परे दरड इव गहिं अद पानी  
 नुरंत उठाये करुणा पुजा ॥

बोहा बोल कपानिधान पुति अति प्रसन्न मोहि जानि  
 मागह बरजोड भावसन महा दानि अनुमानि ॥ १५३

तुनि प्रभु वचन जोरियुगपानी  
 नाथ देखि पदकमल तुम्हारे  
 एकलालसा बाडे मतमाही  
 तुमहिं देखि अति सुगमगुसाई  
 पथा दरिद्र विविध तरु जाई  
 तसु प्रभाव न जानि सोई ॥ ७  
 सो तुम ज्ञात ह्यनतर यासी ॥  
 सकाचि विहाइ माग न्यपमाही

धर धारज बालि रूदवानो ॥  
 अत्र पूजे सब काम हमारे ॥  
 सुगम अगम कहिं जात सो नहिं  
 अगम लागु मोहि निज कप नाई  
 वह सस्यति मागत सकुचाई ॥  
 तथा हृदय मम संशय होई ॥  
 पुर वह मोर मनोरथ स्वासी ॥  
 मोर नहिं अदय कछु तोही ॥

दाहा दानि शिरोमार्गो कथानिध नाथ कहा सतभाव  
 चाहौ तुमहिं मनानसुत प्रभुसन कवन दगाव ॥ १५४

देखि प्रीति मुनि वचन अमील  
 पाप सरिस खोजो कह जाई  
 मतरूपहिं विलोकि करजोरे  
 जो वरनाथ चतर न्यपमारा ॥  
 तभु परन्तु सुठि होति विवाडै ॥  
 तुम ब्रह्मादि जनक जवाव्यासी  
 अम समुक्त मन संशय होई  
 जे निज भक्त नाथ तव अहहो

ऐव मस्तु करुणा निधि बाल ॥  
 न्यप तव तनय होव मै आई ॥  
 देवि मागु वरजो रुचि तोरे ॥ ग  
 साइ कपालु मोहि अति प्रियला  
 पदपि नक्ति हित तुमहिं सुहाई  
 ब्रह्म सकल उर अंतर यासी ॥ ६  
 कहा जो प्रभु इसारा प्रीति पति  
 जो मुख पावहिं तो गाति लहर

दो० मोइ सरव सोइ गति माइ भगति मोइ तेज करुणासनह

सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करि देह १५५

सुनि सुदुगूढ रुचिर वर रचना  
जोकहु रुचितुम्हरे मन माही  
मातु विवेक अलौकिक तोरी  
वेदि चरणा मनु कहे उबहोरी  
सुत विषय कतव पद रत होऊ  
सोरो विनु फोरो जिमि जल विनु मीना नाम  
अस वर सांगि चरणा गहिर हेऊ  
अव तुम सम अतु सास न मानी

कृपा सिंधु बाल सु उ वचना ॥  
मै सो दीन्ह सब संशय नाही ॥  
क बहू न मिटाहि अनुग्रह मोरी ॥  
अवर एक विनती प्रभु मोरी ॥  
मोहि वर मूढ कहै किल कोऊ  
नाम जीवन तिनि तुमहि अधीन ॥  
एव मस्तु करुणा निधि केहेऊ ॥  
वसहु जाइ सरपति जधानी ॥

सोरठा तह कारि भोगि विलास तात गये कहु काल पुनि  
होइ हहु अवधि भुआल तव मै होव तुम्हार सुत १८

इक्ष्वा मय नर भेष सवार ॥ ५  
अशान सहित देह धर ताता ॥  
जे सुनि सादर नर वड भागी ॥  
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया  
पुर उव मै अभिलाष तुम्हारा  
पुनि अस्सकहि कृपा निधाना  
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला  
समय पाइ तनु तजि अनयासा

होइ हो प्रगट निकत तुम्हारे ॥  
करि हो अरि भक्त सुख दाता  
भव तरि रहिं समता मद त्यागी  
सोउ अवतरिं मीर यह माया  
सत्य सत्य प्रग सत्य हे मारा ॥  
अतर्था न भये भगवाना ॥  
तेहि आश्रमनि वसे कहु काला  
जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥

दोहा इह इतिहास पुनीत अति उमाहि कहउ व्यकेतु  
भरदाज सुनि अपर सुनि राम जन्म कर हेतु ॥ १५६

सुनु सुनि कथा पुनीत पुरानी  
विश्व विदित इक के कय देसू  
धर्म धुर धर नीनि निधाना  
तेहि के भये युगल सुत वीरा ॥

जोगिरजा प्रति शंभु वरवानी ॥  
सत्य केतु तह वसे नरेसू ॥  
तेज प्रताप शील वस्तवाना ॥  
तब गुरा धाम महासा धीरा ॥

रजधानीजेठे सुतअहो ॥ ५ ॥  
 अपरसुतोहं अरि मदेन नामा  
 भाडुहि भाडु परस्पर प्रीती ॥  
 जेठे सुतहिं राज न्यप दीन्हा ॥

नाम प्रताप भानुअम कह हो ॥  
 भुजबल अतुलअचल संग्रामा  
 सकल दोष कुल वज्जित रीती  
 हरि हित आपु गवन वन कीन्हा

दोहा जब प्रताप रवि भयेउ न्यप फिरी दोहाई देश ॥ ५  
 प्रजापाल अतिवेद विधि कतहुं नहीअच लेश १५७

न्यपहितकारक सचिवसुजाना  
 सचिवसयानवन्धुवल वीरा ॥  
 सेनसंग चतुरंग अपारा ॥ ५  
 सेन विलोकि राउ हरषाना ॥  
 विजयहेतुकटकाडु बनाई ॥  
 जहंतहं परीअनेक लराई ॥ ५  
 सप्रदीपभुजवलवसकीन्हा ॥  
 सकलअबनिमण्डलतेहिकाला

नामधर्म रुचि मुक्क समानी ॥  
 आपु प्रताप पुंज रराधीरा ॥  
 अमितसुभटसब समारजुफारा  
 अरुवजै गहगहे निशाना ॥  
 मदिन साधि न्यप चलेउ बजाई  
 जोतेसकल भूपवरीआई ॥  
 लिलैदराउ छाडि न्यपकीन्हा ॥  
 एक प्रतापभानु महिषाना ॥

दोहा स्ववस विश्व करि बाहुवल निजपुरकीन्हा प्रवेश  
 अर्थधर्म कामादि सब सेवहिं सबै नरेश ॥ ५ १५८

भूपप्रताप भानुवल याई ॥ ५  
 सबदरव वज्जित प्रजासुरवारी  
 सचिवधर्मरुचिहरिपद प्रीती  
 गुरुसुरसन्न पितर महिदेवा ॥  
 भूपधर्मजेवेद वरवाने ॥ ५ ॥  
 दिनप्रति देइ विविधविधदाना  
 नानावापी कृप तडागा ५ ॥  
 विप्रभवन सुरभवनसुहायि ॥

कामधेनु मइभूमिसुहाई ॥  
 धर्मशील सुन्दर नरनारी ॥  
 न्यपहितहेतुसिरवावन भीती ॥  
 करै सदा न्यप सबकी सेवा ॥ ५  
 सकल करै सादरसुखमाने ॥  
 सुने शास्त्रवरवेद पुराना ॥ ५ ॥  
 सुमनवाटिको सुन्दर बाशा ५ ॥  
 सबतीरथनिविचित्र वनाये ॥

दोहा जहं लगिकहे पुरारा धुत एक एक सब याग ॥



वार सहस्र सहस्र न्यप किये सहित अनुराग १५६

हृदय न कछु फल अनुसंधाना  
करे जो धर्मकर्म मनवानी ॥ ५  
चदि वरवाजि वार्यकराजा ॥  
विंध्याचल गंभीर वन गयेऊ ॥  
फिरत विपिन न्यप दीख वराह ॥  
बड़ दिधुनहि समात मुखसाही  
काल कराल दसन छवि गाई  
घुरुघुरात हय आरव पाये ॥ ५५

भूपविवेकी परम सुजाना ५ ॥  
वानुदेव अर्पित न्यप जानी ॥ ५  
मरायाकर सब साजिसमाजा ॥  
मरापुनीत बहु मारत भयेऊ ॥  
जनुवन डरेउ शशिहिं यस्मिराह ॥  
मनहें क्रीधवस उगलत नाही ॥  
तनु विशाल पीवर अधिकाई ॥  
चकित विलोकन कान उवाये ॥

दोहा नीलसहाधराशस्वरसम देख विशाल वराह ॥

चपरिचलेउ हय सुष्टिक न्यप हांकिनहोइ निवाह १६०

आवत देखि अधिक रव वाजी ॥  
तुरत कीन्ह न्यप सरसंधाना  
तकितकि तीरमहीश चलावा  
प्रगटत डुरित जाय मरामागा  
गयेउ दूरि घन गहन वराह ॥ ५५  
अतिअकेल वन त्रिपुलकैलेमू  
कोल विलोक भूपवडधीरा ॥  
अगम देखि न्यप अति पछिताई

चलावराह मरुत गाते भाजी ॥  
संहिमिल गयेउ विलोकत वाना  
कारिछल सुअर शरीर बचावक  
रिसवस भूपचलेउ संगलागा ॥  
जहनाही गजवाजि निवाह ॥  
तदपिन मरामरा तजे नरेमू ॥  
भागिपैठि गिरगुहा गंभीरा ॥  
फिरेउ महावन परेउ भुलाई ॥ ५५

दोहा खेदखिन्नत्यथित कथित राजावाजिसमेत ॥ ५५

बोजत ब्याकुल सरित सरजल विनुभयेउ अचेत १६१

फिरत विपिन आश्रमइक देखा  
जासुदेश न्यपलीन्ह छुड़ाई ॥  
समय प्रताप भानुकरजानी ॥  
गयेउ नग्रह मन वहत गलानी

तहबस न्यपाते कपट मुन नेषा ॥  
समरसेनतजि गयेउ पराई ॥  
आपन अति असमय अनुमाने ॥  
मिला ताराजहिं न्यप अभिमानी ॥

रिस उर मारि रंक जिमि राजा ॥  
 तासु समीप गवन न्यपकी न्हा  
 राउ त्रपित नहिं सो पहि चाना  
 उत्तरि तुरवाते कीन्ह प्रणामा ॥

विपिन वसे तापस के साजा ॥  
 यह प्रतापर विते इ तब चीन्हा ॥  
 देखि सुभेष महा मुनि जाना ॥  
 परम चतुर न कहै उ विज नामा ॥

दोहा भूपति त्रपित विलोकि ते इ सरवर दीन्ह दिखाइ  
 मज्जत पान समेत हय कीन्ह न्यपति हर पाइ ॥५ १६२

गाभ्रम सकल सुखी न्यप भयऊ  
 आसन दीन्ह अस्तर विजानी ॥  
 को तुम कसवल फिरइ अकेले  
 चक्रावर्त के लक्षणा तोरे ॥५  
 नाम प्रताप भानु अवनती सा ॥  
 फिरत अहेरहिं परे उ भुलाई ॥  
 हम कहइ दुर्लभ दरश तुम्हारा ॥  
 कह मुनि तात भये उ अधियारी

निज आभ्रम तापस ले गयऊ  
 पुनि तापस बोला मूढ बानी ॥  
 सुन्दर युवा जाव परहेले ॥५ ॥  
 देखत दया लागि अति मोरे ॥  
 तासु संचिव मै सुनइ सुनीसा ॥  
 बडे भाग्य देखे उ पद आई ॥  
 जानत हौं कछु भल हौं नि हारा ॥  
 योजन सतर नगर तुम्हारा ॥

दोहा निशा घोर रांभीर वन पथन सूऊ सुजान ॥५ ॥५  
 बसइ आज अस जानि तुम जाये उ होत विहान ॥ १६३  
 तुलसी जसि भवित त्वता तैसे मिले सहाय ॥ ११  
 आपुन आवे ताहि पै कि ताहित हो ले जाय ॥ ११ १६४

भलेहि नाथ आय सु धरि शीशा  
 न्यप बहु भाति प्रशंसै उ ताहि ॥  
 पुनि बोले उ मूढ गिरा सुहाई  
 मोहि सुनीश सुत सेवक जानी  
 तेहि न जान न्यपहिं सो जाना ॥  
 वैरी पुनि सत्री पुनि राजा ॥५  
 समुफिराज सुख दुखित अराती

वांछि नरग नरु बैठ महीशा  
 चरण बंदि निज भाग्य सराही ॥  
 जानि पिता प्रभु करी दिठाई ॥  
 नाथ नाम निज कहइ वगवाती ॥  
 भूपते हृदय सो कपट मधाना ॥  
 छल वल कीन्ह बहौं न ज कजा  
 अवा चनल इव मुलगे बानी ॥

सगल वचन न्यपके सुनिकाना । वैरसंभारिहृदय हरपाना ॥५

दोहा कपटवोरिवानीसुदल बालेउ युक्ति समेत ॥५

नाम हमार भिरवारिअब निर्धन रहित निकेत ॥ १६५

कह न्यपजे विज्ञाननिधाना ॥

सदाअपनपौरहहिं डराये ॥ ॥

तेहिते कहहिं सज्ज श्रुतिदेरे ॥

तुमसमअधनभिरवारिअबगेहा ॥

धीसिसोसि तव चरानमाकी ॥

सहज प्रीति भूपति कीदेखी ॥

सब प्रकार राजहिंअपनाई ॥

सनसतिभावकहौ महियाला

तुमसारिखे बालितअभिमाना

सबविधिकुशलकुभेषवनाये

परमअकिंचनप्रियहरिकेरे ॥

होतविराचि शिवहिंसदेहा ॥

नोपरकाकासिअबस्वामी ॥

आपविषे विश्वासविशेषी ॥

बालेउअधिकसनेहजनाई

इहांवसतबीते बहुकाला

दोहा अबलणिमोहिनमिलेउकोउसनजनायोकाह ॥

लोकमान्यताअनलसमकरतपकाजनराह ॥ ॥ १६६

सोरवा तुलसीदेखिसुवेषमूलहिंसूदनचतुरजर ॥५॥

सुन्दरकेकोहिंयेरिखवचनसुधासमअसनअहि ॥ ॥ १६

तातेगुप्त रहौ जगमाही ॥५॥

प्रभुजानतसबविनयजनाये ॥

तुमसुचिसुमतिपरमप्रियमोरे ॥

अबजोतातेडरावो तोही ॥५॥

जिमिजिमि तापसकथेइउदासा

देखास्ववसकर्ममनवानी ॥

नामहमार एकतनुभाई ॥ ॥

कहहनामकरअथवखानी ॥

दोहा आदिस्त्रियपजीजवहितवउपपतिभाईमोरे ॥

नाम एकतनुहेततेहिदेहनधरीजहोरि ॥५॥ १६७

हारेतजिकिसपिप्रयोजननाहो ॥

कहहकदनसिधिलोकारिजाये

प्रीतिप्रतीतिमोहिपरतोर ॥ ॥

दारुणादोषबदेअतिमोही ॥

तिमिअन्यपहिहोइविश्वासा

तवचोलातापसवकध्यानी ॥

सुनिन्यपबालेउपुनिसिखाई

मोहिसेवकअतिआपनजानी

जनिशुभ्रज कह मनमाही ॥  
 तपबल जवस्तजे विधाता ॥ ५ ॥  
 तपबल शंभु करहि संहारा ॥  
 भयेउ न्यपहिं सुनिअतिअनुरागा  
 कर्म धर्म इतिहास अनेका ॥  
 उद्धव पालन प्रलय कहानी  
 मुनिमहीश तापस वस भयऊ  
 कह तापस तप जानौ तोही ॥

सुततपते दुर्लभ कहु नाही ॥  
 तपबल कृष्णभये परिजाता  
 तपतेअगमन कहु संसारा ॥  
 कथापुरातन केहे सो लागी ॥  
 करे निरूपन विरति विवेका ॥  
 कहेसिअमितशाचरजवरवानी  
 आपन नाम कहन तवलयेऊ  
 कीन्हैउ कपद लागु भलमोरी

देहा सुनिमहीशअतिनीतिजहंतहनामनकहहिंन्यप  
 मोहि तोहि परअति प्रीति परस चतुरता निरखितव २०

नाम तुम्हारे प्रताप दिनेशा ॥  
 गुरु प्रसाद सब जानिय राजा ॥ ५ ॥  
 दीख तात तव महज सुधाई ॥  
 उपजि परी ममता मत्तमोरे ॥ ५ ॥  
 अब प्रसन्न मैं संशय नाही ॥ ५ ॥  
 मुनि सुवचन भूपति हरषाना ॥  
 कपसिन्धु मुनि दर्शन तोरे ॥ ५ ॥  
 प्रभुहिं पथापे प्रसन्न विलोकी

सत्य केतु नव पिता नरेशा  
 कहियनअनहिजानिअकाजा  
 प्रीति प्रतीति नीति निपुराणई  
 कहेउ कथानिजवृजेतोर  
 मांगु जो भय भाव मनमाही  
 गहिपद विनय कीन्ह विधिनान  
 चारिपदारथ करतल मोरे  
 मांगिअगम वर होउअशोकी

देहा जरा सराउरव रहित तनु समरन जीति कोउ ॥ ५ ॥  
 एक छत्र रिपु हीन मदि राज कल्प शत होउ ॥ ५ ॥ १६८

कहतापस न्यपगमहि होऊ ॥  
 कालह तव पद नाइहि शीशा  
 तपबल विप्र सदा वप्रियारा ॥ ५ ॥  
 तो विप्रन बस करह नरेशा ॥ ५ ॥  
 चलन ब्रह्म कुल मै वीरआई ॥ ५ ॥

कारण एक कठिन मुनु सोऊ ॥  
 एक विप्र कुल छाडि महीशा ॥  
 तिनके कापन कोउ राववारा ॥  
 नौ तव वस विधि विशु महेशा  
 सत्य कहौ दोउ भुजा उठाई ॥

विप्र आपत्तिनु सुन महि पाला ॥  
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू ॥  
तव प्रसाद प्रभु कृपा निधाना ॥

तोरनाशनहिं कवहुन काला  
नाथ न होइ मोर अब नासू ॥ ९९  
मोकहं सर्व काल कल्याणा ॥

दोहा एवमस्तु कहि कपट सुनि बोला कुटिल वहोरि ॥ ॥

मिलव हमार भुलावजनि कहहु मोर तोरवेरि ॥ ९६६

ताते मैं तोहिं वरजौ राजा ॥ १॥  
कहे श्रवणा यह परत कहाणी ॥  
यह प्रगटे अथवा द्विज श्रापा ॥  
आन उपाय निधन तव नाही  
सत्य नाथ पदगहि न्यप भाषा ॥  
राखै गुरुजो कोपविधाता ॥ ॥  
जौन चलव हम कहे तुम्हारे ॥  
एकहि डर डरपत मन सोरा ॥ ९९॥

कहे कथा तव परम अकाजा ॥  
नासतुम्हार सत्य मसवानी ॥  
नास तोर सुनु भानु प्रताया ॥  
जौ द्वारे हर कोपहिं मन माही  
द्विज गुरु कोप कहहु को राखा  
गुरु विरोध नहि कोउ जगत्रात  
होइ नाशनहिं शोचहमारि ॥ ॥  
प्रभु सहि देव श्राप अति घोरा ॥

दोहा होहिं विप्र वस कवत्र विधि कहहु कृपा कारि सोउ ॥

तुम तजि दीनदथाल विधि कहु कृपा कारि सोउ ॥ ९७०

तुनु न्यप विविधयतन जगमाही  
अहे एक अति सुराम उपाई ॥ ९९  
मम आधीन युक्ति न्यप सोई ॥  
आजु लगे अरुजवतें भयकं ॥  
जौन जाव तव होइ अकाजू ॥  
सुनि महीप बोले रुडवानी ॥  
वडे मनेह लघुन परकह हीं ॥  
जलधि अगीध मोलि बहु फेन

कथ साधि पुनि होहिं कि नाहि  
तहों परंतु एक कठि नाई ॥  
मोर जाव तव नगर न होई ॥  
काहुके ग्रह ग्राम न गयऊं  
वना अड अस भंजस आजू ॥  
नाथ मिराम अस नीति वरवार्ति  
गिरि निज सिर न सदात्ता धरहि  
संतत धरनि धरत सिर रेनु ॥ ॥

दोहा अस कहि गई नरेश पद स्वामी होइ कृपालु ॥

मोहि लागि खरु सहिय प्रभु सज्जन दीन दयालु ॥ ९७९

जानगी न्यपहिं आपन आधीमा  
सत्य कहीं भूपति सुन तोहीं ॥  
अवसिकाज मैं करिही तोरा ॥  
योगयुक्ति तपसत्र प्रभाऊ ॥ ११  
जो नरेश मैं करेउं रसोई ॥  
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई  
पुनि तिनके ग्रह जेवै जोऊ ॥  
जाइ उपाय रचइ न्यपयेह ॥

बोला तापस कपट प्रवीना ॥  
जगमहं नहिं दुर्लभ कछु मोही  
सनक्रम वचन भक्ति तू मोरा ॥  
फले तवहिं जव करिय डराऊ ॥  
तुम परसइ मोहि जानम कोई  
सोई सोई तव आयसुअतु सरई  
तव वस होय भूप सुन सोऊ ॥  
संवत भीर सकल्य करेऊ ॥ ११ ॥

दोहा नितनूतन द्विज सहस शत वरेउ सोहित परिवार  
मैं तुम्हरे सकल्य लागि दिनहिं करव जेव नार ११२

इहि विधि भूप कव अति थोरे  
करिहिं विप्र होम मख सेवा  
और एक तोहि कहीं लखवाऊं  
तुम्हरे उपरोहित कहं गया ॥  
तप बल तोहि करि आपु समाना  
मैं धरितालु भेष सुनुराजा ॥  
गै निशि बहत शयन अवकीजे  
मैं तप बल तोहि तुरंग समेता

होइ हिं सकल विप्रवस तोरे ॥  
तेहि प्रसंग सहजहिं वस देवा ॥  
मैं यहि भेष न आउव काऊ ॥  
हरिआनव मैं करि निज माया ॥  
रविहोइ हां बरष परमाना ॥  
सब विधि तोर संवारव काजा ॥  
सोहि तोहि भूप भेट दिन तीजे ॥  
पहचैही सोवतहि निकेता ॥ ॥

दोहा मैं आउव सोइ भेष धरि यहि चानेइ तव मोहि ॥ ॥

जव सकात बुलाइ सब कथा सुनाऊ तोहिं ॥ ॥ ११३

शयन कोल न्यप आयसु मानी  
अमित भूप निद्रा अति आइ  
काल कतु निशि चरतह आवा  
परम मित्र तापस न्यप केरा ॥  
तेहि केशत सुत अरु दशभाइ

आसन जाइ बैठ कल जानी ॥  
सो किमि सोव सोच अधि काई  
तेहि भूकर हीइ न्यपहिं भुलावा  
जाने सो अति कपट घनरा ॥ ११  
खल आठ अजय देव दख दाई ॥

प्रथमह भूप सत्तर सब सारे ॥  
नेहि खल पावल वैर संभारा ॥  
जेहि रिपुक्षय सोइ रचेसिउपाऊ ॥

विप्र सन्न सुर देरिव डरवारे ॥  
तापस न्यप मिलि मंड्र विचारा ॥  
भावी वस न जान कछु राज ॥

दोहा रिपु तेजसी अकेल अपिलघु करि गानि यन ताह  
अजहं देन डखरविशशिहिं शिर अत्रव शेषित राह १७४

तापस न्यपनिज सरविहनिहारी  
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई  
अब साधउ रिपु सुनहु नरेशा ॥  
परिहरि शोच रहहु तुम सोई ॥  
कुलसमेत रिपु मूल बहाई ॥  
नापस न्यपहि बडत परितोषी  
भानु प्रतापहि वाजि समेता ॥  
मर्याहि नारि यह शयन कराई ॥

हरषि मिलेउउठिभयेउसुखारी  
यातुधान बोला सुखपाई ॥  
जौतुमकीन्ह मारउपदेशा ॥  
विनु औषधहिं व्याधि विधिखेह  
चौथेदिवस मिलव मै आई ॥  
चला महा कपटी अति रोषी ॥  
पहुंचायसि सोवतहि निकेता  
हयग्रह बांधेसि वाजि वनाई

दोहा राजाके उपरोहितहिं हरि लै गयउ बहीरि ॥४॥  
लै रारवेसि गिरि खोह साह माया करि मतिभोरि १७५

आपु विरंचि उपरोहितरूपा ॥५॥  
जागेउ न्यपअन भयेउ बिहाना  
सुन महिमा मन महंअनुमानी  
कानन गयेउ वाजि चढि तेही ॥  
गय याम सुग भूपति आवा ॥  
उपरोहितहिं दीख जव राजा ॥  
युगसम न्यपहिं गयेदिन तीनि  
समय जानि उपरोहितआवा ॥

पराजाबु तेहि सेज अन्तूपा ॥५॥  
देषि भवन अति अचरज माना  
उठे गवाहि जेहि जानन रानी ॥  
पुरनरनारि नजानेउकेही ॥  
घर घरउत्सव वाजु वंधावा ॥  
चकित विलोकि सुमिर सोइकाज  
कपटी मुनि पद हरि मति लीनी  
न्यपहि सतो सब कहिससुजाव

दोहा न्यप हर्षे पहिचानि गुरु भ्रम वस रहा न चेत ॥  
वै नुस्त शत सहसवर विप्र कुटम्ब समेत ॥ १७६

उपरोहित जेवनार वनाई ॥ ५५  
 माया मय तेहि कीन्ह रसोई  
 विविध मरणकर आभिषोषा  
 रोजनकहं सब विप्र बुलाये ॥  
 परसनलागजबहिं सहिपाला  
 विप्र वृंद उठिउठि ग्रहजाई ॥  
 भयेउ रसोई भूसुर सासू ॥ ५६  
 भूप विकल मति मोह भुलानी

करस चारि विधिजस श्रुतिगाई  
 व्यजन वह रानिसकै न कोई  
 तेहि महं विप्र मास खल सांधी  
 पद परवार सादर वैठाये ॥  
 भईअकासवानी तेहि काला  
 हैवडि हानिअन्नजनिखाह  
 सब द्विज उठे मानि विश्वास  
 भावीवसन आव मुखवानी ॥ ॥

दोहा बोले विप्र सकोय तब नहिं कछु कान्ह विचार  
 जाइ निशाचर होइ न्यपसूद सहित परिवार ॥ १७७

छत्रबंधु ते विप्र बुलाई ॥ ५  
 ईश्वर राखा धर्म हमारा ॥ ५  
 संवत मध्य नाश तब होऊ  
 न्यपसुनि श्राप विकल अतित्रास  
 विप्रन्ह श्राप विचारन्ह दीन्हा  
 चकित विप्र सब सुनि नभवानी  
 तहनअसन नहिं विप्र सुआरा  
 सब प्रसंग महि सरन सुनाई

घालेलिये सहित समुदाई ॥  
 जैहसिते समेत परिवारा ॥  
 जलदाता नरहिकुलकोरु  
 भईवहरी वरगिरा अकासा ॥  
 नहिअपराध भूपकछु कीन्हु ॥  
 भूप गये जहं भोजन खानी ॥ ॥  
 फिरउ राउ मन शोचअपारा ॥  
 त्रसित परेउअवनी अकुलाई

दोहा भूपति भावी मिटे नहिं यदपि न दूषन तोर ॥  
 कियेअन्यथा होइ नहिं विप्र श्राप अति थोर ॥ १७८

असकहिं सब महिदेव सिधाये  
 शोचहिं दुषा ॥ देकहिं देही ॥  
 उपरोहितहिं भवन पढ़ं चाई ॥  
 तेहि खलजहं तहंपत्रपठाये ॥  
 धरिन्हि नगर निशान बजाई

समाचार पुरलोगन पाये ॥ ॥  
 विरचत हमकाक कियजेही ॥  
 असुरतापसहिं खवरिजनाई ॥  
 सजिरसेन भूपसब आये ॥ ५३ ॥  
 विविधिभांति नित होत लगई



जुजे सकल सुभटके करराी ॥  
सैत्यकतु कालकोईन बांचा  
रिपुहिं जीत न्यप नगर बसाई

बंधु समेत परेउ न्यप धरराी ॥  
विप्र प्राप किमि होइ असांचा ॥  
निज निज पुर गये जयजश पाई

दोहा भरद्वाज सुनु जाहि जब होत विधाता वाम ॥ ९९

धूरि मेरु सम जनक यम ताहि व्याल सम दाम ॥ १००

काल पाय सुनि सुनि सोइ सजा ॥  
दशशिर ताहि वीस भुज दण्डा ॥  
भूप अनुज अरि मदन नामा ॥ ॥ ॥  
सचिव जोरहा धर्म रुचि जासू ॥  
नाम विभीषणा जेहि जग जाना  
रहे जे सुत सेवक न्यप केरे ॥ ९९ ॥  
कामरूप खल जिन सञ्जनेका ॥  
रूपारहित हिंसक सब पापी ॥

भयेउ निशाचर सहित सनाजा  
रावणा नाम वीर वरि बरडा ॥ ॥ ॥  
भयेउ सो कुंभ करणा बल धामा  
भयेउ विमात्र बंधु लघु तासू ॥  
विष्णु भक्त विज्ञान निधाना  
भये निशाचर घोर घनेरे ॥ ९९ ॥  
कुटिल भयंकर विरात विवेका  
वरनिन जाय विप्र परितापी ॥

दोहा ॥ उपजे यदीपे पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ॥

तदीपे महीसुर श्राप बस भये सकल अघ रूप ॥ १००

कीन्ह विविधि तप दीन्ह उभाई  
गयेउ निकट तप देरिव विधाता  
कोर विनती पद गाहि दशशीशा  
हमकाहू कर मरहि न मारे ॥ ९९ ॥  
एवमस्तु तुम बड तप कीन्हा ॥  
पुनि प्रभु कुम्भ करणा पहंगयेउ  
जो यहरवल नित करव अहारा  
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ॥

परम उग्र सो वरनि न जाई ॥  
सांवाह वर प्रसन्न मै नाना ॥  
बोलेउ वचन सुनइ जगदीसा  
वानर मनुज जाति दुइ वारे ॥  
मै ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीन्हा  
तेहि पिलोकि मन विस्मय नयेउ  
होइहिं सब उजार संसारा ॥  
सांगेसि नींद मास षट केरी ॥

दोहा गयेउ विभीषणा पास तव कहा पुत्र वर सांगु ॥ ९९

तेहि सांगेउ भयबन्त पद कमल अमल अनुरागु ॥ १०१

नहिं देहं वर ब्रह्मसिधायि ॥  
 यतनया मंदोदरि नामा ॥  
 साइ मय दीन्ह रावराहि आनी  
 हर्षित भयेउ नारि भल पाई ॥  
 गिरिविकूट इक सिंधु मऊारी  
 साइ मय दानव बहुरि संवारा  
 भोगवती जस अहि बुल वासा ॥  
 तिनके अधिक रम्य अति वंका

हर्षित ते अपने गृह आयि ॥ ५ ॥  
 परस सुन्दरी नारि ललाभा ॥  
 भई सो यातु धान पति गली ॥  
 पुनि दोउ बधु विवाहसि जाई  
 विधि निर्मित डर्गम अति मारी  
 कनकरचित मरिा भवन अपारा  
 अमरावति जस शक्र निवासा  
 जग विस्थात नाम तेहि लका ॥

दोहा खाई सिंधु गंभीर अति चारु उदिशि फिरे आव  
 कनक कोट मरिाष चित दृढ वरनिन जाइ बनाष १८२  
 हारि प्रेरित जिहि कल्प जोइ जातु धानु पति होय  
 सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत वस सोय ॥ १८३

रहितहा निशचर भर भारे ॥ ५ ॥  
 अब तेह राहहि शक्र के घेरे ॥  
 दशमुख कवह रववरि असि पाई  
 देरि व विकट भर वडि कट काई  
 फिरे सब नगर दशानन देखा  
 मन्दर सहज अगोप अनुमानी  
 जोइ जस योरय बाटि गइ दीन्हे  
 एक बार कवेर पह धावा ॥ ५ ॥

ते सब सुरत समर सहार ॥  
 रक्षक कोटि यक्षपति करे ॥  
 सिन साजि गढ घेरे सि जाई ॥  
 यक्ष जीव लै गायउ पराई ॥  
 अयउ शीघ सुख भयउ विज्ञोना  
 कीन्ह नहा रावरा राजधानी ॥  
 सुखी भकल राजनीचर कीन्हे  
 पुथकयान जीत लै आव ॥

दोहा कौतुक ही केलाश पुनि लीन्हे सि जाइ उठाइ ॥  
 मनह होलि भरवाह बल बला अधिक सरवयाइ १८४

सुख संपति सुत सेन महाइ ॥  
 निन नूतन सब वाढत जाई ॥  
 अति बल कुम्भकरा अनुस्रता

जय प्रताप बल बुद्धि बडाई  
 जिमि प्रति लाम लोभ अघिकाइ  
 जोहि कहनहि प्रति भरजगजाता

कारि मद् पात सोव षट् मासा  
जो दिन प्रति अहार करु सोई  
समर धीर नहिं जाइ वरवाना  
वारिद नाद जेउ सुत तासू ॥  
जेहि न होइ रणा सम्मुख कोई

जागत होइ तिह पुर त्रासा ॥  
विश्व वेगि सब चौपट होई ॥ ॥  
तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना  
भटमहं प्रथम लीक जगजासू  
सुरपुरनि तहि परावन होई ॥

दोहा कुमुख अलंकन कुलिशरद धूम्र कंतु अतिकाय  
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥ १८४

कामरूप जानहिं सब माया  
दशमुख बैठ सभा इक बारा ॥  
सुत समूह जन परिजन नाती  
सेन विलोकि सहज अभिमानी  
सुनहु सकल रजनी चर यूथा  
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई  
तिनकर सररा एक विधि होई  
द्विज भोजन मय होम सराधा

सपनेहु जिनक धर्म न दाया  
देखि अमित आपन परिवारा  
जनै को पार निशाचर जाती ॥  
बोला बचन क्रोध मद सानी ॥  
हमरे बैरी विबुध बरुथा ॥ ॥  
देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥  
कहौं बुजाइ सुनहु अव सोई ॥  
सब कह जाइ करहु तुम साधा ॥

दोहा सुधा सीरा बल होन सुर सहजहिं मिलाइ ॥ १८५  
तब मारिहौं कि कंडि हौं भली भांति अपनाइ ॥ १८६

मघनाद कह पुनि हंकरावा  
जे सुर समर धीर बलवाना  
तिनहिं जीति रणा आनसि बाधी  
इहि विधि सबही आजा दीन्हा  
चलत दशाशन डोलत अबनी  
गवरा आवत सुनेउ सको हा ॥  
दिगपालनके लोक सिधाये ॥  
पुनिपुनि सिंहनाद करि भारी

दीन्ह सोख बल वेर बढ़ावा ॥  
जिनके लखि कौ अभिमाना ॥  
उठि सुत पितु अनुसासन साधी  
आपन चलेउ गदा कर लीन्हा  
गजते गर्भ भ्रवत सुर रवनी ॥ ॥  
देवन नकेउ मेरु गिरि खोहा ॥  
सुने सकल दशाशान्त आये ॥  
देइ देवनहिं शारि उचारी ॥

रसा मद मत फिरै जग थावा	प्रतिभट खोजत कतहंन पावा
यहांसे छपक है	
नारदमिले कहेसि सुस काई ॥ सुनत अनख नारदाहि न भावा ॥ सागर उतरि पार सो गयेऊ ॥ ॥ तिन सन कहा पतिन्ह पहं जाह तवमै तिनहिं जीति संगामा सुनत वचन एक जठर रिसानी राई दूरी धरि धोर भक भारा ॥	देव कहां सुनि देह दिरवाई ॥ स्वत हीप तिहि तुरत पवावा ॥ नारि खन्दतह देवत भयेऊ ॥ कहेउ कि आव निशाचरनाहू ॥ लै जैहौ तुम कह निज थामा ॥ धाइ चरगा राहि गरान उठानी ॥ जारीसि सिधु मध्य आते जारी ॥
होहा गयो पताल अचत है मर न विप्र प्रसाद ॥ सावधान उरि राज प्रमि हिये न हरष विवाद ॥ ॥	
जीनेसि नाग नगर सब भारी बामन रावरा आवत जाना खेलति रहे नगर शिशु नाना धाइ धरतिन पुर लै आये ॥ ॥ बीस बाहु दशकन्धर भाई ॥ रखिन बांधि रिक्तावहि भारी वामन हीन वरु त सकुचाना चला तांत निशाचर चाहा ॥	गयो बहुरि बलि लोक सुरारी ॥ किये देव ऋषि सन अपमाना निज बल तिनहिं दीन्ह भगवान नगर नारि नर देखन धाये ॥ विधि यह गदनि कहां की आई नाम न कहै सहै वरु मारी ॥ नव छुजाय दिय कृपा निधाना लज शक कछ नहि मन आहा ॥
होहा अति निर्लज्ज दयाहीन हिंसा पर अति प्रीति ॥ राम विमुख दशकन्ध शठ नाचर चाहति जीति ॥ १८८ भरदाज सुनि जाहि सब होइ विधाता वाम ॥ १९१ भरिाह कांच हड जाइ तव लहै न कौडी दाम ॥ १८९	
जहं कहुं फिरत देव द्विज पावै इहि आचररा फिरै दिन राती ॥	दरइ लेइ बहू वास दिरवावै ॥ महामलिन ननखल उत पाती

बहिरु तुरत पंपायुरावा ॥॥  
 अवलोकसिद्धक सरवर सोभा  
 तहा कपीस करे तिज ध्याना ॥  
 तव रावणा बोला करि क्रोधा  
 नाम तोर मुनि आयउ धार्द्र ॥

बालि नाम कपि पति जिहि ठावा  
 जिहि मन महा मुनिन्ह कर सोभा  
 दशकन्धरहि देरिव सुसकाना  
 वक ध्यानी कपि सठ विज बोधा  
 दे कपि युद्ध छंडि कद राई ॥

दोहा मोहि जीते बिनु समर सुनु वथा ध्यान तव कीस  
 कटकटाइ कह सज निचर रदन दीनि सै वीस ॥ १८६

बालि कहा हठि करिय नरारी  
 बल तुम्हार ऐसोइ है भाई ॥  
 यहि विधि बालि वहुन समुझावा  
 तव सकोप उठि भूपटिकपीसा  
 बालहि विमरि गई सुधितामू  
 एकदिवसि रवि अजुलि साजा  
 निलल अशंक आव पान नहवां

दशकन्धर घर जाइ विचारी  
 अजय चारि दिशि में मुनि पाई  
 कवनिह भांति बोध नहि आवा  
 हग राहिकांख चापि दशशीसा  
 इहिविधि विगत भयेषरमासू  
 कोख ते तिसरि दशासन भाजा  
 कर जल कलि सहस भुजजइवां

दोहा छेभेउ जल भुजवीशवल वूजन लगी समाज ॥  
 सहस बाहु अति कोध मन मोहि सम आनको आज

इराखनह रावणा ठाटा ॥  
 माया प्रवल महावल भारी ॥  
 निराखितियन आचरज विशाला  
 नाखैत १६ मष्ट करि रहई ॥  
 मकल आइ देखहिं न नारी ॥  
 नामन कहै रहै सकुचाना ॥  
 सत्य करै रभादिक नारी ॥ ५  
 मुनि पुंति तब जाइ छुडाव

जासु विपुल भुजवल जल बाडा  
 लंकेश्वर कह धरिसि प्रचारी ॥  
 बाधि राख ककुदिन हय शाला  
 रिस उर भारिक बुद्ध सहई ॥  
 मारि हंलात हंसे दे गारी  
 वहु विधि पूछहिं नपति मुजान  
 दशह माथ दश दीवक चारी ॥  
 पुनि नल शाप आय तिहि पावा

दोहा मारवा जानु दीखे अति अनुपम सुन्दर नारी ॥

चन्दन पुष्प पत्र कर पूजन चलि त्रिपुरारि ॥ १८३

दीखउवसी मन सकुचानी ॥  
को तुम नारि गवन कह कीन्हा  
मन मइ मत विचारन करेऊ ॥  
चीन्ह नाहि युनिशका आई ॥  
मन पकिताइ शोच उर भयेऊ ॥  
विकल उर वसी अलकहि आई  
दीन्ह भ्राप तिन जोध अंपारा  
चली भ्राप लंका कह आई ॥  
आगे आई ठाठि भई शापा ॥

तव रावरा बोला सुडु बानी ॥  
लज्जा वसतहि उतरन दीन्हा ॥  
धनपति पुत्र वधु कर धरेऊ ॥  
घाटिकर्म कीन्ही पाछे ताई ॥  
लकेश्वर लंका कह गयऊ ॥  
नलकूवर मन वात जनाई ॥ ॥  
रावरा वंश होउ क्षयकारा ॥  
दशकन्धर वैरा जिहि ताई ॥  
निराखि दशानन अति भयकाप

दोहा शापहि असीकार करि मन सह कीन्ह विचार  
दराड करिबिन्ह से लीन्ह नाहि रोषे उलक भुअपार १८३

दूत चारि पदये करिषि अश्रम ॥  
तिनसन तब पूछहि मुनिहाला  
कुशल तासु यह सुनइ मुनीशा  
मुनि सो वचन महा भय पाई ॥  
जिहि दरबार नीति नहि भाई  
कछु विन दिये नही गति आछी  
दूतन्ह सौं पि कहा मुनिजानी

निराखि विसरगे मुनि अधि अत  
कहइ कुशल लकेश भुआला  
कर तुम मन चाइत दश शिशा  
करहि विचार विरति विसगई ॥  
खल भए डली जरी तह आई ॥  
घट भरि रुधिर दिये तन पाछी  
भूपहि कहउ जाइ यह वाती

दोहा घट उधरत क्षय होइ हइ सहित सकल परि वार  
दूत दूरत घट ले गये लंकापति दर बार ॥ १८४

रावरा घट लखि परम इलासा  
सुनि मुनि शाप उपज उर दाह  
यतन समेत धरलि धरि रहै  
लेइ घट जनक देश ते गये ॥

तब दूतन मुनि वचन प्रकाश  
बोला घट लइ उतर जाह ॥ ॥  
जानिन पाव वात पह  
गाइत क्षेत्र मध्य तह ॥

जतकजत्ररचनातहं उयेऊ ।  
 प्रगतअवनितेअवयकुमारी  
 नामजीनकी परमपुनीता ।  
 कहिसुकथाअधिराउसिधाये  
 चारिदाव हारा लंकेशा ॥ ॥ ॥

चासीकरहलकरयतभयऊ  
 कन्याकहिलीन्हीउरगारी  
 नारदआइ कहा पुनि सीता  
 बहरीदून लंकापुर आये ॥  
 देवनकोवह देत कलेशा ॥ ॥ ॥

यहां तक छपक

रवि शशियवन वरुन धनुधारी  
 किन्नरसिद्ध मनुज सुर नागा ॥  
 ब्रह्म सृष्टि जह लागि तनुधारी  
 आबसु कारहि सकलभय भीता

अग्नि काल यम सबआधिकार  
 हवि सबही के पंथहि लागी ॥  
 दशमुखवसवती सर नारी ॥  
 नवहिं आय नित चरराविनीमा

दाहा भुजबल विश्ववस्यकार राखसि कोउन स्वतं ॥  
 मयडलीक महिरावन राज करे निज संघ ॥ १६५  
 देवयज्ञगन्धर्वनर किन्नर नारा कुमारी ॥ ॥  
 जीति वरी निज बाह बल बह सुन्दरि वर नारी ॥ १६६

इब्रजोत सन्न जो कहु कहैऊ ॥  
 प्रथमहि जिन कह आयसदीन्हा  
 देखत भोस रूप सब पायो ॥  
 करहि उपद्रव असुर निकाया  
 जोहि विधि होइ धर्मनिमूला ॥  
 जोहि शदेश धनु द्विज पावहि ॥  
 भुभआचरन कतहं नहिं होई ॥  
 नहिं हरि भक्ति जत्र जप दाना ॥

सो सब जनु पाहिले कीर रहैऊ  
 तिन कर चरित सुनह जो कीन्हा  
 निशिचर निकर देव परितापी  
 नाता रूप धरि करि माया ॥  
 सो सब करहि वेद प्रति कूला ॥  
 मगर ग्राम पुर आगिल गावहिं  
 विदविप्र गुरु साजन कोई ॥  
 सयनेह सुनियन वेद पुराता ॥

इन्द्र जपयोगविरागा तपमखभागा भवन सुनेदशशाशा  
 आपुन उठि धावे रहै न चावे चारि सब चाले रवीशा  
 अमभय अचारा भासतारा धर्म सुनिय नहिं काना

तेहि बह्विधि त्रासै देश निकासै जो कहू वेदपुराना २८  
 सोरठा वरिणान जाइ अनीति चोर निशाचर जो करहि ॥  
 हिंसा पर अति प्रीति तिनके पापहिं कवनमिवि २९

वादे बह्वल चोर जुअरि ॥ ॥  
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा ॥  
 जिनके यह आचारा भवानी  
 अति शय देखि धर्म की हानी  
 गिरि सरिसिन्धु भार नहिं मोही ॥  
 सकल धर्म देखि विपरीता ॥  
 धेनुरूप धरि हृदय विचारी ॥ ॥  
 निज संताप संतायसि रोई ॥

जेलम्यद परधन परनारी  
 साधन सोकरवावहि सेवा ॥  
 ते जानहु निधिचर सम प्रानी  
 परम सभित धरायकुलामी  
 जसमोहि गरुअ एक परद्रोही  
 कहिन सके शवरा भयभीता  
 गइ जहा जहां सुर मुनि करि  
 काहते कछ काज न होई ॥

छन्द सुरमुनिगन्धवा मिलि करि सवगाये विरचि केलोका  
 संगो तनु धारी भूमि विचारी परम विकल भयशोका  
 ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरी कहुने वसाई  
 जाकरि तै दासी सो अविनामी हमरो तोर सहाई २६  
 सोरठा धरनि धरहु मन धार कह विरचि हरि पद सुमिरि  
 जानत जनकी पीर प्रभ भजहि दारुन विपति ॥ २७

वैदे सर सब करहि विचारा ॥  
 पुर वैकुण्ठ जान कह कोइ ॥ ॥  
 जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ॥  
 तेहि समाज गिरजा में रहेऊ ॥  
 हृषि व्यापक सर्वत्र समा ना ॥  
 देशकाल दिशि विदिशिइ माहीं  
 अग जय मय सब रहिन विरागी  
 मम वचन मवके मन सांना ॥

कह पाइय प्रभु करिय पुकारा  
 कोइ कह पय निधि सह वसु सोई  
 प्रभु तेहि प्रगट सदा वहरीती ॥  
 अबसर पाइ वचन अस कहऊ  
 प्रसते प्रगट होहि मैं जानो ॥  
 कहहु सो कहा जहा प्रभु नाहिं  
 पवन ते प्रगट होहि जिमि प्राणी  
 साधु रकरि ब्रह्म वरवाना

दीहा मुनि विरचि मन हर्ष तनु पुलक नैषन वह नीर



अस्तुति करञ्जजोरिकर सावधान मतिधीर ॥ १६७ ॥

छन्द

जयजयजय सुरनायक जत सुखदायक प्रभातपाल भगवत

गोहि जहितकारी जयञ्जमुरारी सिन्धु सुता प्रियकता

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी ममै न जानै कोई

जोसङ्गज रूपाला दीन दयाला करी अजुगह सोई ३०

जयजय अविनाशी सव घट वासी व्यापक परमानन्दा

अभिगति गोतीना चरित पुनीता माया रहित सुकुन्दा

जेहि लागि विरगी अति अजुरागी विगत मोह मुनिवन्दा

निशि वासर ध्यावहिं हरि गुरा गावहिं जपति सच्चिदानन्दा

जेहि स्थिति उपाई त्रिविध वनाई संग सह यन दूजा

सो करह अचारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा

जो भव भय भजन जन मन रंजन गंजन विप्रति वरुथा

मनवच क्रम वानी छांदि सया नी सररा सकल सुरपूया २२

शारद भुति शेषा अक्षयि अशेषा जाकह कोउ तहिं जाना

जेहि दीन पियारे वेद प्रकारे द्वयो सो श्री भगवाना

भव वारिध मंदर सव विधि सुन्दर गुरा मंदिर सुख पुंजा

मुनि सिद्धि सकल सुर परम भयानुर नमत नाथ पदकजाश

दोहा

जान समय सुर भूमि मुनि वचन समेत सनेह

बागत रिश गंभीर भई हरनि शोक सन्देह ॥ २ ॥ १६८

जनि डरपह मुनि सिद्धि सुरेसा

अन महित मनुज अवतारा

जयप अदित महा तप कीवा

अशरथ कीशित्या रूप्या ॥

तेत केरह अवतारिहो जाई ॥

गारह वचन सत्य सव करिहो

तुमहिं लागि धरिहो नर भेशा

लेहो दिनकर वंश उदार ॥

तिन कह मै पूरब बर दीना ॥

कौसल पुरी अगट नर रूप्या

रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई

परम शक्ति समेत अवतारिहो

हृदि मकलभूमि गरुअदि  
गयान ब्रह्मवानी सुनि काना॥  
नव ब्रह्मा धरिगाहि समुतावा

निर्लेप होउ देव समुदाई ॥ ५॥ ५॥  
तुरत फिरि मुर हृदय जुडाना॥  
अभय भई भरोस जिय आका ॥

दोहा निज लोकाहि विरंचिनाये देवन्ह हृदि सिरबाई ॥  
बानर तनु धरि धरनि महु हरि पद सेवउ जाइ ॥ ६॥ ६॥

गये देव सब लिज २ धामा ॥  
जो कछु आयसु बह्ये हीन्हा ॥  
वनचर देह धरी क्षिति माहि  
घोरि तरु नख आयुध सब वीरा  
गिरि कानन जह तहं भरि पूरी  
यह सब रुचिर चरित मे भाया ॥  
अवधपुरी रघुकुल मरिा राज  
धर्म धुर धर गुणानिधि ज्ञानी

भूमि सहित पायेउ विप्रामा  
हरषे । देव विलंब न कीना  
अतुलिन बल प्रदाय तिन पाई  
ही मारग चित पाई स्वा धीरा  
रह निज निज अनीक रुजि रूरी ॥  
अब जो सुनइ जो बीर्याइ राधा  
बेद विदित तेहि इ सारण जाइ  
हृदय धरि नति सारण पावी

दोहा कोशल्यादि नारि प्रिय सब आचान पुजौत ॥  
पति अनुकूल प्रेस हृद हरि पद कमल विनीत ॥ ७॥ ७॥

एकवार भूयति मन साहो ॥  
गुरुबदह गये तुरत मदिपाला  
निज दख सुख न्यप गुरुहि सुनायउ  
धरु धोर होइ हहि सुत चारी  
पृगी बट धिदि वसिष्ठ बुलावा  
भक्ति सहित मुनि आहति दीन्हे  
बोले अनल प्रेम युत बानी ॥  
जो वसिष्ठ कछु हृदय विवाग  
यह हवि बांटे देउ न्य जाई  
दोहा नव अदृश्य पावक भय मकल समहि समुभाइ

भइ गालानि जोरि सुत नही ॥  
चरणा लागि करि दिनय विद्याला  
कहि वसिष्ठ बह विधि सखु फायउ  
त्रिभुवन विदित भक्त भय हारी ॥  
पुत्र लागि शुभ यज्ञ करावा ॥ ८॥  
प्रगटे अंगति चक्र कर लीन्हे ॥  
अनि प्रमत्त नहि परे न पानी ॥  
मकल काज भानिधि तुम्हारा  
बया वान जोहि भाग बनाई ॥

परमानन्द मगन रूप हर्षने हृदय समाय ॥५॥ २०१

तबहि राउ प्रिय नारि वृलाई ॥  
अर्द्ध भाग कौशल्याहि दीन्हा ॥  
केकयि कहं नृप लै सो दयऊ  
कौशिला ककयी हांथ धरि ॥  
इहि विधि गर्भ सहित सब नारी  
जादिन ते हरि गर्भहि आये ॥  
संदिर महं सब राजाहि रानी ॥ ॥ ॥  
सुरव्युति कछुक काल चलिगयेऊ

कौशल्यादि तहा चलिगयेऊ  
उभय भागअधि कर लान्हा ॥  
रहेउ सोउ भय भाग शुनि भयऊ  
दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन करि  
भयउ हृदय हर्षित सुरा भारी ॥  
सकल लोक सुख संपति छाये ॥  
शोभा शील तेज की खानो ॥ ॥  
जेहि प्रभु प्रगट सो अवसी भयऊ

दोहा योगलवन रह वार तिथि सकल भयेअनुकूल ॥

चाअरुअचर हर्षयुत राम जन्म सुरवमूल ॥ २०२

नवमी तिथि मधुमास युतीना ॥  
मध्य दिवस अति शीत न घासा  
शीतल मन्द सुरभि वह वाऊ ॥  
वन कुसुमित गिरि गारा मनियार  
सोअवसर विरचि जब जाना ॥  
गगन विमल संकुल सुर यूथा  
वर्षाहि सुमत सुअजलि साजी  
अस्तुति करहि नाग मुनि देवा

शुक्ल पक्ष अभिजेत हरि प्रीना  
पावन काल लोक विश्रामा  
हर्षित सुर संतन मन चाऊ ॥  
अर्वाहि सकल सरिता नृत धारा ॥  
चले सकल सुर साजि विभासा  
गावहिं गुरा गंधर्व दह्या ॥  
गह गह गगन ईडभी वाजी  
बहु विधि लावहि निज देवा

दोहा सूर समूह विनती करी यहचे तिज निज धाय

जगनिवास प्रगटेअखिल लोक विश्राम ॥ २०३

कन्द भये प्रगट कयाला दीन दयाला कौशल्याहितकारी  
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अहुत रूप निहारी ॥  
लोचन अभिरामा तनु घन प्रयामा निज आयुध भुजवारी  
भूषणा वनमाला नयन विशाला शोभा त्रिभुवरी २४

कहइहं करजोरी अस्तुति तोरी कोहि विधिकरी अनंता  
 लाया गुराजाना तीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥  
 करुराा सुखसागा सब गुरा आगर जेहि गावहि भुति संता  
 सो अस हितलारी जन अनुरागी पराट भये श्री कंता २५  
 ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम २ प्रति वेद कहै  
 समउर सोइ वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे  
 उपजा जब जाना प्रभु सुसकाना चरित बह विधिकीन्ह चहै  
 कहि कथा सुनाई मात बुजाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै २६  
 माता प्रति बोली सो मति डोली तजइ नात यह रूप  
 कीजै शिशुलीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनुषा  
 सुनि वचन सुजान रोदन ठाना ह्रु इ बालक सुरभूषा  
 यह चरित जे गावहि हरि पद पावहि तेन परहि भवकृपा २७  
 दोहा विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अचनार  
 निज दुखा निर्मित तनु माया गुरा गोधार ॥ २७४

सुनि शिशु रुदन परम प्रिय वाली  
 हर्षित जहं तहं आई दासी ॥  
 दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना  
 परम प्रेम मन पुलक शरीरा ॥  
 जाकर नास सुनत शुभ होई  
 परमानन्द पूरि मन राजा ॥  
 गुरु वसिष्ठ कह भयउ हंकारा  
 अनुपम बालक देखिन जाई

संभ्रम चलिआइ सब राजी ॥ ॥  
 आनन्द सगन सकल पुर वासी  
 मानइ ब्रह्मानंद समाना ॥ ॥  
 चाहत उठन कारत मति धीरा  
 मोरि बह आयो प्रभु सोई ॥ ॥  
 कहा बुलाय बजा बड बजा ॥  
 आये दिजन्ह सहित ब्य दारा ॥  
 रूप राशि गुरा कहिन सिराई

दोहा तब नादी सुख भ्राध करि जात कर्म सब कीन्ह  
 हाटक धेनु वसन मणि न्यप सिपुन कह दीन्ह ॥ २७५

ध्वज पताक तोरन मुर बाधा ॥

कहिन जाइ जेहि भाति वनाबा ॥

सुसन शशि आकाश ते हीर्द ॥  
 बन्द बन्द मिलि चली सुगाई  
 कनक कलश मंगल भरिथारा  
 कर श्रारनी गिकावर करहीं ॥  
 साराध सुत बन्द गारा नायक  
 शर्वस दान दीन्ह सब काह ॥  
 बरगमद बन्दन कुंचुन नीवा

ब्रह्मानन्द सरान सब कोई ॥  
 सहज सिंगार किये उठि धाई ॥  
 गावत पैठहि भूप दुआरा ॥  
 वार वार शिशु चरगान परहीं  
 पावन गुगा गावहिं रघुनायक  
 जेहिं पावा राखा नहिं ताह ॥  
 सची सकल वीथिनि विचर्वीन

ही० गृह २ बाज बघाव पुस प्रगट भये सुखकन्द २०६  
 हर्ष वन सब जइ नह नगर नारि नर बन्द ॥

केकय सुता सुभिः शिः  
 बह सुख सम्यति समय सजा  
 श्रवध पुरी सोहे इहि भांती  
 देखि भानु जनु मन सकुचानी  
 श्रगर धूप जनु बह अंधियारी  
 मंदिर मीरा समूह जनु तारा  
 भवन भेद धुनि अति मृदुवानी  
 कौतुक देखि पैतंग भुलाना

सुन्दर सुत जन्मत तह सोऊ ॥  
 कहिन सके सारद अहि राजा ॥  
 प्रभुहि मिलन आई जनु राती  
 तदपि वती सन्ध्या अनु मानी ॥  
 उदै अवीर मनह अरु रारी ॥  
 न्यप गृह कलश सो इन्दु उदारा  
 जनु खरा सुख रस मय सुख साने  
 एक मास ताहि जातन जाना ॥

दोसक मास का दिवस भा मरम न जाने कोई ॥ २०७  
 रथ समेत रवि थाके ऊनिशा कवन विधि होइ

यह रहस्य काह नहि जाना  
 देखि महोत्सव सुर मुनि नागा  
 औरै एक कहौ निज बोरी ॥  
 काक भुषण्ड संग हम् शेऊ  
 परमानन्द प्रेम सुख फुले ॥ ॥  
 तेहि अन्वसर जो जेहि विधि आवा

दिन मरिा चले करत गुरागान  
 चले भवन वररात निज भागा ॥  
 सुगु गिरजा अति दृढ मति तोरी ॥  
 मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥ ॥  
 वीथिन फिरहि मगन मन भूले ॥  
 दोन्ह भूप जो जेहि मव भावा ॥

गजतुरंगहेमगोहीरा ॥ ३॥

दीन्देन्दुपनाताविधिचीरा ॥

दो० मनसंतोषसवनकेजहंतहैदेहिअशीश ॥ ३०८

सकलतनयचिरजीवहनुलसिदासकेइरा

कछुकदिवसवीतेएहिभांती  
नामकसोंकरअवसरजानी  
करिपूजाभूपतिअसभाषा  
इनकेनामअनेकअनूपा ॥  
जोअनंदसिंधुसुखरासी ॥  
सोसुखधासराअसनामा  
विश्वभरारापोषराकरजोई  
जाकेसुमिररातेरिपुनाशा

जातनजानहिंदिनअरुसानी  
भूयबोलिपठयेसुनिजानी ॥  
धरियनामजोसुनिशुनिगसा  
सैनपकहवस्वसतिअनुरूपा  
सीकरतेत्रैलोक्यसुपासी ॥  
अखिललोकदायकविश्रामा  
ताकरनामभरतअसहोई ॥  
नामशत्रुहनवेदप्रकाशा ॥

दो० लक्ष्माराधामरामप्रियसकलजगतअधार २०९

गुरुवशिष्यतेहिरारवेउ लक्ष्मरा नाम उदार

धरेनामगुरुहृदयविचारी ॥  
सुनिजनधनसर्वसशिवप्राता  
वारेहितेनिजहितपतिजानी  
भरतशत्रुहनदोगाभाई ॥ ॥  
श्यामगौरसुन्दरदोजजोरी  
चारिउशीलरूपगुराधामा  
हृदयअनुग्रहइन्दुप्रकाशा ॥  
कयहउकंगकबहवरपालन

वेदतत्त्वन्दपतवसुतचारि ॥  
वालकेलिरसतेहि सुखमाना  
लक्ष्मारा रामचरारा रतिरानी  
प्रभुसेवकजसप्रीतिबहाई  
निरखहिछविजननीतराताई  
तदापअधिकसुखसागररामा  
सूचतकिररा मनोहरहासा  
मातुडलाराहि कहिप्रियलालन

दो० व्यापकब्रह्मनिरंजननिमुराबिवातविनोद ॥ २१०

सोअजप्रेमसक्तिवसकौशल्याकीगोद ॥ ॥

नामकोटिछविश्यामशरीरा  
अरुणाचरारापेकनमरवजोती

नीलकंजवारिदगम्भीरा ॥  
कमलदलनवैठेजनुमोती

शेष कलिश ध्वजअंकुश सोहै  
 कटि किंकिणी उद्वत्र त्रय रेखा  
 भुज विशाल भूषणा युत पूरी  
 उर अनिहार पविक की शोभा  
 कनु कठ अति चिबुक सुहाई ॥  
 डड डड दसन अधर अरु नारे  
 सुन्दर प्रवरा सुचारु कपोला  
 नील ककल दाउ मयन विशाला  
 विक्रम कच कुंचित गभुअरे  
 पीत किंगुलिया तन पहिराये  
 रूख संकहिं नहिं कहि श्रुतिशेषा

नूपुर धृति सुनि सुनि मन मोहे  
 नाभि गंभीर जान जेहि देखा  
 हिय हरि नख सोमा अति रूरी  
 विप्र चरणा देवत मन लोभा  
 आनन अमित सदन क्विछाई  
 नासा तिलक को वरनै पारे ॥  
 अति प्रिय मधुर सो तोतारि बोला  
 विकट शकुटिलटक वर भाला  
 बहु प्रकार रचिसातु सवारै ॥  
 जानु पानि विचरत सहि भाये  
 सो जानै सपनेहु जिन्ह देखा ॥

दोहा सुख सन्दोह मोह पर जान निरा सोतीत ॥ ३११

दम्पति परस प्रेम वस कर शिशु चरित पुनीत ॥ ३११

यह विधि राम जगत पितु माता  
 जिन रघुनाथ चरणा बति मानी  
 रघुपति विमुख यतन कर जीरी  
 जीव चह चह वस करि राखे  
 मकुटि बिलास नचावे ताही  
 अत बथ कम छाडि चतुराई ॥  
 येहि विधि शिशु विनोद प्रभुकीना  
 निउंकरा कवहं हलरावें ॥

कोशल पुरवासिन सुखदाता  
 तिनकी यह गति प्रगट भवानी  
 कवन सके भवबंधन छोरी ॥  
 सो माया प्रभु सो भव भावे  
 अस प्रभु छाडि भजिय कहू काही  
 भजतहि कपा करे रघुराई ॥  
 सकल नगर वासिन सुख दीना  
 कवहं पालने छालि जुलावें

दोहा प्रेम मरण की शिल्या निशिदिम जात न जान

सुत सनेह बस माता वाल चरित्र करि गान ३१२

राक वार जननी अन्ह वाये ॥

निब कुल इष्ट देव भगवाना ॥

करि सिंगार पलना पौढाये ॥

पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥

करि पूजा नैविद्य चदावा ॥  
 वङ्गरि मात कहवा चलिआइ  
 गई जननी शिशु पहं भयभीता  
 वङ्गरि आइ देखा सुत सोई  
 इहा उहां दुइ बालक देखा

आए गई जहं पाक बनावा ॥  
 भोजन करत दीख रघु राई ॥  
 देखा बाल तहां पुनि सुता ॥  
 हृदय कस मन धोरन होई  
 मति भ्रम सोर किआन विधाषा

श्री रामचंद्र जी अपनी माता कौशल्या को विराटस्वरूप में सम्पूर्णा ब्रह्म  
 एत को दिखलाना और कौशल्या का मोहनिवृत्त करना ॥





देखि राम जननी अकुलानी ॥

प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुमुकानी ॥

दोहा दिखतवा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड ॥५॥

रोम रोम प्रति राजहि कीटि कीटि ब्रह्मंड ॥५॥ २९३

अगणित रवि शशि शिव चतुरानन  
कालकर्म गुण दोष सुभाऊ ॥

देखी माया सब विधि गादी  
देखा जीव नचावे जाही ॥ ११

तनु पुलकित मुख बचन आथा  
विस्मय वैनु देखि मह नारी ॥

अस्तुति करि न जाय भयमाना  
हरि जननिहि बहु विधिसमुझई

बहु गिरिसरित सिंधु माहि काचन  
सो देखा जो सुना न काऊ ॥ ११ ॥

अति सभित जोर कर गादी ॥ ११ ॥  
देखी भक्ति जो छोरे ताही ॥

नयन मूदि चरगान स्त्रि नावा ॥  
सये बहुरि शिशु रूप खरासी ॥

जगत पिता मैं सुन करि जाना ॥  
यह जानि कतहु कहसि सुनु भाई

दोहा वार वार कौशिल्या विनय करे कर जोरि ॥५॥

अब जानि थोपै कचहु प्रभु सोहि साया तोरि ॥ ३१६

बाल चरित हरि बहु विधिकानी  
कछुक काल बीते सब भाई ॥

चूडी करन कीन्ह गुरु आई ॥  
परम मनोहर चरित अघारा ॥

मनकम बचन अगोचर जोई  
भोजन करत बुलावत राजा ॥

कौशिल्या जब बोलन जाई ॥  
निगम नेति शिष अंतन पावा

धूमर धूर भरे मन आवे ॥ ॥  
दोहा भोजन करत चपल चित्त उत अवसर पाइ ॥

अति आनन्द दामन कह दीन्ह  
बदे भये परिजन मुख दादे ॥

विष्ट दक्षिणा पुनि बहु पाई ॥  
करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥

दशरथ अजिर विचार प्रभु सोई ॥  
नहि आवहि तजि बाल सखाजा

दुसकि दुसकि प्रभु चलीह पाराई  
ताहि धरे जननी हृदि धावा ॥

भूपति बिहंसि गोद वैठाये ॥  
दोहा भोजन करत चपल चित्त उत अवसर पाइ ॥

भाजि चले किलकत वदन दधि द्योदन लपटाइ ॥ ३१६

बाल चरित अति सरल सुहाये शारद शेष शंभु श्रुति साये ॥

जिह करसन इन सन तहिं राता  
 भये कुमार जबाहिं सब धाता ॥  
 चुरु गृह गये पहन रघुराई ॥  
 जाकी सहज स्वांस श्रुति चारी ॥  
 विद्यावित्तप विभुन गुण शीला  
 करतल वाराधनुष अवि सोहा  
 जिन वीथिन विहराहि सव भाई

तेजग वंचित किये विधाता ॥  
 दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥  
 अल्प काल विद्या सब पाई ॥  
 सो हरि पद यह कौतुक भारी  
 खेलोहि खेल सकल नृप लीला  
 देवत रूप चराचर सोहा ॥  
 चकित होहि सव लोच लुगाई

दोहा कौशलपुर वासी नमनारे बद्ध अरु बाल ॥ २१६  
 प्राणाह ते प्रिय लाराही सब कह राम रूपाल ॥

बंधु सरवा संग लोहि बुलाई ॥  
 पानन र्चग भारीहिं जिय जानी ॥  
 जे र्चग राम वारा के सारे ॥ ३ ॥  
 अनुज सरवा संग भोजन करही  
 जोहि विधि सुखी होहि पुरलोणा  
 वेद पुरान सुनहिं मन लाई ॥ ॥ ॥  
 प्रातकाल उठि कर धुनाया ॥  
 आयु संधि करीहं पुर काजा ॥

बन सग पानित खेलोहि जाई  
 दिन प्रति नृपहिं दिवाबहि नृपहिं  
 ते तनु तजि सुर लोक सिधारे  
 मातु पिता आशा अनुसरही ॥  
 करीहं कृपा निधि सोइ संयोगी  
 आपु कहहि अनुजहिं स मगई  
 मातु पिता गुरु नाबहि साथी  
 देखि चरित हरषहि मन राजी

दोहा आपक अकल अनीह अज निरुरा नाम तरूप  
 भक्ति हेतु नाना विधिहि करत चरित अनूप ॥ २१७

यह सच चरित्र कहा भे राई ॥  
 विश्वामित्र महा बुनि जानी ॥  
 तहं जय जस योब धुनि कारही  
 देखत जस निशाचर धावहि ॥  
 गाधि तनय मन चिंता व्यापी  
 तव मुनि वर मन कीन्ह विचारा

अगिल कथा सुनह मन लाई  
 बसहि विपिन शुभ आश्रम नाकी  
 अति मारीच सुवाह हि डरही  
 करीहं उपद्रव तुनि दुख पावहि  
 हीरविनु मरिहिन निशि चर पापी  
 प्रभु अवतरे उहरा जाहि सोर

इति मिसु देखौ प्रभु पद जाई ॥  
ज्ञान विराग सकल रागा अयता

करि विनती आनी दोऊ भाई ॥  
सो प्रभु मै देरव भरि नयना ॥

दोहा बह्विध करन मनोरथ जातुं लागीं वार ॥ ४

करि मंजन मरय सलिल उथे अप दरवार ॥ ५ ॥ २१८

मुनि आगमन सना जव राजा  
करि देउ वत मुनि ह सन्मानी  
चरणा परवार कीन्ह अति पूजा ॥  
विधि भांति भोजन कर वावा  
पुनि चरान मेले सुत चारी ॥  
मये मगन देखत मुख शोभा ॥  
तव मन हर्ष वचन कहिराऊ ॥  
केहि कारणा आगमन तुम्हारा  
असुर समूह सतावहि मोही  
अनुज समेत देह रघुनाथा ॥

मिलन गयेले विप्र समाजा  
निज आसन वै गरिस आनी  
सो मम आजु धन्य नहि दूजा  
मुनिवा हृदय हर्ष अति पाषा  
राह देखि मुनि विरति विसारी ॥  
जनु चकोर मूगागशि लोमा  
मुनि अस रुपा कीन्ह नदिकाज  
कहइ सो करतन लाव वारा ॥  
नें याचन आयेउं न्यप तोही ॥  
निशि वर वध मै होव सनाथा ॥

दोहा देह रूप मन हर्षि सुत तजइ सोह अज्ञान ॥ ४ ॥

धर्म सयश न्यप तुम कहं इन कहं अति कल्याण ॥ २१९ ॥

मुनि राजा अति अप्रिय चानी  
बोथे पन पायेउं सुत चारी ॥  
मांनह भूमि धेनु धन कोषा  
देह प्राणा ने प्रिय कहु नाही ॥  
सब सुत मोहि प्रिय प्राणा कीनाई  
कहं निशि वर अति घोर कठोरा  
मुनि न्यप गिरा प्रेम रस सानी  
तव बसिब बड़ विधि समुज्जव  
अति आदर दोउ तनय बुलाये

हृदय कंप मुगव वृत्ति कुंभिलानी  
विप्र बचन नहि कहैउं विचारी  
सर्वस देउ आजु सह रोषा ॥  
सोउ मुनि देउ निमिष इक मरु  
राम देत नहि बनै सो सार्ड ॥  
कहं सुन्दर सुन परम किशोरा  
हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी  
न्यप सदेह नाश कह पावा ॥  
हृदय लाय बड़ भांति सिखाये

बाल का पूज

विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा करने के निमित्त श्री शस बंदर करके ताड़ का  
शससी वध करना



सरे द्वारा नाथ सुन लोऊ ॥ ॥	तुम सुनि पिता आन भहि कोऊ
दोहा सोपे सूपनि ज्योधाहे सुत वहु विधि देहु अशोश जननी भवन गये प्रभु चले लाइ पद शीश ॥ ५ २२०	
दोहा पुरुष ति दार वीर हर्षि जले सुनि भय हरसा ॥ कृपा सिधु अति धीर अखिल विश्व कारसा करसा	
अहंता नयन उर चाइ विशाल न लपट पीत कसे वर भाषा ॥ इयान गौर सुन्दर देउ भाई ॥ प्रभु इहाराय देव में जाना ॥ चले जात सुनि दी दिखवाई स्कर्हा बारा प्रारा हरि लीबहा तब इरषि जिज हाथहिं जिय चीन्हा जाते लागन सुधा पिवासा	नीलजल्द तन श्याम तमाला हृदिर चाप शायक दुहु हाथा ॥ विश्वगिन्न महा निधि पाई ॥ सोहि हिन पिता तजेउ भगवाना सुनि ताडका क्रोध करि घाई ॥ दीन्ह जानि तेहि निज पद दीन्ह विद्या निधि कह विद्या दीन्हा अतुलित बल तन तेज प्रकाशा
दोहा आयुध सकल समपि कारे प्रभु निज आभ्रम आनि कंद मूल फूल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥ २२१	
प्रात काल सुनि सन रघुराई ॥ होम करन लागे सुनि जारी ॥ सुनि मारीच निशाचर कोही ॥ बिबु कर वारा राम तहि मारा पावक सर सुबाहु पुनि मारा साँरि असुर द्विज निर्भय कारी तहं प्रभु ककुक दिवसरघुराया भक्ति हेत वहु कथा पुराना तब सुनि सादर कहा बुझाई धनुक यत सुनि शुकुल नमा	निमये यत्न करहु तुम जाई ॥ आपु रहे मख की स्वचारी ॥ ॥ लै सहाय धावा सुनि द्रोही ॥ शत योजन गा सागर वारा ॥ अतुज निशाचर कटक संधारा ॥ अस्तुति कारहि देव सुनि भारी ॥ रहे कीन्ह विघ्न परदाया ॥ कहा विय यद्यपि प्रभु जाना ॥ चरित एक देविय प्रभु जाई ॥ रषि चले सुनि नर के सापा ॥

चले राम लक्ष्मण युधिष्ठिरा  
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रसाधा

गये जहां जग पावन वेना  
बहु प्रकार सुरवर्षो रना

बाहा नातम नपर आ वस उपल दह बाराया ॥॥

यसा कलात रज चाहती कृपा काह चुनार ॥॥ २२२

प्रमनपद पावन शोक नसावन प्रगट भइतव पुङ्ग सही ॥

देखत रघुनायक जन सुख दायक मन्सुख हुइकर जोरिही  
अनि प्रेम अधीरा पुलक शरीरा सुख नहि आविबदन की

अति शयवड भारी वरान लागी युगल लखन नसाधारवई  
धीरज सन कीन्हा प्रभुकह चीन्हा रघुपति कृपा भक्तिपाई

अति निर्मल वानी अस्तुति ठानी ज्ञान रास्य जय रघुराई

बैनाहि अपावन प्रभुजग पावन रावरासिजन सुखवई

राजिव लोचन भेव भय भोचन पाहि पाहि शरणाहिं आई ॥ २६

मुनि आप जो दीन्हा अनि भल कीन्हा परम अनुग्रह सै माना

देखुं भीर लोचन हेरि भव सोचन यहै लाभ शकर जाना

विनतो प्रभु मोरी नै सति भोरी ताथ न वर सांगी आना

पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुपकरै पाजा ३०

जेहि पद सुर सरिता परस पुनीता प्रगट भई शिव शीश धरी

सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कपाल हरी

इहि भांति सिधारी गौतम नारी वार वार हरि चरणा परी ॥

जे अति मन भावा सो बर पावा गै पतिलोक आनन्द धरी ३१

लोक अस प्रभु दीन वंधु हरि कारणा रहित कपाल ॥

तुलसी दास सठ ताहि भजु कांडिक पट जंजाल ३२

पुनि सुरमारे उतपति रघुराई

कह मुनि प्रभु तव कुल इकराजा

केहि जुग भाषिन सुकुनारी

कौशिक सन पूछा सिर जाई ॥

नाम सगर निड लोक विराजा

प्रथम केशिनी मुनति विधारी ॥

कह भुनि प्रभु तव कुल इकराज  
 नेहिके जुग भामिन सुकु मारी  
 सब प्रकार संपति भुर भ्राजा ॥  
 एक समय भामिन होउ भाथा  
 सघन सफल तरु सुन्दर ताना

नाम भगवति हं लोक विराजा ॥  
 प्रथम केशिनी सुसति पियारी ॥  
 सुत विहीन मन विस्मय राजा ॥  
 माथे वन तनय हेतु रघुनाथा ॥  
 तहां अरु सुनि तप तेज निधाना

दोहा सहित नारि न्य सुदित मन रहे वर्ष शत रुक ॥

कीन्ह तप बल देखि भगु अस्तुति कीन्ह अनेका ॥ २२३

कहि निज दख प्रसाम न्यकांहा  
 न्यपथनी सन सुनि अस भाषा ॥  
 सुनि मुन बचन सीस तिन नावा  
 एकहि कहिउ एक सुत होना  
 हरषित भयो नभग वर पाई ॥  
 सहित भामिनी अब धहि न्याये  
 जानि सुषरि सुंदर सुख लई ॥  
 समति प्रसव एक तुंबरि सोई  
 निरषे सुत हरषित सब होई  
 हरष सहित दिये दान नरेभू ॥  
 छत घट सुंदर विविध मंगारा

देखीसतव मुनि वरदीना ॥ २२३ ॥  
 लेह स्ववजो जेहि अभिलाषा ॥  
 देह नाथ जो अति मन भावा ॥  
 दूसरि साठ सहस गुन लोना ॥  
 पानि जोरि चरनन सिंग नाई  
 हरष सहित कहु द्विसगंवाय  
 नाम केसि अस मंजस जाई ॥  
 भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई ॥  
 मंगल चार किये सब कोई ॥  
 पूजि विप्र गुरु गौरि गराओ ॥  
 ते सब सुत न्यपतिन सह जाये ॥

दोहा एह विधि भएउ सकल सुत पूजे सब मन काम

जाइ दिवस निसि हरष बस सुनहु सम घन स्याम ॥ २२४

पुरि जन सब घर धरनि नरेभू ॥  
 बाल केलि कर भये कुमारा ॥  
 होइ जो काज सकल मन चीते  
 साज नदी अब ध जो अहं ई ॥  
 प्रजालोक के बालक ताना

अति अनेदतन मिटा अंदेसू ॥  
 लीला करे अगम संसारा ॥ ॥  
 एहि सुख वसत वहुत दिन वीते  
 विमल सलिल उत्तर तट वहुई  
 नित उठि तहां करे स्नाना ॥

अस मंजस तह तरनी आनी ॥  
 भये पुजा सब धरम डीवारी ॥  
 सकल गये जहे वैठि न्यपाला  
 तुम न्यप चहइ प्रजा प्रतिपाला ॥  
 कनक देश सब सुनइ नरेशू ॥

तिनहि चदाई वोरि निज पानी  
 बालक बध सुनि सुनइ खरारी ॥  
 बोले बचन नाच पद भाला ॥  
 सुत तुम्हार भा सुपकर काला ॥  
 बिना तजे नहि मिठे कलेशू ॥

दोहा तव सुत कोन्हैउ पाप बह मारे बालक वन्दे ॥५

तुम कह प्रारा समान यह सकल प्रजन कह मंद २२५

प्रजाबिने सुनि धोरु दीन्हा ॥  
 तामु तनय जग विदित प्रभाऊ ॥  
 वसत हृदय न्यप केसो केमे ॥  
 गये प्रजा सब निज तिज धामा  
 बहारे न्यपति मन कीन्ह विचारा  
 हिन मंत्री गुरु सुतहि बुलाये ॥  
 रुविर वेदिका एक बनाई ॥ ॥  
 मख अरंभ कंडेउ तव तुरगा

सुतहि देशते बाहर कोन्हा ॥  
 गुननिधिअ सुमानोहि नाऊ ॥  
 मुनि मन मीन सलिल रहे जैसे ॥  
 भये विलोक मन गुण विश्रामा  
 आइ भयेउ पन बीच हमारा ॥  
 हिम गिरि विंध्य मध्य तव आये ॥  
 देखत वनइ वरचि नहि जाई ॥  
 वेगि बंत जिमि देखिय उरगा ॥

दोहा सुरपति सुन भय दारुणाहि मन माहि कर अनुमान

आन तुरंग तव लीन्हैउ सम न कोऊ जान ॥ ॥ २२६

गरकेउ आनि कपिल सुनि पाही  
 जुगवत रहेजे सुभट सयाने ॥  
 तिन सब आनि कही न्यप पाही  
 लीन्ह तुरंग कोइ जानन कोऊ  
 सुनत बचन न्यप विस्मय पाये  
 जोइ तुरंग तुम हेरइ जाई ॥  
 सुरपति सम देखिय सब वीरा  
 जितहि चलत धरनी अकुलाई

कोऊन जान काइहि राम नाही  
 लै तुरंग रहे किनऊन जाने ॥ ॥  
 महाराज हम कहत डराही ॥  
 कहा कारिय सो आयसु होऊ ॥  
 सकल सुनत कहं तुरत बुलाये  
 सकल चले चरनन सिर नाई ॥  
 सकल धेनु हर अति रसा धीरा  
 बलि पशु जीव भये सब आई ॥



<p>सुमन बाटिका उपवन वारा नगर गांव सुनीश थल नाना</p>	<p>सरित कूप वापिका दंडागा थ गिरिकंदर काननञ्च स्थाना ॥</p>
<p>दीहा इहिविधि खोजइ तुरंग चरनन साथहिं नाइ कहि खोजइ करि जाहि २७७</p>	<p>तिन आयै भूपति पाहि चल सकलपूर्व दिशि आयै</p>
<p>बाइह माहि सुन कराहि पठाये ॥ बिनके कर जिमि कुलिश समावा देवि अनुल दल देव डराने ॥ भोघन मही पताल सब आयै तिन पूछा सब कथा सुनाये ॥ इहिविधि पुनि दूसर गज देखा ताइ बह प्रणाम तिन कीने ॥ तीमार देयि प्रदक्षिणा कीन्ही दिगाज खेत निराखि सुख पाये ॥ खोजव मही पार नहि पावा ॥</p>	<p>जोजन भारि खोदहि बलवाना मरह नाइ विरवि मन माने दिगाज देखि एक सिर नाये ॥ वहिरि सकल दक्षिणा दिशि आयै अति उतरा गज विबल विशेषा बले सुनत पाप्मि स खित दोने ॥ पुनि उतर दिशि सोधहि लीन्ही ॥ सकल कपिल सुनि यह सुनि आयै शोभा चह दिशि जलधि सुहावा</p>
<p>देखिन आपतुरंग तब बांधा सुनिबर पास ॥ ॥ ॥ बोले बचन सकोपि करि मया चह सब कर नास ॥ २२८</p>	
<p>खोदा माहि हम चरित कोथा कोउ कहि चोर दीख बह होई परधन लै पताल पुनि आयो ॥ कोऊ कहै यह सुनिबर नाही कोऊ कहवक तप कीन्ह अपारा ॥ सुनत बचन सुनि चितवाजवही उसा खचन जिहि समुजन बोला पावक जानि धरहिं कर प्राणी जाति गारल जे संग्रह करही</p>	<p>रैरे डख बहत तोहि सोधा ॥ ॥ एहि सम दली अवर नहि कोई तसकर सुनिबर भेष बनायो ॥ समुझि देखि लक्षराम न माहीं अहो डख ले तुरंग हमारा ॥ भयै भस्म सब छिन में तवहीं ॥ सुधा होइ विष तिल म ओला ॥ जरहिं काहि नहिं अति अभिमान सुनइ राम ते काहे न मारहीं ॥</p>

क्रोध कौं विन किये बिचारा ॥ ॥  
इहां न्यपति अतुमान बुलाये ॥

भये सकल तेहि ते जरि छारा ॥  
नहि अये सब तिनहि पठये ॥

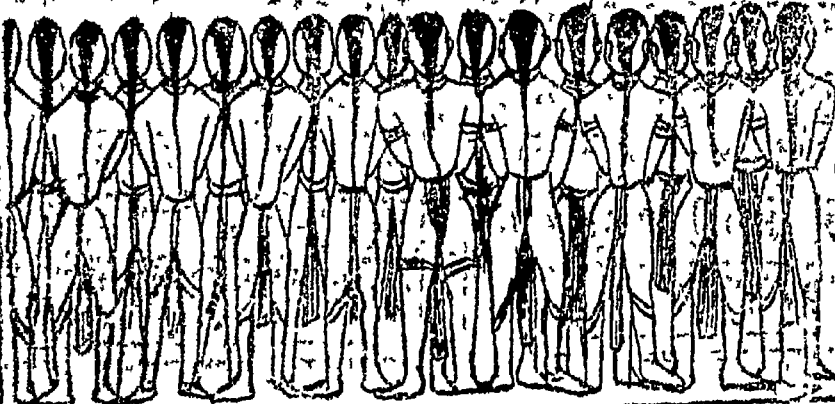
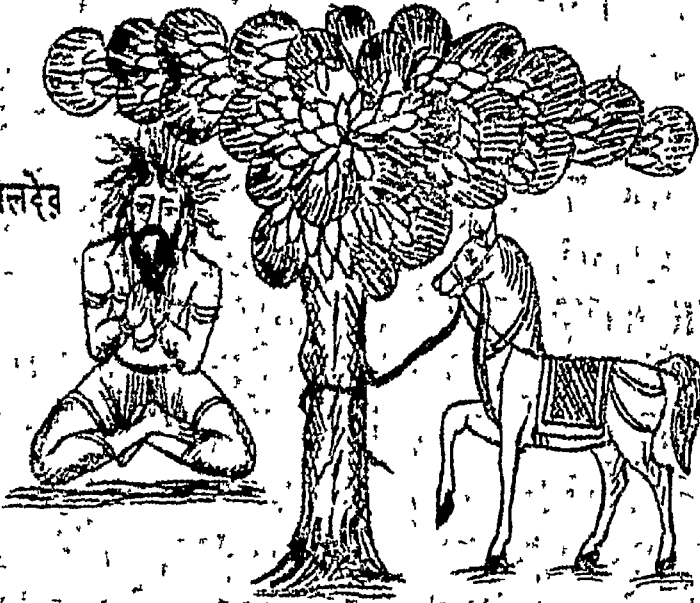
देहा दीन्हा न्यपति असीस तब अति हित वारा हिवार ॥  
बेगि फिरो ले तुरंग सुत अरे प्राण अधार ॥ ॥ २२८

चले जाय पद सीस कुमारा ॥  
जहं नहं निरखि मुनिन के धामा  
पन्नग नाम सुन पाइ असीसा ॥

विष्णु मकरहित कुल उजियारा  
पुंछि खबरी करि हंड प्ररामा  
चहं दिग्गज कह नोयोसासा

राजासर्ग के ६० हजार पुत्रों को अश्वसेध के घोड़ा दंडन जाना और कपिलदेव के स्थान पर पहच कर कपिल मुनि के श्राप से ६० हजार का भस्म होना

कपिलदेव



इहिविधि साधतमगमद्गजाता  
चरन परत न्वआश्रय द्येऊ ॥  
मुनत वचन साच भया भारी ॥  
असमान तहं मज्जन कीन्हा ॥  
बहुरि गरुड बोले मुनु जाता ॥

मिले गरुड मुमती करभाता  
जरे सकल जेहि विधि सो कहेऊ  
लिये खगेश दिखाय लवारी ॥  
क्रम क्रम सबहि जलाजलि दीन्हा  
मै तोहिक हीं कारेहि एक बाता

सोखा कर मुन सीई उपाइ गंगा आवहिं अवनिमह ॥ ॥  
दर्शन ते अध जाय मज्जन कीन्हे परम सुख ॥ ॥

षटसहस्र तरि है र ही विधि ॥  
मुन अस वचन हृदय मन भाये  
तव रवगेश मुनि चरन न आयउ  
आयसु देइ तुरंग मुनि दीन्हा ॥  
नगर समीप गरुड पड़ चाई ॥  
इहां तुरंग लै नृपशिर नाई ॥  
विस्मय हरष विवस नृप भएऊ  
बहुविधि नृपति राज पुनि कीन्हा

गंगा पाय परम पावन निधि  
सहित गरुड मुनि वर पाहे आये  
पूर्व कथा सकल मुनि गायउ  
हरष हृदय निज अश्वहि चीन्हा  
गये भवन निज तव रघु राई ॥  
षटसहस्र मुनि कथा बुजाई ॥  
कीन्हा यज्ञदान बहु द्येऊ ॥  
प्रजालोक कह अति सुख दीन्हा

दोहा असुमान हित राज दे निज मन हरि पद लाग ॥  
गयेउ मगर तप काज वन हृदय अधिक अनुराग २३०

ता सुत नाम दलीप नृप भयेऊ  
उहां अगम तप कीन्हे नृपाला  
कहइ कवन दलीप प्रभु नाई  
जुगवत जेहि नित सुरपति रहै  
भागीरथ अस सुत भयो जासू ॥  
तिनहि बोल नृप दीन्हे उराजू  
मन कह करत पंच अनुमाना ॥  
निज मनु तनु दीनेउ निर्मि देऊ

मन तप हेतु उतर दिशि गयेऊ  
भए काल बस गये कछु काला  
सैवै सकल नृपति जेहि आई  
महिमा तासु कवि केहि विधि कहै  
पितु समनीत अधिक उरतासू  
आप चले उठि तपके काजू ॥  
सुरसरि आव तजइ नत प्राना  
फिरि जिजु नगर क नाम नलेऊ

सोता) एहि विधि करत बिचार न्यपकीन्हे तप प्रचल तव  
वीते कछु एक काल देह न जी कोऊ प्रगट नाहि

जेहि सुरसरि लागि तजेतन भूषा  
इहां भगीरथ अस मन भयेऊ  
काकुस्थ नाम नय एक रहेऊ  
कहि तव पूर्व कथा सुत पाहीं  
निकसत नगर सरगुन भल पाये  
देव भगीरथ बन सुरवपावा  
एक चान दाउ मुजा उठाये ॥  
सहस्र वारष वीते इहि मांती ॥  
देखि उग्र तप अज चलि आये ॥  
बहहि न्यपति जोले वरदाना  
जो मांगो सो जानत अहह

सोतजि मूढ पियह जल कूपा  
पितु न आव बह दिन चलि गयेऊ  
दीन्हार जनीति प्रह कहैजा ॥  
दीन्ह असीस चले नर नाहीं ॥  
अतिहीनि विड बन जहं न्यथाये  
सुरसरि हित तप कहं मन लावा  
रवि सन्मुख चितवाहि मन लाये  
जात न जाने दित अरु राती ॥  
बोले बचन न्यपहि मन भाये ॥  
बोले न्यप कर अजहि प्रसाधा  
मोसन मांगन प्रभु किमि कहउ

दोहा तदपि कहै प्रभु देह वर सब संतन कह बुद्धि ॥

दूसर मांगो जोरि कर गंगा आविहि निधि ॥ २३१

एवमस्त कहि पुनि विधि भवहीं  
कुर जाहि पुनि तुरत रसा नल  
तेहि ते कहौ एक तोहि याहीं  
सोइ शंकर रिव देव सर आजू  
अस कहि विधि अंतर हित भये  
विविधि बरय अंगुष्ठ अधारा ॥  
शिव दयाल प्रगट तव आई ॥  
मैराखव सुरसरि कह ईशा ॥

सुरसरि देह राखि को सकहीं ॥  
फिरिहिन न्यपति बहरि सुन भूतल  
अति दयाल शंकर मन भाहीं ॥  
उनहि जपे तक्ष होय है काजू  
बहरि भगीरथ शिव पहं राये ॥  
वारवार शिव नाम उचारा ॥ ॥  
हांथ जोरि न्यप विनय सुनाई ॥  
बहरि रमापति ध्यान करीशा

दोहा उहां देव सरि शिव बचन सुन मन कीन्ह विचार २३२  
जाहु रमातल शिव सहित लात न लाधौ बार ॥

अंतरजामी शिवहि उपाई ॥  
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही  
कूटे सोर भयो जग भारी ॥  
सुरसरि पुनि हरिजय समानि  
कौतुक देखि सकल सुर हरषे  
वहारी भगीरथ सुमरन्ह कीन्हा  
तेहिते भई तीन पुनि धारा ॥  
राइ नभ मोई किञ्चनसिनी

निज सिर जटा सो अगम बनाई  
सुनि मृदु गिरा छाड विधिदीन्ही  
चकित देवअहि दिग्गज चारि  
दर्य एक तह रही भवानी ॥ ॥  
कहि जयजयति सुमनवहवरषे  
हारिजय शिववुंदक दीचा ॥  
एक राई नभ एक पतारा ॥ ॥  
देवन धरा नाम मंदा किनी ॥ ॥

दोहा दूसर राई पतालमें नाम प्रभावति हरन डरव ॥  
तीसरि भई सोई गंगा सब संतन कौ करन सुख  
सलिल प्रवाह निराष नृपति उरच्यति भये अन्नंद  
जैसे सुमदत सिंधु तब पूरा कला लख चंद ॥ ५ ॥

आय भगीरथ पुनि सिर नाये ॥  
बेगवंत नृप रथ ले आनू ॥ ॥  
तेहि रथ चढि नृप चल मम अंगि  
मुनि नृप दिव्य तुरंग रथ आना  
चली अंगु करि नृपहि सुरसरी  
चलत तेज कछु चरनि न जाई  
कौ कुलाहल विधि बहुभाती  
मज्जन कराहि देव तह आई ॥

बोले सुरसरि बचन सुहाये ॥  
तुरन तुरंग सुभ गति जिमि भानू  
चलिहो मैं तब पाछे लागे ॥ ॥ ॥  
चले हृदय सुमित भगवान्ता ॥  
देवन्ह मुदित सुमन फर करी ॥  
टटहि गिरितरु शैल सुहाई ॥  
कमठ नत्र फष ब्याल सो माती  
सुन गति सिद्ध रहे सब छाई ॥

सौरा तरपन कर मन लाय हषे हृदय नहि जात कहि  
दरअन ते अधजाय तरे सकल मुनिजन कहे ॥  
मज्जन कर हरषाय सुरअजादि मन कारि नृषि  
पान करत अधजाय अस मन सब लोक कहहि

करे जो मज्जन जय मज्जलाई

निजको महिमा कहिन सिहाई

रथपरजात सो है नृपकैसे ॥

लाघित शैल सुहावन देशा

हरिद्वारसमीप तब आये ॥ ॥

तीर्थ निरखि मन भयो सुरवमारी

तहां मज्जन कीन्हें डरव जाई ॥

सो शिवपुरी सहज सुरव दाई

अबमै तीर्थ विविधि विधि जानी

मगलौ बानकहं करत सनाथा

तेजवंत रवि देखिय जैसे ॥

पाछे सुरसरि आगे नरेशा ॥ ॥

तीर्थ देख सुरसरि मन लाये ॥

आय प्रयाग पहंचि अघ हारी ॥

बहुरि देव सरिकाशी आई ॥

वरनिन जाइ मनोहर ताई ॥

गई तहां किमिकहौ बखानी ॥

जाइ बली इहि विधिरघुनाथा

भगीरथ करके रथाहट श्री गंगा जीका स्तुत्युलोक में आगमन और हरद्वार  
काशी आदि तीर्थों में होकर मागर में प्रवेश होना



दोहा मिलीआइ पुनिउदधि महउदधि हृदयसुखमान  
लगे कहन भागीरथहि नमसमधन्य न आन ॥॥

कीन्हो अस जो करहिन को ई ॥  
सगर सुत नय तेरे तन काला ॥  
अब लौ रहो है कुल महिके ऊ  
तुम समान नृप अवरन भयेऊ ॥  
सकल सुरन तहां संग विधाता  
घन्य भागीरथ जस जवा जयेऊ  
अपनी सत्य प्रतिज्ञा कियेऊ ॥  
गंगा सागर सब कोउ कहही ॥  
भागीरथी नाम अरु कहही ॥  
असविधि कह निज लोकाहि अये

तप महिमावल कस नहि होई  
हर्ष वंत तव भयो नृपाला ॥  
तिनके संग तेरे सब सोऊ ॥  
जग विख्यात अचल जस लयेऊ  
नृपसन आय कही सब बाता  
तुम समान नृप औरन भयेऊ ॥  
समंत वेद जनन सुख दयेऊ ॥  
अथ उलूक देखत रवि उरही ॥  
मुनसुर सिद्ध नाग जल लहही  
जहां मगीरथ अनि सुख पाये ॥

द्वन्द्व पायो अमित सुख बहारे पूजा सुरसीरहि मनलाइके  
तन दीन्ह अशिष सुदित गंगानृप भवन सुख पाइके  
इहि मांति सुन गंगा कथा तवराम रुचि चरन नये  
कह दास तुलसी राम लखराहि महा मुनि अशिष दये  
दोहा कौशिक अशिष अमिय सम पाप हरष रघुराजा ॥  
प्रभु शशय सब इम गई लवा निरधि जिमि बाज  
अशिष सुधा समान मुनि हरषे श्री रघुनाथ ॥  
प्रभु सुख पाय कहेउ पुनि वेगि चलिये मुनिनाथ

राम नाम ते संशय जाई ॥॥

इति

गाधि सुवन सब कथा सुनाई ॥  
तब प्रभु ऋषिनि समेत अन्हाये  
हीपि चल मुनिवन्द सहाया

देह धरे कर यह फल भाई ॥ ॥

जोहि प्रकार मुरसरी महि आई ॥  
विविध दान महि देवन पाये ॥  
वेगि विदेह नगर नियराया ॥

<p>पुराम्यता रामजब देखी ॥ वापीकूप सरित सर नाना ॥ गुंजत मजु मत रस भ्रंगा ॥ ॥ बरा बरा विकसे जलजाता ॥</p>	<p>हरषे अतुज समेत विशेषी ॥ सलिलसुधा सम भरिता सो वाता ॥ कूजत कल बह बरा विहंगा ॥ त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥</p>
<p>दोहा सुमन बाटिका वारा वन विपुल विहंग निवास फूलत फूलत सुपल्लवित सोहत पुर चहं पास ॥ २२४</p>	
<p>वैने न वरसात नरारनिकाई चारु वजार विचित्र अटारी ॥ ॥ धनिका वरिका वरधनद समान बौहट सुंदर गली सुहाई मंगल मय मंदिर सब करे ॥ ॥ पुर नार नारि सुभरा भुचि संता अति अनूप जह जनक निवास हीत चकित चित कोटि विलोकी</p>	<p>जहां जाइ मन तहां लुभाई ॥ मरिता मय विधि जनु स्वकार संवारी वैठ सकल वस्तु लै नाना ॥ ॥ ॥ संतत रहे सुगन्ध सिचाई ॥ चित्रत जनु राते नाथ चितेरे ॥ धर्मशील ज्ञानी गुरा वंता ॥ ॥ विष्य कहि विबुध विलोकि विलास सकल भुवन शोभा जनु रोकी ॥</p>
<p>दोहा धवल धाम मरिता पुर पट सुघटित नाना भांति ॥ २२५ सिय निवास सुन्दर सदन शोभा किमि कहि जात</p>	
<p>शुभरा द्वार सब कुलिश कपाटा बनी विशाल वाजि राजशाला सूर सचिव सेनप बह तेरे ॥ पुर बाहिर सर सरित समीपा देखि अनूप एक अं वराई ॥ कौशिक कहउ मोर मनमाना ॥ भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता विश्वासि त्र महामुनि चाये ॥</p>	<p>भूपभीर नट सागध भाटा ॥ ॥ ॥ हय गयरथ संकुल सब काला ॥ न्यप ग्रह सरिस सदन सब करे ॥ उत्तरे जहे तहं विपुल महीपा ॥ सब सुपास सब भांति सुहाई ॥ इहां रहिय रघुवीर सुजाना ॥ ॥ उत्तरे तहं सुनि नन्द समेता ॥ समाचार सिधला पति पाये ॥</p>
<p>दोहा संग सचिव भुचि भूरि भट भूसुर वर गुरु जाति ॥</p>	



दलेमिलन मुनिनायकहि मुदित राउ डाह मांति ३२६

कोन्ह मराम धरिग धरि आथा  
विषु बन्द सब सादा दुन्दे ॥ ॥  
कृशल अशुन कहि बाराहि वारा ॥  
तेहि अवनर आगे दोउ भाई ॥  
श्यामगौर मूढ वैश किशोर  
उठे सकल जब अचुपनि आये  
भय सब मुञ्चि देखि दउभाता  
सूरति मधुर मनोहर देवी ॥

दीन्ह अशोश मुदित मन नाथा ॥  
जानि भाग्यवद राउ अनेदे ॥ ॥  
विश्वामित्र नृपहि बैठारा  
गये रहे देखन फुलवाई ॥ ॥  
लोचन सुखद विश्वद वित चोग  
विश्वामित्र निकट बैठाये ॥  
वार बिलोचन पुलकित गाता ॥  
भयो विदेह विदेह विसेवी ॥

दोहा प्रेम खन मन जानि न्यप कारि विवेक धरि धीर

बालेउ मुनिपद नाथ शिर गहद गिरा गोभीर ॥ २२७

कहइ नाथ सुन्दर दोउ बालक  
ब्रह्म जो निगमनेति कहि गावा  
सहज विराग रूप मन मोरा  
नाते प्रभु पूछी सद भाऊ ॥  
इन्हि विलोकत अति अनुरागा  
कह मुनि विहंसि कहे न्यपनीका  
ये प्रिय सबहि जहां लागि प्राणी  
रघुकुल भरीा दशरथ केजाये

मुनिकुल तिलक कि न्यप कुलपाल  
उभयवेष धरि सोइकि आवा ॥  
थकित होत जिमि चंद चंकोरा  
कहइ नाथ जनि करइ दुराज  
बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा  
वचन तुम्हार न होहि अली का  
मन मुसकाहि राम मुनि वानी ॥  
मम हित लागि नरेश पठाये ॥

राम लषणा दोउ बंधु बर रूप शील बल धाम ॥

मख राखेउ सब साखि जग जीत अमुर संग्राम ॥ २२८

मुनि तब चरारा देखि कहराऊ  
सुन्दर श्यामगौर दोउ आना ॥  
इतकी प्रीनि प्रसपर पावनि ॥  
मुनइ नाथ कहइ मुदित विदेह

काहिन तको निज प्राय प्रमाऊ  
आनन्द ह के अनन्द दाता  
काहिन जाइ मन भाव मुहावि  
ब्रह्म जीव इष महज नन्द ॥

पुनिपुनि प्रसुहि चितव नरनाह  
 मुनिहि प्रशमि नाइ मदशीशा  
 सुन्दर सवन सुखद भवकाला  
 कार पूजा भवषोध सेवकाइ ॥

पुलकगात उर अधिक उकाह ॥  
 चले लिचाइ नगर भवनीशा ॥  
 तहाँ वास लै दीन्ह मुभ्राला ॥  
 गयेउ राउ गह विदा कराई ॥

दोहा ऋषय संगरधुवश मरिगा कार भोजन विधाय ॥  
 वैठे प्रभुभ्राता सहित दिवसरहा भरियास ॥ २२८

लषगा हृदय लाल मा विशेषी  
 प्रभुमय बहारे मुनिहिसकुचाही  
 मभ्रनुज मनकी राति जानी  
 परम विनीत सकुचि मुमुकाही  
 नाथ लषगा पुर देवन चहही  
 जो राउर अनुसासन पाऊ ॥  
 सुनि मुनीश कहवचनम प्रीती  
 धर्ममेतु पालक तुम ताता ॥

जाइ जनक पुर आदय देखी ॥  
 प्रकटन कहहिं मनहि मुसकाही  
 भक्ति बछलता हिप हलसानी ॥  
 विले गुरुअनुसासन पाई ॥ २२९ ॥  
 प्रभुसकाइ डर प्रगटन कहही  
 नगर देखाइ तुरत लै आऊ ॥ ३ ॥  
 कसन राम राखह तुम नीती ॥  
 प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥

दोहा जाइ देख आवह नगर सुख निधान बह भाइ ॥  
 करह सुफल सबके नयन सुन्दर वचन दिखाइ

मुनिपद कमल वन्दि सोउभ्राता  
 बालकचन्द देखि अतिशामा  
 पीतवसन परि कार कटिभाषा  
 तनुअनुहरत मुचंदन रवोरी  
 केहरि केदरवाह विशाला ॥  
 भुभरा प्रवशा सरसीरुहलोचन  
 कानन कनक फूल कवि देही  
 चितर्यानि चारु भकटिवरवाकी  
 दोहा रुचि कौतवी भुभगा शिर मेचक कुंचित केश ॥ २३० ॥

चले लोक लोचन सुखदाता ॥ ३ ॥  
 लगे सबालोचन मन लोभा  
 चारु चाप शर सोहत हाथा ॥  
 श्यामल गौर सनोहर जोरी ॥  
 उरअति रुचिर नाम मरिगामाला  
 वदनमयक नाथ त्रय मोहन ॥  
 विनयत विनहि चारु जनु लेही ॥  
 तिलक रेख शोभा जनु चङकी ॥

नरव शिव सुन्दर बन्धु दोउ शोभा सकल सुदेश २३१

देखन बगी भूष सुतआये ॥  
 धाय धाम काम सब त्यागे ॥  
 निरीखि महज सुन्दर दोउभाई  
 युवती भवन फोरवन लागी  
 कहहि परब्यं बचन मप्राप्ती  
 सुरनी अमर नाम मुनि माहीं  
 विह्वलवारि भुज विधि सुख चारी  
 प्रया देव अस को जगझाहीं ॥

समाचार पुर वासिन पाये ॥ ॥  
 मनहरक निधि लूटन लागी  
 होहि सुखी लोचन फल पाई ॥  
 निरखहि सम रूप अनुरागी ॥  
 सखि इनकोटि काम क्विजीती  
 शोभा अस कहें सुनियत नाही  
 विकटभय सुख पञ्च पुरारी ॥ ॥ ॥  
 इहि सीखि क्विपट त्रिये जाही ॥

दोहा बय केशोर सुखमा सदन प्रयाम गौर सुखधाम  
 अंग पर वारिये कोटि कोटि शत काम ॥ ॥ २३२

कहहु मर्वा असको तनुधारी  
 कोउ सप्रेम वाली मृदुवानी ॥  
 ये दोउ नृप दशरथ के बोर ॥  
 मुनि कौशिक मख के रखवारे  
 प्रयाम गात कलकंज विलोचन  
 कौशिल्या सुनसो सुखस्वानी  
 गौर किशोर भेष बर काछे ॥  
 लक्ष्मिना नाम राम लघु भ्राता

जान मोह यह रूप निहारी ॥  
 जोमै सुनासो सुनहु सयानी ॥  
 बाल मरालन के कल जोटा ॥  
 जिन रगा अजयनिशाचर मारे  
 जो मारीब सुभुज सद मोचन ॥  
 नाम राम धनु शायक पानी ॥  
 करत चाप राम के पाछे ॥ ५ ॥  
 सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दोहा विष्णुकाज करि बन्धु दोउ मरा मुनि बधु उधारि ॥  
 आयि देखन चाप मख मुनि हरयी सब नारि ॥ २३३

देखि राम क्वि कीउ इक कहई  
 जो मति इनहि देखि नर नाई  
 कोउ कह इन भूपति पहिचाने  
 सखि पानु प्रगा राउत जई ॥

योग्य जानकी यह बर अहई ॥  
 प्रगापरि हरि हरि को विवाह  
 मुनि समेत सादर सुन साने ॥  
 विधि वस हृदि अलिक्कहि भजई ॥

कोउ कह जौ भल बहे विधाता  
 तौ जानकिहि मिलि हवरयेह  
 जौ विधिबसअभवने संयोगू  
 सखि हमरे अति आरति नाते ॥

सब कह सुनियउचित फलदाता  
 नाहिन नाली यह संदेह ॥  
 तौकृत कृत्य होहि सब लोगू ॥  
 कबहंक ये आवहि इहि नाते ॥

दोहा नाहित हम कह सुनह सखि इन्ह कार दशनिदो  
 यह संघट तब होइ जब पुण्य पुराकृत भौर ॥ २३६

वेली अपर कहउ सखि नीका  
 कोउ कहेशंकार चापकठोरा ॥  
 सब अस संजसअहे सयानी ॥  
 सखि इन कहें कोउ अस कहही  
 परिस जासु पद यंकज धूरी ॥  
 सो किरहें विन शिवधनुतारे ॥  
 जेहि विरच रचि सीय सवारी  
 तासु बचन सुनि सब हरवानी

यह विवाह अति हित सब होका  
 ये श्यामल म्दु गान किशोरा ॥  
 यह सुनि अपर कहै म्दु वानी ॥  
 बड प्रभाव देवत लघुअहही ॥  
 तरी अहिल्या कृत अघ धूरी ॥  
 यह प्रतीति पारि हरियन भौर ॥  
 तेइ श्यामल वर खेउ विचारा ॥  
 ऐसोइ होउ कहहि म्दु वानी

दोहा हिय हरषहिं वरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनिरुन्द  
 जाहि जहां जहें वन्धु दोउ तहं तह परमानन्द ॥ २३७

पुर पूरब दिशि मे दोउ भाट्ट ॥  
 अति बिस्तार चारु राच दारी ॥  
 चहुं दिशि कञ्चन मंच विशाला  
 तहि पाछे समीप चहुं पासा ॥  
 कछुक ऊब सब भांति सुहाई  
 तिनके निकट विशाल मुहाये  
 जहें बैठी देखै पुर नारी ॥ ५ ॥  
 पुर वालक कहि कहि म्दु वचना

जहां धनुष सरव भूमि बनाइ ॥  
 बिमल बेदिका रुचिर संवारी ॥  
 रचे जहां वैठहि महिपाला ॥  
 अपर मंच मण्डली विलासा  
 वैठहि नगर लोग सब आइ ॥  
 धवल थाम बह बरसाव नाये ॥  
 यथा जोग निजकुल अनुहारी  
 सादर प्रमुहि दिषावहि रचना ॥

दोहा सब शिशु इहे मिसु प्रेमवस परस मनोहर गान ॥

तनु पुलकहि अति हर्ष हिय देगि २ दोउ भात २३६

शिशु सब राम प्रसवस जाने ॥  
निजनिज रुचि सब लेहि बुलाई  
राम दिया वहि अनुजहि रचना  
लवन मेष सह भुवन निकाया  
भक्ति हेत सोइ दीन दयाला ॥  
कौतुक देखि चले गुरु याही  
जासु नाम उर कहंडर होई  
कहि बातें मधु मधुर सुहाई ॥

पीते सनेत निकट बखाने ॥  
सहिन मनेइ जाहि दोउ भाई  
कहि मधु मधुर भता हरववना  
रचै जासु अनुशामन साया ॥  
चितवत चकित धनुष मख माला  
जानि विलम्ब चास मनसाही  
मजन प्रभाव देखावत साई ॥  
किये विदा बालक वरि आई

दोहा समय सप्रेम विनीति अति सुकुचि सहित दोउ भाई  
गुरु पद पंकज नाइ शिर बडे आयसु पाइ ॥ ५ ॥ २३७

निशि प्रवेश सुनि आयसु दीन्हा  
कहत कथा इतिहास पुरानी  
सुनि वर शयन कीन्हा तब जाई  
जिनके चरगा मरोरुह लारी  
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ॥ ५  
बार बार सुनि आशा दीन्हा ॥  
चापत चरगा लपरा उर लाये  
पुनि १ प्रभु कह सोवह ताता ॥

सवहीं सन्धी वन्दन कीन्हा ॥  
रुचि रजनी युग याम सिरानी  
लगे चरगा चापन दोउ भाई ॥  
करत विविध जप योग विरागी  
गुरुपद कमल पल्लारत प्रीते ॥  
रघुवर जाय शयन तब कीन्हा  
समय सप्रेम परस सुखपाये ॥  
पेटे घरी उर पद जल जाना ॥

दोहा उठे लपरा निशि विदात सुनि अरुन शिरवाधनिकात  
गुरुते यहिले जगत प्रति जागे राम सुजान ॥ २३८

सकल सोच करि जाइ नहाये  
समय जानि गुरु आयसु पाई ॥  
भूप वारा वर देखेउ जाई ॥ ॥  
लगे विरय मनोहर नाना ॥

नित्य निवाह गुरुहि शिरनाप  
लेत प्रसून्हा चले दोउ भाई  
जह वसंतु ऋतु रहै सुभाई  
बराबरगा वर नलि बिताना ॥

नव यज्ञव दल सुमन सुहाय  
 बालककोकिल कौं चकारा  
 मध्य वाग सर सोह सुहावा  
 अमल सलिल सरसिज बहुरंगा

निज सपति सुतरुहि लजाये  
 कृजत विहरा नचत कलमोरा  
 मरिा सो पान विचित्र बनावा  
 जल खरा कृजत सज्जत मरुगा

दोहा वाग तडाग विलोकि प्रसु हर्षे बन्धु समेत ॥

परमस्य आराम यह जो रामहि सुखदेत ॥

बडादीश चितै पाछे मालेतान  
 तोरे अक्षर सीता तहं आई  
 संग सर्वा सब सुभग सधानी  
 सर सनीप गिरजा गृह सोहा  
 सजन करि सर सर्वा लमेता

लगे लेन दल फूल सुदित मन  
 गिरजा पूजन जननि पठाई ॥  
 गावहि गीत मनोहर वानी ॥  
 वरिा न जाय देखि मन सोहा  
 गई सुदित मन वीरि भिकोता

छारामचंद्र अरु लक्ष्मणा जी का पुथ्य वारिका में जाना और जानकी  
 जीका गिरजा पूजनाये आना



<p>पुजा कीन्ह अधिक अनुरागा एक सखी सिय संग विहाई ॥ ते इ दोउ बन्धु विलोकउ जाई ॥</p>	<p>निज अनुरूप भुभवावर माया गई रही देखन फुलवाई ॥ प्रेम बिबस सीता यह आई ॥</p>
<p>दाहा तासु दशा देखी सरिवन पुलक गात जलनयन कह कारणा निज हरख कर पूंछहि सब म्दुवयन २४०</p>	
<p>श्याम गोर किभि कहौं वरानी देखन बाग कुंवर दोउ आये ॥ मुनि हरषी सब सखी सयाली एक कहहि नृप सुत ते आली सिन निज रूप मोहनी डारि ॥ ॥ वरणात छवि जहं तहं सब लोग तासु वचन अति सियहि सुहाते चली अरु करि प्रिय सरिव सोई</p>	<p>गिरा अनयन नयन विनु वानी नय किशोर सब भौंति सुहाये ॥ सिय हिय अति उतकंटा जानी ॥ सुने जे मुनि संग आये काली कीन्ह स्ववस नगर नर नारी ॥ अवसि देखिये देखन योबू ॥ दरश लागि लोचन अकुलाने प्रीति पुरातन लखेन कोई ॥</p>
<p>दोहा सुभिर सीय नगर बचन उपजी प्रीति पुनीत ॥ चाकेत बिलोकत सकल दिशि जनु शिशु स्त्री मभौत २४१</p>	
<p>कंकरा किंकिरी नपु अधुनि सुनि गान्ह मदन दुंदभी दीन्हो ॥ अस कहि फिरा चितये तेहि अंगार मय विलीचन चारु अचंचल ॥ दरिब सीय शोभा सुख शवा ॥ जनु विरचि सब निजनि पुराई सन्दरना कहं सुन्दर करे ॥ सब अपिना कवि रहे जदारी ॥</p>	<p>कहत लवसासन राम हृदय सुनि मनसा विश्व विजय कह कीन्हो ॥ सिय सुख शशि भय नयन चकोरा मनह सकुचि तिमि त जे उदगंच हृदय सराहत वचन न आना ॥ विरचि विश्व कह प्रगट दिखाई छवि बरह दीप शिखर जनु बरई ॥ किहि पर तरिये विदेह कसारी ॥</p>
<p>दाहा सिय प्रेमा हिय वरौ शिशु आयनि दशा विचारि बोले सुवि मन अरु ज सन वचन समय अनुहारि २४२</p>	

तातजनक तनया यह सोई॥  
 पूजन गौर सखी ले आई॥  
 जासु बिलोकि अलोकि शोभा  
 सो सब कारणा जान विधाता  
 रघुवंशिन कर सहज सुमाऊ  
 मोहि अति शय प्रतीति जिय करी  
 जिनके लहहिं नरिपुरापीठी  
 मंगल लहहिं न जिनके नाही

धनुष यज्ञ जहि कारणा हाई॥  
 कर्तते प्रकाश फिरत फुलवाई  
 सहज पुनीत मोर मन छोभा॥  
 करकाहि गुभग अंग सुसुधा॥  
 मन कुपन्य पग धरे न कारु  
 जहि सपनेह पर नारि न हरी॥  
 नहिं लावहि पर त्रिय मत ताठी  
 ते नर बर थारे जग साहा ॥

दोहा करत बत कही अनुज मन मन सिय रूप लभान  
 सुख सरोज मकरन्द छवि करत मधुपदुव याम २५३

चितवत चकित चहें दिशि सीता  
 जह बिलोकि नरगशावक नयनी  
 लता अघट तव सखिन लषाय  
 देखि रूम लोचन ललचाने  
 थके नयनरघुपति छवि देखी  
 अधिक सनेह देह भई भोरी  
 लोचन मगु रामहि उर आनी  
 जह सिय सखिन प्रेम बस जानी

कह गये न्य किशोर मनघोता  
 जनुतहं वरष कमल सितप्रयनी  
 प्रयासल गौर किशोर सुहाये॥  
 हरषे जनु निज तिथि पहिचाने  
 पलक नहं पारि हरी निसेषी॥  
 शरद शशिह जनु चितव पकोरी  
 दीन्ह पलक कपाट सयानो॥  
 कहिन सकहिं कछु मन सकुना

दोहा लता भवनजे प्रगाए भे तोह अवसर दोउ भाई  
 निकसे जनु युग विमल बिघु जलद पटल बिलगाई

शोभा सीव भुभग दोउ बीरा  
 काक पक्ष सिर सोहत नीके॥  
 भाल तिलक अम विन्दु सुहाये  
 विकट भ्रुकुटि कच घुघरावो  
 चारुचिबुक नासिका कपोला

नील पीतजल जात शरीरा  
 रुच्छा विच रकुसुम कली को॥  
 श्रवण सुभग भूवरा फाव छाये  
 नव सरोज लोचन रतनार॥  
 हास विलास लेत जनु मोला



सुरव कवि कहिन जायमाहिपाही  
 उरमाया माल कवु कलगीवा  
 समन समन नाम कर दोजा॥

जो विलोकावृद्ध काम लजाही  
 काम कलभ कल मुजवल सोवा  
 सांवा कुंवर सरवी सुठिलोनी

दोहा केहरि कटि पर धीत धर सुरवमा शीलनिधान

देखि भानुकुल मुषाहि विसरा सविन अपान २४५

चरि धीरज इक सरवी सयानी  
 बहरि गौरि कर ध्यान करेह  
 सकुचि सीय तव नयन उधारे  
 नख सिख देखि राम की शोभा  
 या बस सारिन लखी जव सीता  
 पुनि आउव इहि विरिया काली  
 गव गिरा सुनिसिय सकुचानी  
 धीरे वडि धीर राम उर अ्यानी ॥

सीता मन बोली गहि पानी ॥  
 भूप किशोर देखि किन लेह ॥  
 सन्मुख दौर रघुवंश निहारै  
 सुमिरि पिता प्रामन अति छोभा  
 मये गहरु सव कहहि समीता  
 अस कहि मन दिहसी इक अली  
 भयउ विलम्ब सात भय मानी  
 फिर अथन प्रामा पितवस जानी

दोहा देवनमिसुमृग विहंग तरु फिर बहोरि बहोरि

निरखि २ रघुवीर कवि बाटी प्रीति न चोरि ॥ २४६

जानि कठिन शिव चाप विसरति  
 प्रभु जब जान जानकी जाली  
 परम प्रेम गय महु नसिकी ल्ही  
 गई भवाली भवन बहोरी ॥  
 जय जय जय गिरराज किशोरी  
 जय राज वदन घड़ा ननमाता  
 नाहि तब आदि सध्य अवमाना  
 भव भौ विभव पराभव कारिगा ॥

चली राखि उर श्यामल मूर्ति  
 सुरव सनेह शोभा गुरा खानी  
 चारु चित्र भीतर लषि लोन्ही  
 बंदि चरणा बोली कर जोरी ॥  
 जय महेश सुरव चन्द चकोरी  
 जगत जननि दामिन द्युति गात्रा  
 अमित प्रभाव वेद नाहि जाना  
 विश्व विमोह निसुवस विहारिगानि

दोहा पाति देवता सुतीय महं मातु प्रथम तवरेख

सहिता अमित न कहि सकहि सहस शारदा शेष

सेवत तोहें सुलभ फलचारा॥  
 देवि पूजि पदकमल तुम्हारे॥  
 मोर मनोरथ जानहु नीके॥  
 कीन्हउ प्रगट न काररातिही॥  
 किनय प्रेम वस भई भवानी॥  
 रादर सिय प्रसाद उर घरेऊ॥  
 मुनु सिय मत्य अश्रीश हमारी  
 नारद वचन सदा भुचि सांचा

वादायान त्रिपुराग प पाग॥  
 सुरनर मुनि सब होहें सुरवारे॥  
 बसहु सदा उर पुर सब हो क  
 अस कहि चरगा गह बैदही॥  
 खमी माल मूरते सुसकानी॥  
 बेली गौरि हर्ष हिय भरेऊ॥॥  
 पूजिहि मन कामना तुम्हागी॥  
 सो बर मिलिहि जाहि मनरा ॥

कन्द मन जादूराचे भिलाहि साबर सहज सुन्दर साधो  
 करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥  
 यहि भाति गौरि अश्रीश मुनिसिय सहित हिय हर्षित्मली  
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि रमुदित मन मंदिर चली ३२  
 सो जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्षन जाय कहि ॥  
 मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥॥ ३४

हृदय सराहत सीय लुनीई ॥  
 राम कहा सब कोशिक पाही ॥  
 सुमन पाई मुनि पूजा कीन्ही ॥  
 सुफल मनोरथ होइ तुम्हारे ॥  
 करि भोजन मुनिवर विज्ञानी  
 विगत दिवस मुनि आय सुपाई  
 प्राची दिशि शशिउपडे सुहावा  
 वज्ररि पिचा कीन्ह मन माही

गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥  
 सरल सुभाव कुआ कुल नाही ॥  
 पुनि अश्रीश दोउ मादन्ह दीन्ही  
 राम लखन सुनि भये सुरवार ॥  
 जबी कहन कछु कथा पुरानी ॥  
 मन्धा कररा चले दोऊ भाई ॥  
 सिय सुख सरिम देखि सुख पाव  
 सीय वदन सम हसकर नाही

जन्म सिन्धु पुनि यधु विष दिन मलीन मकलक  
 सिय सुख समना पाव किमि चन्द वापुरो रंक ॥ ३६ ८

घटे बदे विराहन सुख दाई ॥ यसे राहति जसान्याहे पाई ॥

कोक प्रोक्त प्रद पंकजद्रोही  
 वेदही सुरव पट तर ही न्हे ॥  
 सिय सुरव छवि विधु व्याज वरवानी  
 करि मुनि चरणासरोज प्रसासा  
 विगत निष्पार घुनाय कजागे  
 उगेउ अरुणा अवलो कहुताता  
 बोले लक्ष्मणराजो रिजुग यानी

अवगुरा बहुत चन्द्रमा तोही  
 होय दोष वड अनुचित की न्हे  
 गुरुपहं चलै निष्पा वड जानी  
 आयसु पाय की न्हे विश्वासा ॥  
 वन्धु विलोकि कहन असलारो  
 पंकज कोक लोक सुरवदाता  
 प्रभु प्रभाव सूचक म्स्ट दु वानी

दोहा अरुणोदय सकुचे कुमुद उड गारा ज्योति मलीन  
 जिम्मितुम्हार आगमन सुनि भये न्दपति वल हीन

लारिन सकहिं चाप तम भारी  
 हरये सकल निष्पा अत्र साना

नरपशव नरवत करहिं उजियारी  
 कमलकोक मधुकर रवगाना  
 स्नेहि प्रभु सनभक्ति तुम्हारे  
 उदय भानु विनु अम तम नासा  
 रविनिज उदय व्याज रघुराया  
 तव भुज वल महिमा उदघाटी  
 वन्धु वचन सुनि प्रभु सुसकाने  
 नित्य क्रिया करि गुरुपहं आये  
 सतानन्द तव जनक वुलाये ॥  
 जनक विनय तिन आय सुनाई

हुरये सकल निष्पा अत्र साना  
 होइ हहिं दूटे धनुष सुखारे  
 तुरे नरवत जेरा तेज प्रकासा  
 प्रभु प्रताप सच न्दपन दिरवाया  
 प्रगत धनुष विघरन परि पाटी  
 होइ सुचिसरुज पुनीत नहाने  
 चरणासरोज सुभग प्रिय नाये  
 कौशिक सुनि पहं तुरत पठाये  
 हरये बोलिलिये दोउ भाई

दोहा सतानन्द पद बन्धि प्रभु वेद गुरुपहं जाय ॥

चलहु तात सुनि कहेउ तव पठ वाजनक वुलाय

सीय स्वयं वर देरिवय जाई ॥  
 लक्षणा कहाय प्रभाजन सोई  
 हरये सुनि सच सुनि बरवानी  
 सुनि सुने वृद्ध समे त कपाला

दूपा काहि धीं वेय वडाई ॥  
 नाथ कृपा तव जापर होई  
 दीन्ह अप्री प्रसवहिं सुरवामी  
 हरवने वले धनुष मधु प्राला

रत्नभूमि श्यामैराज भाई ॥  
 चले सकल प्रहकाजविसारी ॥  
 देखी जतक नीर भई भारी ॥  
 इति सकल लोगान पहं जाऊं

अससुधि सब परासिन आई  
 बालक युवा जहर नर नारी ॥  
 श्रुचि सेवक सब लिये हंकारी ॥  
 आसन उचित देह सब काह ॥

इति कृति सटु वचन विनीत निन वेगारे नर नारी ॥  
 गोग्र मध्यम तीच लहु निज रथल अनु हाहि ॥ २५१

राज कुंवर तेहि अस्वसाश्याये ॥  
 गुणासारा नगर बर बीरा ॥  
 राज समाज विराजत रुरे ॥  
 जिनके रही भवाना जैसी ॥  
 देखीह भूप महाराणा धीरा  
 इरे कुटिल न्यप प्रभुहि निहारी  
 रहे अमुर छल जो न्यप बेखा ॥  
 पुर वासिन देखे दोउ भाई ॥ ॥

मनोसलो हरता छवि छवि ॥  
 सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥  
 उड गुणा महजनु युगावधुपूर  
 प्रभु मूरति देखी तिन तैसी  
 मनह वीर स्म धरे शरीरा ॥  
 मनह भयानक मूरति भारी  
 तिन प्रभु प्रगठ काल सम देख  
 नर भूषण लोचन सुखवाइ ॥

दो० नारि विलोकाहि हरषि हिय निज ररुचि अनु रूप  
 जनु सोहत श्रंगार धरि मूरति परम अनूप ॥ २५२

विदुषन प्रभु विराट मय वीशा  
 जनक जाति अवलोकाहि कैसे  
 सहित विदेह विलोकाहि रानी ॥  
 योगिन परमतत्व मै भासा ॥  
 हरि भाक्तन देखउ दोउ भाता  
 गमाहि चितव भाव जोहि सीया  
 उ अनुभवति न कहि सक कोऊ  
 जिह विधिरहा जाहि जसभाऊ

वह सुखकार पग लोचन शीशा  
 सजन संगे प्रिय लागाहि जैसे  
 शिशु सम प्रीति न जाय वधानी  
 सन्त शुद्ध मन सहज प्रका म  
 दूय देवद्वसम सुखदाता ॥  
 सो सनेह सुख नहि कथनीया  
 कवन प्रकार काहि कवि कोऊ  
 नेइ तस देखेउ कोशल राऊ ॥

दो० राजत राज समाज मह कोशल राज किशोर

मुन्दर प्रयागमल गौरतनु विश्व विलोचन चोर ॥ ३५३

सिंहज मनोहर मुरति दोऊ ॥  
 रागद चन्द निन्दक मुख नीके ॥  
 चितवनि चारु मारु मद हरणी ॥  
 कलकपील श्रुति कुडललोला  
 कुबुद वन्धु कर निन्दक हासा  
 भाल विशाल मिलक कलकाहो  
 पीत चौतनी शिरन सुहाई ॥  
 शैवी रुचिर कम्बु कलगीवा ॥

कोटिकाम उपि मालघुसोज  
 नीरज नयन भावते जीके ॥  
 भावत हृदय जाय नहि वसा ॥  
 विवुक अधर मुन्दर रसुदोला  
 भकुटी विकट मनोहर नासा ॥  
 कच विलोकि श्रील श्रवलिलजहो  
 कुमुम कली विचवाच वनाई ॥  
 जनु त्रिभुवन सुखसा की सीवा ॥

दो० कुंजर मरिण करछ नलित उर तुलसी की माल  
 वृषभ कन्ध केहरी ठवनि बल निधि वाह विशाल ३५४

काटि तूगीर पीत पट बांधे ॥ ५ ॥  
 पीत यज्ञ उपवीत सुहाई ॥ ५ ॥  
 देखि लोरा सब भये सुखारे ॥  
 हरषे जनक देखि दोऊ भाई ॥  
 करि विनती निज कथा सुनाई  
 जहं जहं जाहि कुवर वर दोऊ  
 निज रुचिरा सहि सब देखेवा ॥  
 भलि रचना न्यप सेन सुनि कहैऊ

कर शरधनप वामकर काधे ॥  
 नरव निशिमंजु महा कृवि काई  
 इकटक लोचन दाहि न टारे ॥  
 मुनि पद कमल गहे तब जाई  
 रंग श्रवनि सब मुनिहि दिखाई  
 त इतहं चकित चितव सबकोऊ  
 कोऊ न जान काछु सम विशेषा  
 राजा मुदित परम मुख लेऊ

दो० सब मज्जन ते मन्व इके मुन्दर विशार विशाल  
 सुनि समेत दोऊ वन्धु तहं वेठारे महिपाल ॥ ३५५

प्रभुहि देखि सब न्यप हिय हारे  
 अस प्रतीति तिनके मन माही  
 श्विन संजेइ भव धनुष विशाला  
 श्विहसे अपर भूप सुनि बानी ॥  
 अस विचारि रावने उधर आई

जनु रागेश उदय भय तारे ॥  
 राम चाप तोरब शक नाही ॥  
 मेलहि सीय राम उर माला ॥  
 जे श्रविवेक श्रन्ध श्रमिसानी ॥  
 जे प्रताप बल तेज गवाई

<p>तोरु धनुष व्याह अवशाहा                  एकवार कालह किन होई ॥                  यह सुनिअपर भूप सुसकानि ॥</p>	<p>बिनु तोरे को कुंवरि विवाहा ॥                  सिय हित समर जितव हम सोई                  धर्मशील हरि भक्त सयानि ॥</p>
---	--

सो० सीय विवाहव राम रावे दूरि करि न्यपन कार ॥  
 जीत को सक संग्राम दसरथ के राा वाकार ॥ २५६

<p>वथा सरह जानि गाल वजाई                  शिव हमार सुनु परम पुनीता                  जगत पिता रथुपनिहि विचारी                  सुन्दर सुखुद सकल गुणा राशी                  सुध समुद्र समीप विहाई ॥                  करह जाइ जा कह जोइ भावा ॥                  अस कहि भले भूप अनुरागे ॥                  देखहि सुर नभ चंद विभाता ॥</p>	<p>सन मोदक नहि भूख बुझाई ॥                  जग दम्बा जानहु जिय सीता ॥                  भरिलोचन हृदय लेह निहारी                  ये दोउ बन्धु शम्भु उर वाशी ॥                  मृग जल निरखि सरह कत जाई                  हम तो आजु जन्म फल पावा ॥                  रूप अनूप बिलोकन लारो ॥                  वर यहि सु मन कराहि कल गावा ॥</p>
--	---

दो० जानि सु अक्षर सीय तव पठवा जनक बुलाइ  
 चतुर सरवी सुन्दरी सकल सादर चली लिवाई ॥ २५७

<p>सिय शोभा नहि जाइ वषानी                  उपिमा सकल मोहि लघुलागी                  सीय वरन तेहि उपिमा देई ॥ ॥ ॥                  जो पट तरिय तीय सम सीया ॥                  गिग सुखर तनु अहू भवानी                  विष वासुणी बन्धु प्रिय जेही ॥                  जो कवि सुधा प्रयोनिधि होई                  शोभा रज मंदर भृंगारू ॥ ॥ ॥</p>	<p>जगदम्बिका रूप गुणा खानी                  प्राकृति नारी अंग अनुरागी ॥                  को कवि कहे अयश को लेई ॥                  जग अस युवति दहकम नीया ॥                  रति अति इरिबत अतनु पतिजानी                  कहिय रसा सम कमि बैदेही ॥                  परम रूप मय कच्छप सोई ॥ ॥ ॥                  मथे पारिा पकज नित मारू ॥</p>
---	---

दो० यहि विधि उपजेल सिजब सुन्दरता सुख मूल  
 तदपि सकाच समेत कवि कहहि सीय सम तूल २५८

बलीं संग लै सरवी सयानो ॥  
 सोह नवल तन सुन्दर सारी  
 भूषण सकल सुदेश सुहायो ॥  
 रंग भूमि जव सिय प्रगुधारी ॥  
 हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई ॥ ॥  
 सीय चकितचित रासहि चाहा  
 यारि। सरोज सोह जयमाला  
 मुनि समीप बैठे दोउ भाई ॥

गावत गीत मनोहर बाना ॥ ॥  
 जगति जननि अतुलित क्विभार  
 अंग अंगारवि सारिन बनाये ॥  
 देविरूप मोह नर नारी ॥ ॥  
 वीर्य प्रभूत अप्सरा गाई ॥ ॥  
 भये मोह बस सब नर जाहा ॥  
 औचक चिते सकल सहियाला  
 लगे ललकि लोचननिधियाई

दो० गुरुजन लाज समाज वाडे देखि साय मकुचानि  
 लगी विलोकन सखिन तन रघुबीराहे उर आति २५८

राम रूप अरु सिय कृषि देवी  
 सोचहि सकल कहत सकुचाही  
 हरु विधि वेगि जनक जडाई  
 बिन विचार प्रानजि नर चाह  
 जगभल कहेहि भाव सबकाहे  
 यह लालसा मगन मड लोचू  
 तव बन्दी जनक बुलाये ॥  
 कह नप जाइ कहइ प्रणामोरा

नर नारिन यारि हरी निमशा ॥  
 विधि सन विनय कारि मन मही  
 मति हमार अस देह सुहाई ॥  
 सीय राम कर करे विवाह ॥ ॥  
 हठकीने उर अंतर दाह ॥ ॥ ॥  
 घर सावरा जानकी योगी ॥ ॥  
 बिरदा क्ली कहत चलि आयी ॥  
 चले भार हिय हर्ष न योगी ॥

दोहा बलि बन्दी वचन वर सुनह सकल सहियाले ॥  
 प्रणाम विदेह कर कहहि हम भुजा उदाय विशाल २५९

नप भुजबल विधु शिवधनुराह  
 रावरा वारा महा भठ भारे ॥  
 सोइ प्रारि को दण्ड कठोर  
 विधुवन जय समत वै देही ॥ ॥  
 सुवि प्रणाम सकल भूषणमिलाये

गरु अकठोर बिदित सब काह  
 देखि सगसन गवहि सिधारे ॥  
 राज समाज आजु जेहि तोरा ॥  
 विनय विचार वर हई तोही ॥  
 मरमाने प्रति शयमन साये ॥

धीर कर बांध उठे अकुलाई ॥  
नमकिनकि तकि शिवधनुषरही  
जिनके कछु विचार मन माही ॥

नले इष्ट देवन शिर नाई ॥ ॥  
उठे न कोटि भांति बल करही  
चापसमोप महीप न जाही ॥

दोहा तमक धरहि धनु मूढ नप उठइ न चलाह लजाइ  
मनह पाइ भटवाहु बल अधिक २ गलु आइ

भयसहस दस एकाहि बारा ॥  
शौनशाशु शरासन कैसे ॥ ॥  
सब नप भये योग उपहासी ॥  
कोरति विजय वीरता भारी ॥  
श्री हन भये हारि हिय राजा ॥  
नपन विलोकि जनक अकुलाने  
दोप द्वीप के भूपति नाना ॥ ॥  
देव दनुज धरि मनुज शरीरा  
धनुष धनन के लिमित सम्युर्गा राजा लोगो का जाना और धनुष का न

लगे उठावन दगहन धरा ॥  
कामी बचन समी मन जैसे ॥  
जैसे विनु विराग सन्यासी ॥  
चले चापकर सरवस हारी ॥  
वेद निज निज जाइ समाज ॥  
बोले वचन रोष जनु साने ॥  
आये सुनि हम जो प्राण ठाना  
विपुल देव आये रा धीरा





<p>दोहा कुंवारी मनोहर विजय बडि कीरति अतिकमनीय पावन हारबिरचि जनु रचिउ न धनु दमनीय ॥ २६१</p>	
<p>कहह कहि यह लाभन भाव रहा चढाउव तोरब भाई ॥ ॥ अब जनि कोउ भारै भटमानी तजहु आस तिज अरुह जाहु सुकत जाय जो प्रसापरि हरु जौ जन त्यो विनु भटभुइ भाई जनक बचन सुनि सब नरनारी भारै लषणा कुटिल भै भौहै</p>	<p>काहन शंकर चाप चढावा ॥ ॥ तिलभरि भूमि न सकै उ कूडाई वीर विहीन मही में जानी ॥ निरवान विधि बैदहि विवाह ॥ कुंवारी कुवारि रहे का करज ॥ तौ प्रसा करिहो त्यां न हंसाई ॥ देवि जानकी भये डखारी ॥ रदपट फारकत नयन रिसेहै ॥</p>
<p>दोहा कहिन सकत रघुवीर डरलरो बचन जनु वारा नाइ राम पदक मल शिर बोले गिरा प्रमारा ॥ २६२</p>	
<p>रघुबसिन महजह कोउ होई कहौ जनक जस अनुचित बानी सुनहु भानु कुल पंकज भानू ॥ जौ राउर अनुशासन पाऊं ॥ काचे घट जिमि डारो फोरी ॥ तव प्रताप महिमा भगवाना नाथ जानि अस आयसु होई कमल नाल इमि चाप चढावौ</p>	<p>तोह समाज अस कहन कोई ॥ विद्यमान रघुकुल मगिा जानी ॥ काहौ सुभाष न करु अभिमान कन्दुक इत ब्रह्मारेण्ड उखावौ ॥ सकौ भैरु मूलक इव तेरी ॥ ॥ का वापुरो पिनाक पुराना ॥ ॥ कौतुक करी विलोकिय सोऊ ॥ शतजोजन प्रमारा लै धावौ ॥</p>
<p>दोहा तौरौ छत्रक दण्ड इव तव प्रताप वल नाथ ॥ जौन कौ प्रभु पद सपथ पुनि न धरौ धनु हाथ ॥ २६३</p>	
<p>लक्षणा सुकोप बचन जव डाले सकल लोक सब भूप डरान ॥ शुररघुपति सब सुनि मन साही</p>	<p>डगमगानि माहि दिग्गज डोले सिय हिय हरवि जनक सकुचाने सुदित भये पुनि २ पुल काही ॥</p>

सैनहिं रघुपति लवणा निवारै ॥  
 विप्रवामित्र समय प्रभुजानी ॥  
 उठहु राम भंजहु भव चापू ॥  
 सुनि गुरुपवन चरगा सिरनावा  
 दाद भये उठि सहज सुभाये ॥

प्रेम समेत निकट वैदारे ॥  
 बाले अति सनेह मृदुवानी ॥  
 मेदहु तात जनक परितापू ॥  
 हय विषाद न कह्यु उर आवा  
 ठवनि युवा मगराज लजाये ॥

दोहा उदित उदय गिरि मञ्चपर रघुवर बाल पतंगी ॥  
 विकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भुंगी ॥ २६४

नृपत की आशा निश नामी  
 मा गीमहि प कुमुद सकुचाने  
 भये विशोक कोक सुनि देवा ॥  
 गुरुपदवन्दि सहित अ नुरागा ॥  
 सहजहिं चले सकल जग स्वामी  
 चलत राम सब पुर नर बारी ॥  
 बदि पितर सुर सुकत संभारे ॥  
 ती शिव धनुष मरालकी नाई

वचन नखत अवलीन प्रकारी  
 कपटी मूप उलक लुकाने ॥  
 वयेहि सुमन जनावहि सेवा ॥  
 राम सुनिन सने श्यायमु भागा  
 मत्त मंजुकञ्जर बर गामी ॥  
 पुलकि पूरितन भये सुरवारी ॥  
 जो कह्यु पुन्य प्रभाव हमारे ॥  
 तोरि हराम गरोश गुसाई ॥

दोहा रामहि प्रेम समेत लखि सखिन ससत बुलाइ  
 सीता मातु सनेहवस वचन कहै विलखाइ ॥ २६५

सखि सब कीतुक देखन हारे ॥  
 कोउन बुझाय कहे न्ययाही ॥  
 रावरा वारा कुञ्ज नहि चापा ॥  
 सोधनुराज कुवर कर देही ॥  
 भूप सयानघ सकल सिरानी ॥  
 बाली चतुर सखी मृदुवानी ॥  
 कह कुभुज कह मिथु अपारा  
 रवि मण्डल देवत लघु लागी ॥

जोउ कहावत हित हमारे ॥  
 ये बालक अस हट भल नाही ॥  
 हारे सकल मूप करि दापा ॥  
 बाल मरालकि मन्दर लेही ॥  
 सखि विधि गतिकहु जायन ज  
 तेजवंत लघु गनियन रानी ॥  
 शीषउ सुयश सकल संसारा  
 उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ॥

दोहा मंत्र परम लघु जामुवस विधि हरिहरसुरसर्व  
महासत गजराज कहवस का अकृषा खव्वी ॥ २६६

काम कुसुम धनुशायकलोन्ह  
दोषि तजिय शशय असजानी  
मेरवी बचन सुनि भई परतीती  
तत्र रामहि विलोकि वेदेही ॥  
मनही मन मनाय अकुलानी  
करइ सुकल आपति सबकाई  
गरा नायक बर दायक देवा  
बार बार विनती सुनि मेरी ॥

सकल भुवन अपन वश काल  
मंजव धनुष राम सुनु रानी  
मिरा विषाद वदी अस प्रीती ॥  
सभय हृदय विनवति जेहि तहा  
होइ प्रसन्न महेश भवानी ॥  
हरि हित हरइ चाप गरु आवी ॥  
आजु लगे कोन्ही तव सेवा ॥  
करइ चाप गरुता अति थोरी ॥

दोहा दोरिव दोरिव धुवीर तन सुन मनाव धारि धार  
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलका वली शरीर ॥ २६७

नीके निरखि नयन भारे शोभा  
अहह तात दारुन हटवानी ॥  
सचिव सभय सिरव देइ न कोई  
कइ धन कुलिशाइ चाहि कठोरा  
विधि कोहि भाति थरो उर धोरा  
सकल सभा की सति भई मेरी  
निज जड़ता लागन पर डारी ॥  
अति प्रताप सीय मन माही

पितु प्रताप सुमिरि बहुरि मन शोभा  
समुजत नहि कछु लाभनहानी  
बुध समाज बड़ अनुचित होई  
कह प्रयासल सुद जात किशोरा  
सिरस सुमन किसि वेधाहि होगा  
अब मोहि शम्भु चाप सति तोरी  
होइ हरुअ रघुपतिहि निहारी  
लवनि मेघ युग सस चलि जाही

दोहा प्रभुहि चिते पुनि चिते सहि सजन लोचन लोल  
खेलत मन सिज मीन युग जनुविधि मरुडल जोल ॥ २६८

गिरा अलिन मुख पंकजरोकी  
लोचन जल रह लोचन कोना  
सकुची व्यकुलता वडिजानी

प्रराटन लाल निशा अव लोकी  
जैसे परम कपरीा कर सोना ॥  
धर धीरज प्रतीति उर आनी

तनमत्तवचनमोरप्रनसांचा  
 तो भगवान् सकल पुरवाशी  
 जेहि के जिह पर सत्य सनेह  
 प्रभु तन चिते प्रेम प्रसाठाना ॥  
 सियहि विलोकितके उधनुकेस

रघुपति प्रद सरोज मनसांचा  
 करहिहि मोहिं रघुपति की दाम  
 सो तेहि मिलत न कुछ संदेह  
 कृपा निधान राम सब जाना  
 चितवगरुड सघुव्यालहिजेसे

दोहा लखरा लखेउ रघुवंश मरिा नाकेउ हरको दरुड  
 पुलकि रात बेलि वचन चरसा चापि ब्रह्मरुड २६६

दिशिकुंजरु कसठ अहिकोला  
 राम चहहि शंकर धनु तोरा ॥  
 चाप समीप राम जब आये ॥  
 सब कर संशयं च्छे रूअ जान ॥  
 रघुपति के रिगवे अस थ्याइ ॥  
 सियकर सोच जनक प्रद्वितावा  
 शम्भु बाप बड वोहित पाइ ॥  
 राम बाह बल सिधु अगारा ॥

धरहु धरिा थरि धीरन डोला  
 होइ सजग सुनि आय सु सोरा  
 न नारिन सुर सुकृत मनाये ॥  
 मन्द महीपन कर अभिमानू  
 सुरमुनि बरन करि कदराई ॥  
 रानिन कर दारुण डख दावा  
 चढे जाइ सब सग बनाई ॥ १ ॥  
 चहत पारनिहि कोउ कनहारा

दोहा राम विलोकै लोग सब चित्र लिखे से देरिव ॥  
 चितई सीय कपाल तन जानी विकल विशेषि २७०

देखी विपुल विकल वेद ही ॥  
 तपित बारि बिन जी तन त्यागा  
 कावषी जब कृषी सुरवाने ॥  
 अम सिय जाति जानकी देखी  
 गुरुहिं प्रनाम मनहि मन कीना  
 रमकेउ दामिन जिमि धन लयेऊ  
 लेत चढावत खेचत गादे ॥  
 तीहि क्षरा मध्य राम धनु तोरा

निमेष विहात कल्प समत ही  
 सुरे करे का सुधा तडारा ॥  
 समय चूकि पुनि कायति काले  
 प्रभु पुलके लखि प्रीति वियेकी  
 अति स्लाघव उगाय धनु लील  
 पुनि धनु नभ मंडल सम भयेऊ  
 काहन लखा देखि सब ठाणे  
 भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा

कन्द मरिभुवन गोर कडार न गवि वाजिताज मागवाने  
 चिकरहि दिगजडोल महि अहिकील कामकलमन  
 सरभ्रपुग मुतिक कान देखे भकलावकल विचारही  
 कीदण्ड भज्जउ गम तुलसी जयति वचन उवाग हो ॥ २३ ॥  
 मो० शंकर चाप जहाज मारार रघुवर बाहु बल ॥ ॥  
 बडे सकल समाज चर जे प्रथमहि ॥ ॥ २४ ॥

प्रभु दाखण्ड चाप सहि डार ॥  
 कौशिक रूप पयोनिधि पावन  
 राम रूप एकेश तिहारी ॥  
 वाजे नमगह गहे निशाना  
 ब्रह्मादिक मुर मिच्छ चुनीसा  
 रपहि भुमन ररा बहु माला ॥

देखिलोग सब भये सुखारे ॥  
 प्रेमचारि श्रव गाह मुद्गारन ॥  
 कदी बीच लख बाल मारी ॥  
 देव नपू नाचहि करि गाना  
 प्रभुहि प्रसंगहि देहि श्रीसा  
 गाषहि किन्नर गान रसा ला ॥

॥ २५ ॥ राजाको वतुप नोडना श्रीर समपूरा देवताये के ॥ २५ ॥



<p>रहो भुवन भारी जयजय बानी ॥ सहित कहहि जहतह नरजारी</p>	<p>धनुष भगसुनि जात नजानी ॥ भंजउ राम अम्भु धनु भारी ॥</p>
<p>दो० वल्दा गागध सूत गागो विरद बदाहि माते धीर ॥ रा० निक्कावारी लोरासव हयराजधन भारी हीर ॥ २७१</p>	
<p>काक मृदगा शाख सह नाइ ॥ ॥ वाजाहे वहुवाजने सुहाये ॥ सरिन सहित हर्षित अतिराना जनक लक्ष्मर मुख सोचविहाइ श्री हतभये भूपधनु रटे ॥ ॥ ॥ तियहिय मुखवरनिप कहिभाता रामहि लखरा विलोकत कैसे सतानद तव आयस दीन्हा ॥</p>	<p>भति दाल दुदुभी सुहाइ ॥ जहतह युवातन भगल गाये ॥ सुरवन धान पराजनु पानी पैत एक पाह जन पाई ॥ ॥ जैसे दिवस दीप कवि कूटे ॥ ॥ जनु चातक पाये जल स्वाती ॥ शशिहि चकोर किशोरक जैसे सीत रामन राम यह कीन्हा ॥</p>
<p>दोहा संग सखा सुन्दरी चतुर गावाहि भगल चार ॥ गवनी बाल सराल गति सरवसा अंग अषार ॥ २७२</p>	
<p>सरिन मध्यस्थि सोहत कैसे ॥ कर सरोज अयमाल मुहाइ ॥ तनसकोच मन परम उकाइ ॥ जाइ समीप राम कवि देखी चतुर सखा लखि कहा बुकाइ मुनत युगल कर माल उवाइ ॥ सोहत जनुधरा जलज सनाला ॥</p>	<p>कवि गरासद्यम हाकवि जसो ॥ विष्णु विजय शोभाजनु काइ ॥ गूढपम लखि परे न काइ ॥ ॥ रहि जनु कुवार चित्र अवरखी पाहगावह जयमाल मुहाइ ॥ प्रेम विवश पाहिएइन जाइ ॥ शशिहि समीत देत जयमाला</p>
<p>गावाहि कवि अश्व लाकि सहली सिय जयमाल राम उर मली</p>	
<p>दाहा रघुवर उर जयमाल देखि देव वर्षाहि मुमन सकुचे सकल भेअाल जनु विलोकि गविकुमदगाण ॥ २७३</p>	
<p>पु अरयोम वाजने वाज ॥</p>	<p>खलभये मलिन साधुसवगाण</p>

सुरकिन्नार नरा लाग मुनीशुभा  
 नाचहि गावहि बिबुध बधुयो ॥  
 जह तह विप्र वेद धुति करही  
 महि पाताल नाक यथाथापा  
 करहि आस्ती पर नर नारी ॥  
 सोहत सीय राम की जोरी ॥  
 सखी कहहि प्रभु पद गह सीता

जय जय सब कहि देहि प्रशीशा  
 बा बार कुसुमावलि कुरा ॥  
 वन्दी विरसा बलि उचुरिही ॥  
 राम वरो सिय भजउ चापा ॥ ॥  
 देहि निरुावरिचित विमारी ॥  
 कवि भृगाव मनह एक ठोरी ॥  
 करतिन चरणा परम अति भीता

दोहा गौतम तिय गति सुगति करि नहि परसात पदपानि  
 मनविहसे रघुवंश मरिा पीनि श्लाकिक जानि २७१

तबसिय देखि भूप उभिलावे  
 उठि यहि सनाह अभासा ॥  
 तोरधनुष काज तहि सरई ॥  
 लह कुजाय सीय कह कोऊ ॥  
 जो विदेह कछु करे सहाई ॥  
 साधु भूप बाले सुनि वाणी ॥  
 वल प्रताप वीरता बडाई ॥ ॥  
 सोइ अरता कि अब कह पाई

कर कपुत मूढ मन साव ॥  
 जह तह गाल वजावन लागे ॥  
 जीवत हमहि कुवार को बरई ॥  
 धरि बाधह न्यप वालक दोऊ ॥  
 जीतह समर महित दोऊ भाई  
 राज मसाजहि लाज लजानी  
 नाक पिता कहि ममा मिधाई ॥  
 अस बाधतौ विधि मुह मीसलाई

दो० देखह रामहि नयन भरि तजि द्रषी मट मोह ॥  
 लषणा रोष पावक प्रवल जानि शलभजनि होइ २७४

वेतनेय बलि जिमि चह कारा  
 जिमि चह कुशल अकारा कीही  
 लोभी लो लुप करति चहई ॥  
 हीर पद विमुख परत गति बाहा  
 कोलाहल सुनि सीय सकानी  
 राम सुभाय चले गुरु पाही ॥

जिमि शश चहहि नाग अरि भाग  
 सुख सम्यदा चहहि शिव द्राही ॥  
 अकलकता कि कामी लहई ॥  
 तम तुम्हार लाल च नर नाह  
 सखी लिवाइ गई जह रानी ॥  
 मीय सनेह वाराज मन साही ॥

रानिन सहित मोच बस सीया ॥  
भूपचन सति इनउन तकही

अवधौ विधि हि कहां कर सीया  
लपन राम डर बाल न सकही ॥

दाहा अरुना नयन भुकुटी कुटिल चितवन नूपनसकोप  
मनरं मत्त राजगारा निरारिव मिह किशोरहि चीप २०५

खा भर दीख विकल नरनारी  
तीह अवसर मुनि शिव धनुष्मा  
दीख सहोप सकल सकुचनि  
गौर शरीर भूत भलि भाजा  
शीश जटा शशि वदन मुहावा  
भुकुटी कुटिल नेनरिसि राते ॥  
रपभ कघ उर बाह विशाला  
कटि मुनि वसन तुल डडवाधि

सब मिलि देहि महीपत शारी  
आये भगुडाल कमल पतवा ॥  
वज जपट जनु लवा लुकाने ॥  
माल विशाल त्रिपुड विराजा ॥  
सिंस वस ककक अरु राहु अवा  
सहजहि चितवन मनइ रिसाते ॥  
चाह जवउ माल स्वा काला  
धनुसर कार कठार कल काध

दो० शान्त भेष करणी कठिन वरगिन जाइ सरुय ॥  
धरि मुनि तनु जनुवीर रम आय जह सब रूप ॥ २०६

देखत भगुपति भेष कराला  
पितु समेत कहि ३ निजनामा  
जोह सुभाय चितवाहं हितजनि  
जनक वहोरी आय शिरनावा ॥  
आशिय दीन्ह मयी हरषानी  
विष्वामित्र मिले पुनि आइ  
राम लपरा देसराय के दोरा  
रामहि चितय रहे यकि लोषन

उठ सकल भय विकल भुआला  
लगे करण सब दाड प्रणामी  
सो जाने जनु आयु नवटानी ॥  
सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥  
निज समाज ले गई सयानी ॥  
पदसरोज मेले दोउ भाई ॥ ॥  
दीन्ह अग्रणीष जाति भलजोय ॥  
रूप अपार भार सद मोचन ॥

दो० वहारि विलोकि विदेह मन कहह कहां अतिभौर  
पूछत जान अजान जिमि व्यापउ कोय शरीर ॥ २०७

समाचार कहि जनक सुजाय

जोहिकारन महीप सब आय ॥



<p>सुनतवचनफिरअनतनिहारे ॥  अतिरिसवालेवचनकठोरा ॥  वेगिदिखाउसूदनतथाजू ॥  अतिअरतरदेतन्यनाही ॥  सुसुरनिजागनगरनरजारी ॥  मनपछतातिसीयमहतारी ॥  भगपातकरसुभावसुनिसेता ॥</p>	<p>देखेचापरवाण्डमहिउरि ॥  कहुजइजनकधनुककोहितेसा  उलटोमहिजहलागतवराजू  कुरिलभूषहाषेमनमाही ॥  मोचहिमकलवामउभारी ॥  विधिमेंवारीमववानविगारी  अईनिमेषकल्पसमवीता ॥</p>
<p>दो० समयविलाकेलोगसबजानिजानकीभीर ॥  हृषनहृदयविवादकछुवोलेश्रीरघुवीर ॥</p>	
<p>नाथशम्भुधनुभज्जनहारा ॥  आयसुकहाकोहियेकिनसोही  सेवकसोझोकरसेवकाई ॥  सुनहुरामजोहिप्रिवधनुतोर  मोविलगाउबिहाइसमाजा ॥ ॥  सुनिमुनिवचनलषराभुसकाने  वहुधनुहीतोरैउलरिकाई ॥  इहिधनुपरमसताकेहिहेत ॥</p>	<p>होइहिकोइएकदासतुम्हार  सुनिरिसायवोलेसुनिकोही  अरकरागीकरिकारियलइई  सइसवाहसमसोरिपुमोरा  नतुसारेजहैसबराजा ॥ ॥  वोलेपरशुधरहिअप्रमाने ॥  कबहुनअसरिसकीन्हुसाई  सुनिरिसायकहभगकलने</p>
<p>दोहा रे न्यबालककालवसबालततोहिं सभार  धनुहीसमविपुगारिधनुविदितमकलसंसार २७६</p>	
<p>लषराकहाहोमिहमरेजाना  काहितेलाभजोगीधनुतोर  कूबतइटरघुपतिहिनेदोष ॥  वोलेचितयपरशुकीओरा ॥ ॥  बालकवोलिबधुंनहिंनोही  बालब्रह्मचारीअतिकोही ॥ ॥</p>	<p>सुनहदबसबधनुषसमाना  देखारामनयेकेभोरे ॥ ॥  सुनिविनुकाजकरियकतरेषु  रेशठसुनिमित्तुभावनमोरा  केवलसुनिजइजानेसिमोही  विश्वविदितसवियकलदोही</p>

<p>भुजबल भूमिभूष बिनुकीन्हे सहसवाह भुज छेदन हारा॥</p>	<p>विपुलदासहि देवन दीन्हे ॥ परशु विलोकि महाप कभारा॥</p>
<p>दा० मातु पितहि जनि शोचवस करासि महापकशोर गर्भने के अर्भक दलन परशु मोर अति घोर ॥ २०७</p>	
<p>बिहंसिलषणा बोलि मडवानी पुनि रसोहि देषाव कु वारा॥ इहां कु म्हड बतिया कोउ नाहीं देखि कुठार शरासन वाना॥ भृगुकुल समुजि जने उ विलोकी सूरमहि सुर हरि जन अरु शाई बधे पाप अपकीरति हारे॥ कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा</p>	<p>अहो मुनीश महा भद्रमानी ॥ बहत उडावन फूकि पहारा॥ जो तजिनि देवत सरि जाही ॥ मैं कछु कहा रहित अभिसानी जो कछु कहौ सही रिसि गेकी ॥ हमरे कुल इनपर न सुराई ॥ भारतह पायोरिय तुम्हारे ॥ ॥ रथा धरहे धनु वान कुठारा ॥</p>
<p>दा० जो विलोकि अनुचित कहउ अग्रह महा मुनि धीर सुनि सरोष भृगुवंश करिा बोलि गिरा गंभीर ॥ २०९</p>	
<p>कौशिक समह मन्द यह बालक भानुवंश गके सुकलंक ॥ ॥ कालकवा होइहि क्षरा माही तुम हट कह जो चहइ उचारा लषणा कहेउ सुनि सुयश तुम्हारा अपने सुख तुम आपनिकारणी नहि संतोष तो पुनि कछु कहहु वीर वति तुम पर अछौं भा</p>	<p>कुटिल काल वश निज कुल घाल निपट निरंकुश अचुध अशक ॥ कही प्रकारि खोरि लोहि नाही कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥ तुमहि अरुन को बरौ ॥ पारा वार अनेक भंति बहु वरणी ॥ जनि रिस गेहि इ सह डरव सहह गारी देत न पावहु भाजा</p>
<p>दा० सूर समर करणी करहिं काहिन जनावहि न पाव विद्यमान रणा पाइ रिपु काय कथहि पस्ता ॥ २१२</p>	
<p>तुमती काल हांकि जनु लाया</p>	<p>बार बार मोहि लोवा बुलाया ॥</p>

सुनत लषणाके वचन कठोर  
 अब जनि देह दोष मोहिं लीगू  
 बालविलोकि बहुत में बांचा  
 कौशिक कहा सनिय अपराधू  
 कर कुठार में अकारन  
 उतर देत छांडो विनु भारे ॥ ॥  
 नत यहि काटिकठार कठोर ॥

परसु मुधारी धरेउ कर  
 कटुवादी बालक वध योना  
 अब यह मरन द्वार भासांचा  
 बाल दोष बुगा गिराहिं न  
 अगो अपराधी गुरु डोही ॥  
 केवल कौशिक शील तुम्हारे  
 गुरुहि उक्तरा होते उश्रम

दो० सुअन कह हृदय

मुनिहि हरिअ सुभ

अज गव खरउउ ऊख जिमि अजहंन वूज अ वूज

२२३

कहे लषणा मुनि तुम्हारा  
 मातहि पितहि उक्तरा भयनीके  
 सो जनु हमरे माथे काटा ॥

को जानावदिन  
 गुरु कटरा रहा शोचवडजी  
 दिन चलि गयेउ व्याज ॥ १

व वौली

देव में खौली ॥

यहतस्वीर उसवत

जव परशुराम सभा में लाछमन

सेवती लावकरता



लक्ष्मणा

शीपमचन्द्रजी

परशुराम

लाछमन

<p>सुनिकदुबचनकुठारसुधारा भृगुवर परभु देखावह मोही मिलन कवह सुभट ररागाद अनुचित कहि सव लोग पुकारे दो० लषरा उतर आहति सारिस भृगुवर कोप कृशानु वदत देखि जल समवचन बोले रघुकुल भानु २०४</p>	<p>हाहा कहि सब लोग पुकारा ॥ विप्र विचार वचौ न्यप डोही ॥ दिज देवना घरहि के बाहे ॥ रघुपति सैनहि लषरा चिबोरे</p>
<p>नाथ करह बालक पर छोह जोपै प्रभु प्रभाव कछु जाना जौ लरिका कछु अनुचित कारही करिय रूपा शिशु सेवक जानी रामवचन सुनिक कछु कजुडाने हसत देखि तरवसिखरिस थापी गौर प्ररीर श्याम मन माही सहज टेट अनुहरै न तोही</p>	<p>सूध दूध सुख करिय न कोह ॥ तौकिव रावर करत अयाना ॥ गुरुपितु मातु मोद मन भरही तुमसम शील धीर सुनि जानी ॥ कहिक कछु लषरा बहरि मुसुकाने राम तोर भाना वड पापी ॥ काल कूट सुख पय सुख नाही नीच मीचि सम लखै न मोही ॥</p>
<p>दो० लषरा कहेउ होसि सुनह सुनि कोध पापका मूल जोहि बसजन अनुचित करहि चलहि विश्व प्रतिकूल २०५</p>	
<p>मे तुम्हार अनुचर सुनि राया टट चाप नहि जुडहि रिसाने ॥ जौ अति प्रिय तो करिय उपाई बोलत लषराहि जन कडि राही थर २ कापहिं पुर नर नारी ॥ भृगुपति सुनि २ निर्भय बानी बोले रामहि देइ निहोरा ॥ मन मलीन तन सुन्दर कैसे</p>	<p>पारि हरि कोपे करिय अश्व दायो ॥ वेठिये होइ हरि पाय पिराने ॥ जोरिय कोउ वड गुराणी बुलाइ ॥ भृख करइ अनुचित भल नाही छोट कुमार खोट अति भारी ॥ रिस तनु जौ होइ बल हानी ॥ वचौ विचार बन्धु लघु तोरा विषास भरा कानक घट जैसे ॥</p>
<p>दो० सुनिलक्षणा विहसे बहुरि नयन लरै राम</p>	

गुरुसमीप गवने सकुचि परिहरि वारागीवाम

अति विनीत मृदु शीतल वाणी  
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना  
वारे बालक एक सुभाऊ ॥  
तिन नाही कछु काज विगारा  
कृपा कोप बध बन्धु गुसाई ॥  
कहिये वेगि जेहि विधि रिस जाई  
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे  
इहिके कंठ कुठारन दीन्ह ॥

बोले राम जोरि युग पाराणी ॥  
बालक बचन कारये नहि कान  
इ नहि न सत विदष हि काज  
अपराधी मै नारा तुम्हारा ॥  
मोपर कारिय दास को नाइ ॥  
मुनि नायक सोइ कारिय उपाइ  
अजहं बन्धु तव चितव अनेस  
तो मै कहा कोप कारि कीन्हा

दो० गर्भे श्रवाह अवनि पर वनि मुनि कुठार गति घोर  
परम अछत देखी जियत वैरी भूप किशोर ॥ २८७

बहे न हाथ देहे रिसि छाती  
भये उषाम विधि फिरत सुभाऊ  
आजु देव दरव डसह म हावा ॥  
वाह कृपा मुरीत अनु कूला ॥  
जो पै कृपा जरे मुनि गाता ॥  
देवि जनक हठि बालक रोह ॥  
वेगि करत किन आरि वन अटो  
विहसे लषरा कहा मुनि पाही

मा कुठार कुरि ठत न्यप चातो  
मोरे हृदय कृपा कस वाऊ  
मुनि सो मित्र विहंमि सिरनावा  
बोलत बचन भात जनु फूला ॥  
क्रोध भये तनु सुख विधाता ॥  
कीन्ह चहंत जड यमपुरगेह ॥  
देखत डोट खोट न्यप टोटा ॥  
मूदिय आरि कतहु कोउ नाही

दो० परसु राम तव राम प्रति बोले बचन सक्रोध  
शम्भ शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध ॥ २८८

बन्धु कहै कहु सम्मत तोरे ॥ ॥  
कहू परि तोष मोर सगामा ॥ ॥  
छलतजि करड समर शिव डोही  
भृगुपति तमकि कुठार उठाये ॥

तू छल विनय करसि कर जोरे  
नाहित छांड कहा उव रामा ॥  
बन्धु सहित ननु मारो तोही ॥  
सन मुसुकाहि राम शिरनाये

गुराह लषरा करहम पर रोषू  
 देद जानि शंका सब काह ॥  
 राम कहै उरिस तजिय सुनीशा  
 जोहि गिसि जाय करिय सोइस्वामी

कतह सुधाइह तेवड दोषू ॥  
 वक्र चंद्रमा नसे न राह ॥ ॥  
 कर कुठार आगे यह शीशा ॥  
 मोहि जान आपत अनुगामी ॥ ॥

दो० प्रभुहि सेवकोहि ससर कस तजइ विप्र बर दोष ॥  
 भेष विलोकि कहेसि कछु बालक हे नहि दोष ॥ २८६ ॥

देखि कुठार वारा धनु धारी ॥  
 नाम जान पै तुमहिन चीन्हा  
 जो तुम अघते उ मुनि की नाई  
 छसह चूक अनजानत केरी ॥  
 हमहि तुमहि कस सरि वनाथा  
 रामभाव लघु नाम हमारा ॥  
 देव एक गुरा धनुष हमारे ॥  
 सब प्रकार हम तुम सन हारे

भेलरि कहि गिसि वीर विचारी ॥  
 वश सुभाव उतर तोहि दीन्हा ॥  
 पद राजा शर भिषु धरत गुसाई ॥  
 चहिय विप्र उर कृपा घनेरी ॥  
 कहइ तो कहां चररा कह नाथा  
 परभु सहित वड नाम तुम्हारा ॥  
 नव गुरा परम पुनीत तुम्हारे ॥  
 ससह विप्र अपराध हमारे ॥

दो० वार वार मुनि कौवा कहे राम सन राम ॥ २८७ ॥  
 बोले भृगुपति सरुष हई तह बन्धु समवास

निपठहि द्विज करि जानेह मोही  
 चाप भ्रुवा शर अहति जानू ॥  
 ससधि सैन चतुरंग सुहाई ॥  
 मै यहि परभु काटि बल दीन्हा  
 मोर प्रभाव विदित नहि तोरे ॥  
 भजे उचाप दाव वद वादा ॥  
 राम कहा सुनि कहइ विचारी  
 कुअतहि डूट पिनाक पुराना

मैं जैसे विप्र सुनाऊ तोही ॥  
 कोप मोर अति घोर लशानू ॥  
 महा महीप भये पसु अहो ॥  
 समर यज्ञ जग को दिन कीन्हा  
 बोलसि निदागे विप्र के भोरे ॥  
 अहि मति मनइ जीत जग काट  
 रिसि अति बडि लघु चूक हमारे  
 मैं कोहि हेत करे अभिसाज ॥

दो० जो हम निदराहें विप्र वदिसत्य सुनह भृगुनाथ

तौ अमकी जग सुभट जेहि भयवस नावहि माथ ३६१

देवदनुज भूपति भटनाता ॥  
जो रारा हमोहि प्रचारेउ कोऊ ॥  
क्षत्रिय ननु धरि समर सकाना ॥  
कही सुभाव न कुलाहि प्रशशी  
विप्रवंशकी अम प्रभु ताई ॥  
सुनि ऋदु गूढ वचन रघुपतिके  
राम रमापति करधनुलेह ॥  
देत चाप आपुहि चढ गयेऊ ॥

सम बल अथि कि होउवलवाना  
लरहि मुखिन काल किन होऊ  
कुल कलंक तोह पावर जाना  
कालहु उराहे न रारा रघुवंसी  
अभय होइ जो तुमाहि उराई ॥  
उघरे परल परभु घर मतिके ॥  
खिचइ चाप निट सन्देह ॥  
परसुगम मन विस्मय भयेऊ ॥

दो० जानाराम प्रभाव तब पुलक उफुञ्चित गात ॥  
जोरि पारिषो बोलि वचन प्रेमन हृदय समात ॥ ३६२

जयरघुवंश वनजवन भानू  
जय सुर विप्र धेनु हितकारी ॥  
विनय शील करुणा गुणा सावार  
सेवक सुखद भुभग सब अंरा  
करो कहा सुख एक प्रशंसा ॥  
अनुचित बहते कहे उच्यताता ॥  
कहि जयजयजय रघुकुलकेतू  
अपमये कदिल महीप उराने ॥

गहन डनुज कुलदहन कशानू  
जय मद् मोह कोह भूमहागी ॥  
जयति वचन रचना अति नागर  
जय शरीर छविकोटि अनेचा ॥  
जय महिस मन मानस हंसा ॥  
क्षमइ क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता  
भगुपति गये वनहि तप हेतू ॥  
जह तह कापर गवहि पराने ॥

देवन दीन्ही दुंदभी प्रभु परवरे बहि फूल ॥ ॥

हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भयभूल ॥ ॥ ३६३

अति गह गह वाजन वाजे ॥ ॥  
यूथ यूथ मिलि सुमुख सुनयनी  
मुख विदेह करवनिन जाई ॥  
विपत नास भइ सीय सुखारी ॥

सवाहे मनाहर मंगल साज ॥  
करहि रान कल कोकिल वयनी  
जन्म दरिड मनहु निधि पाई ॥  
जनु विधु उदय चकोर कुमारी ॥

जनक कीन्ह कोशिकाहि प्रसाम्ना मोहिकत कुन्व कीन्ह दोउ भाइ ॥ कह सुनि सुनार नीह प्रवीता दूरत ही धनु भयेउ विनाह ॥	प्रभु प्रसाद धनु भज्जेउ रीमा ॥ अवजोउचित सो कहिये गुसाई रहा विवाह चाप आधीना ॥ सुर नर नाग विदित सब काह ॥
---	---

दो० तदापि जाइ तुम करइ अव यथा वंश अव द्वार ॥  
बूझि विप्रकुल छद् गुरु वेद विदित आचार ॥ २६४

दूत अवध पुर पठवहु जाई ॥ ॥ सुदित राउ काहे भलोहि कपाला बहाग सहजन सकल बुलाये ॥ हाउ वाट संदि सु र वासा ॥ ॥ द्वाराप चले निज २ गृह आये ॥ ग्वह विचित्र विता न बनाई ॥ पटये बोलि गुराणी तेहि नाना विधिहि वन्दि तेहि कीन्ह अरिभा	आन न्यपद शरथ हि बुलाइ ॥ पवये दूत अवध तेहि काला ॥ आइ सवन सादर सिरनाये ॥ नगर संवारह चारिउ यासा ॥ पुनपरिचारिक बोलि पठाये ॥ धार धरि वचन जले सनु पाई ॥ जो विता न विधि कुशल सुजात विचि कनक केदली खंभा ॥
---	--

दो० हरित मरिगानक पत्र फल पदमराग के फूल ॥  
रचना देखि विचित्र अति मन विरंचि के मूल ॥ २६५

वेसा हरित मरिगामय सब कीन्ह कनक कलित अहि बेलि बनाई तेहि के रचि पचि नन्ध बनाये मरिगा कभरकत कुलिश पिरोजा किये भंग बह रंग विरंगा ॥ सुर प्रतिमा खम्भन गहिकादि थोके भांति अनेक पुराई ॥	सरसखरीा पराहि नहि चीन्ह लखि नहि परी सुवरी सुहाई ॥ बिच २ सुकता दाम सुहाये ॥ चीरकोर पचि रचे सरोजा ॥ ॥ गुंजहि कुंजहि प्रवन प्रसंगा ॥ मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़े ॥ सिन्धुर मरिगामय सहज सुहाई
--	---

दो० सौरभ पल्लव मुभगे सुठि किये जौल मरिगा कार  
हेमबौर सरकत धवरि लसत पाटमय डोर ॥ २६६



चेरुधर वरवन्दन चारे ॥ ॥  
 मंगल कलश अनेक बनाये ॥  
 दीप मनोहर मरिा मय नाना ॥  
 जेहि मखण्ड पदलहिन वै देही  
 दुलहराम रूप गुरा सागर ॥  
 जेनक भवन की शोभा जैसी ॥  
 जेहितिरहुति तेहि समयनिहरी  
 जो सम्पदा नीच गृह सोहा ॥

मनहु मनोभव फन्द सवारे ॥  
 धुज पताक घट बसर सुहाये ॥  
 जाइन वरिा विचित्र विताना  
 सो वरिा असु मति कविकेही ॥  
 सो वितान तिहु लोक उजागर ॥  
 गृह प्रति पुर दरिबये तैसी ॥  
 तेहि लघु लगी भवन दश चरी  
 सो विलोकि सुर नायक मोहा

दो० वसे नगर जेहि लक्षि करि कपट नारि वर भेष ॥  
 तेहि पुर की शोभा कहत सकुचै शारद शेष ॥ २६७

पहचै दत राम पुर यावन ॥ ॥  
 भूपहारि तिन खबर जनाई ॥  
 कोर प्रणाम तिन्ह याती दीन्ही ॥  
 बारि विलोचन वीचत याती ॥  
 रामलषणा उर कर वर चीठी  
 पुनि धरि धीर वज्रिका वाची ॥  
 खलत रहे तहां सुधि पाई ॥  
 पुंखत अति सनेह सकुचाई ॥

हरये नगर विलोकि सुहावन  
 दसरपत्त सुनि गलिये बुलाई  
 मुदित महीप आयउठि लीन्ही  
 पुलक गात आई भरि छाती ॥  
 रक्षि शये कहत न खाटी सीटी ॥  
 हरषी सभा वल सुनि सांची ॥  
 आयि भरत सहित दोउ भाई ॥  
 तात कहां ते याती आई ॥

दो० कुशल प्रणाम प्रिय वन्धु दाउ अहाई कहहु कोहिदेश  
 सुनि सनेह साने बचन वाची बहुरि नरेश ॥ ॥ २६८

सुनि याती पुलक होउ आता ॥  
 प्रीति पुनीत भरत की देखी ॥  
 तदन्यपवृत्त निकर वै नरे ॥ ॥  
 भैया कुशल कहहु दोउ वारे ॥  
 प्रयासल गौर धर धनु भाथा ॥

अधिक सनेह समातन गाता  
 सकल सभा सुख लहेउ विशेषी  
 मधुर मनोहर बचन उचारे ॥  
 तुम नीके निज नयन निहारे ॥  
 वय किशोर की शिक सुनि साथा

पहिचानेउ तो कहइ सुभाऊ ॥  
जदिनते सुनि गये लिवार्इ ॥  
कहइ विदेह कवन त्रिधि जाने ॥

प्रेम विचम युनि रकह राऊ  
तबने आजुसांचि सुधि पाई ॥  
सुनप्रिय वचन दत मुसकाने ॥

दा० सुनइ महीपानि मुकट मरिा तुम सम धत्यनकाउ  
रामलषारा जिनके तनय विश्व विभूषारा दाउ २६६

पूछन याग न तनय तुम्हारे ॥  
जिनके यश प्रतापके आगे ॥  
तिनकहकहिनाथ किंस चीन्हे ॥  
सीय स्वयंवर भूप अनेका ॥  
शम्भु सरासन काहन दारा ॥  
तीनलोक में जे भटमानी ॥  
सके उठाय मुरामुर मेरू ॥  
जेहि कौनु कशिव शील उठावा ॥

पुरुष सिंह तिह पुर उजियारे ॥  
शशि मलीन रवि शीतल लागे ॥  
देखिय रविहि कि दीपकलीन्ह ॥  
मिमिटे सुमट एक ते रेका ॥  
हारे सकल भूप वरि दारा ॥  
सबकी शक्ति शभुधनु भानी ॥  
सोऊ हिय हारि गयउ करफेरू ॥  
माउतेहि समा पराभव पावा ॥

दाहा तहां राम रघुवंश मरिा सुनिय महा महिपाल  
भजेउ चांप प्रयास विनु जिमि गज पकज नाल ३००

सुनि सरोष ररगु नायक आये ॥  
देखि रामवल निज धनु दीन्हा ॥  
राजतराम अतुल बल जैसे ॥  
कम्पहि भूप विलोकत जाके ॥  
देव देखि तव बालक दोऊ ॥  
दूत वचन रचना प्रिय लागी ॥  
सभासमेत राउ अनुरागे ॥  
कहि अनीत तोहि मूदेउ काना ॥

बहुत भांति तिन आरि देखाये ॥  
करि वहु विनय गवन वनकीन्हा ॥  
तेज निधान लषारा युनि तैसे ॥  
जिमि गज हारे किशोरके ताके ॥  
अवन आरि तर आवत कोऊ ॥  
प्रेम प्रताप वीर रस पागो ॥  
दूतहि देन निष्ठावर लागे ॥  
धर्म विचारि मवहि सुष साता ॥

दा० तव उठि भूप वसिष्ठ कह दीन्ह पाविका जाइ ॥  
कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाइ ॥ ३०१

<p>सुनि बोले मुनि अति सुख पाई जिमि सरिता सागर सह जाई तिमि सुख मंपति विनाहिं बुलाये तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी ॥ सुकुंती तुम समान जग साही तुमते अधक पुण्य वड काके पुनीत धर्म व्रत धारी ॥ ॥ तुम कहें सर्व काल कल्या ना</p>	<p>पुण्य पुरुष कह महि सुख काई यद्यपि ताहि कामना नाही ॥ धर्म शील पह जाहिं सुभाये ॥ तस पुनीत कौशिल्या देखी ॥ भयउ नहै कोउ होनेउ नाहीं ॥ ॥ राजन राम सरिस सुत जाके ॥ ॥ सुरा सागर वालक वर चारी ॥ सजह बरात वजाय निशाना ॥</p>
--	---

दो० चलेउ वेगि सुनि गुरु वचन भलहि नाथ सिरनाइ  
भूपति रावने भवन तव दुताहि वास दिवाइ ॥ ॥ ३०२

<p>राजा सब रानेवास बुलाई ॥ सुनि संदेस सकल हरषानी प्रेम प्रफुलित राजा रानी ॥ ॥ मुदित अशीश देहि गुरु नारी ॥ लेहि परस्पर अति प्रिय पाती राम लषणा की कीरति करराी सुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये ॥ दिये दान आनंद ममेता ॥ ॥</p>	<p>जनक पत्रिका वीचि सुनाइ ॥ अपर कथा सब भूप बरवानी ॥ सनहु सिरिवन सुनि वारिद बानी अति अनेद मगन मह तारी ॥ ॥ हृदय लगाइ जुड़ावहि छाती ॥ वागिह वार भूप वर बरनी ॥ ॥ रानि बतब सहि देव बुलाये ॥ चले विप्र वर आसिष देता ॥ ॥</p>
---	---

सा० याचक लिये हंकारि दिये निकावर कोरि विधि  
चिर जीषह सुत चारि चक्र वति दशरत्यके ॥ २८

<p>कहत चले पहिरे परनाना ॥ समाचार सब लोगन पाये ॥ भुवन चारि दश भरेउ उकाहू ॥ सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे यद्यपि अवध सदैव सुहावनि</p>	<p>हरषि हने गह गहे निशाना ॥ लागे घर घर होत बधाये ॥ ॥ जनक सुता रघुवीर विवाह ॥ मग अह गली संवारन लागे ॥ रामपुरी मंगल मय पावनि ॥</p>
--	--

तदीपि प्रीति की रीति सुहाई ॥  
ध्वज पताक पट चासर चारू ॥  
कनक कलश तोरसा मणि जाला

मंगल रचना रची बनाई ॥  
छावा परम विचित्र बजाई ॥  
हरद दूब दधि अछत माला ॥

दो० मंगल मय निज २ भवन लोबान रचे बनाय  
वीपी सींची चतुर सब चौके चारू पुराय ॥ ३०३

जह तहं यूथ २ मिलि भासिन  
विधु वदनी मृग शावक लोचनि  
गावहिं मंगल मंजुल बानी ॥  
भूप भवन किमि जाइ वषाणा  
मंगल दुव्य मनोहर नाना ॥ ॥  
कतहं विरद बन्दी उच्चरही ॥  
गावहिं सुन्दरी मंगल गीता ॥  
बहुत उकाह भवन अति थोरा ॥

सजि नव सप्र सकल दुति भासिन  
निज स्वरूप रति मान विमोचनि  
सुनिकल रब कलकंठ लजानी  
विश्व विमोहन रचे उदिताना  
राजत वाजत विपुल निशाना  
कतहं वेद धुनि भूसुर करही  
लै नाम राम अरु सीता ॥  
मानइ उमरि चला चहं ओरा

दो० शोभा दशरथ भवन की को कबि वरगो पारा ॥  
जहां सकल सुर शीश मणि राम लीन्ह अवतार ॥ ३०४

भूप भरत पुनि लये बुलाई ॥ ॥  
चलह वैगि रघु वीर वराता ॥  
भरत सकल साहनी बुलाये  
रुचि रुचि तुरंग साजति न सजे  
सुभग सकल सुठि चंचल करणी  
नाना भांति नाजाइ स्वाने ॥  
तिन सब छयल भये असवार ॥  
सब सुन्दर सब भूषणा धारी ॥

हयगजस्यदन साजइ जाई ॥  
सुनत पुलक पूरे दोउ आता ॥  
आय सुदीन्ह मुदित उठि धाये  
वरी वरी वा वाजि विराजे ॥  
अयु जिमि जरत धरत पगु धरणी  
निदारी पवन जनु चहत उड़ाने ॥  
भरत सरिस सब राज कुमारा ॥  
कर शर चाप तूना कटि मारी ॥

दो० करे छबोले छयल सब मूर सुजान नवीन ॥ ॥  
युग पदे वर असवार प्रति जो असिकला प्रवीन ॥ ३०५

वंधे विरद वीरगा गाढे ॥  
 फेरहि चतुर तुरंगिनि नाना ॥  
 रथसारथिन विचित्र बनाये ॥  
 चकर चारुकिकिगा धुनिफरही ॥  
 श्यामकरगा अगिगात हयहीते ॥  
 सुन्दर सकल अलंकन सोहे ॥  
 जे जल चलाहि थलाहि की नई ॥  
 अस्त्रशस्त्र सब साज सजाई ॥

निकसि भये सुर बाहेर टाढे ॥  
 हरषाहि धुनिमुनि पवननिशाना ॥  
 धुजपताकमणि भूयगाछापे ॥  
 भानुयान्न शोभा अप हरही ॥  
 तेतिन्ह रथन्ह सारथिन जोते ॥  
 जिनहि विलोकित मुनिमनसोहे ॥  
 टापन वूड वेग अधिकाई ॥  
 रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दो० चढे चढे रथ बाहेर न वार लागी जुगन वरात ॥  
 होत मगुगा सुन्दर सबहि जो जहि काज जात ३०६

कलित करिवरन परी अवासी ॥  
 चले मत्त राज घरट विराजे ॥  
 बाहत अपर अनेक विधाना ॥  
 तिन चढे चले विप्र बर वृन्दा ॥  
 माराध मूत वान्द गुणा गायक ॥  
 बेसर ऊंट रषभ बहं जाती ॥  
 कौटिन कांवरि चले कहारा ॥  
 चले सकल सेवक समुदाई ॥

कहिन जाइ जोहि भात मवारी ॥  
 मनइ सुभग सावन घन राजे ॥  
 सिविका मुभन मूरवामन यान ॥  
 जनु तनु धर सकल क्षुति कन्द ॥  
 चले यान चढे जो जेहि लायक ॥  
 चले वस्तु मरि अगारिात भाता ॥  
 विविध वस्तु को वरणी पारा ॥  
 निज समाज समाज बनाई ॥

दो० सबके उर निभर हरष धीरत पुलक शरीर ॥  
 कवीह देखिहो नयन भरि राम लषणा दोउ वीर ॥ ३०७

गरुजहि राज घरटा धुनिघोरा ॥  
 निदरि घनहि घूम रहि निशाना ॥  
 महाभोर भूपति के हारे ॥ ॥  
 चढे अटारिन देखिह नरि ॥  
 गावहि मीत मनीहर नाना ॥

रथरष बाजि हीस चह अरोरी ॥  
 निज पगव कछु सुनिय न काना ॥  
 खहोइ जाइ यखान पवारी ॥ ॥  
 लये अरती भंगाल थारी ॥  
 अति अनन्द नहि जाइ वरवा नी

तव सुमन उड स्वदन साजी  
दोर रथ रुचिर भूप प्रहं अने  
राज समाज एक रथ साजा ॥

जोते हयर विनिन्दक बाजी ॥  
नहि शारद प्रति जाहि बखाने  
दूसर तेज पुञ्ज अति राजा ॥

दोहा तेहर रथ रुचिर वासिष्ठ कह हराष चडाइ नरेश  
अपु चढेउ स्वदन सुमिर हर गुरु गौर गणेश ३०८

साहित वासिष्ठ सोह न्यपकेसे ॥  
करि कुल रीति वेद विधि राज ॥  
सुमिर राम गुरु आयसु पाई ॥  
हरये विबुध विलोकि वराता ॥  
मबव कोलाहल हय गज गाजे  
सुर नर नारि सुमंगल गाई ॥  
घण्ट घाण्ट धुनि वरिगान जाई  
करिहि विदुषक कोतुक नाना ॥

सुर गुरु मग पुर दर जैसे ॥  
दरिब सर्वाह सब भाति बनाज  
चले महीपात शख बजाइ ॥  
बर्षाह मुसत सुमंगल दाता  
व्याम बरात बाजन बाजे ॥  
सरम गग बाजहिं सह नाई ॥  
सरो करै पायक फह गाई ॥  
हास कुशल कलवान सुजान

दोहा सुरगन चावाहि कुबर वर अकानि म्दंग निशान  
नागर नट चितवाहिं चकित डिगाहि न ताल पिधान ३०८

वने न वरगात वनी बराता ॥  
चारुबाव वाम दिशि लेई ॥  
दाहिन काग सुरवेत सुहावा ॥  
सानुकूल वह त्रिविधि वरारी ॥  
लोका फिर २ दरश दिखावा ॥  
मृगमाला दाहिन दिशि आई  
क्षेमकरी कह क्षेम विशीषी ॥  
सुन्नुगव आयैउ दधि अरु सीना

हाइ मगुरा गुल्दर सुभ दाता  
मनहं सकल मंगल कहि देइ  
नकुल दरश सब काहुन पावा  
मघट सवाल वारि वर नारी ॥  
सुरभी सन्नुगव शिशुहि पिअव  
मंगल गरा जनु दीन्ह दिखाई  
श्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥  
कर पुस्तक डडै वप्र प्रवीना ॥

दोहा मंगल मय कल्पारा मय अभिसत फल दातार ॥  
जनु सब सांचे होन हित भये मगुरा एक वार ॥

<p>मंगल शकुन सुराम्भवताके राम सरिस वर डलहिन सीता सुनि अस व्याह सरुन सबताचे यह विधि कीन्ह वरानपयाना आवत जानि भासु कुल केतू ॥ बीच बीच वरबास वनाये ॥ अशान शयन वर वसन सुहाये नित नूतन लखि सुख अचुकुला</p>	<p>सगुरा ब्रह्म मुन्दर सुत जाके समधी दशरथ जनक मुनीना अब कीन्ह विंगिचि हम सांचे ॥ हथ राज गाजहि हनहि निशाना सगिन जनक वधाय सेतू ॥ सुरपुर सरिस संपदा काये ॥ पावहिं सव निज रसन भाये ॥ सकल दशातन मंदिर सुखा</p>
<p>आवत जानि बरात वर सुनि गह गह निशान सजि गज रथ पद वर तुरग लेन चले अगवान ३११</p>	
<p>कनक कलश कलको परधारा भरे सुधा सम सब एक वाना फल अनेक वर वस्तु सुहाई ॥ भूषण वसन महा मणि नाना मंगल सगुरा सुगन्ध सुहाये दधि चिडुवा उपहार अपारा ॥ अगवानन जब दीख वराता देखि बनाव सहित अगवाना</p>	<p>भोजन लालित अनेक प्रकारा मांति मांति नहि जाय वधाना हरषि शेट हित भूप प्रगई ॥ खग म्हाह पगज वहा विधियाना वहत भाति महियाल पटाये ॥ भरि भरि कादरि चले कहारा ॥ उर आनंद पुलक भरगाता मुदित वरातन हने निशाना</p>
<p>दो० हम् परस्पर मिलन हित कछुक चले वरामेल जनु आनन्द समुद्र दुइ मिलत विहाइ सुवेल ३१२</p>	
<p>वरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहि वस्तु सकल राखी न्यप आगे प्रेम समेत राउ सब लीन्हा ॥ कोरि पूजा वर मान वडाई वसन विचित्र पावडे परही ॥</p>	<p>मुदित देव दुन्दुभी बजावहि विनय कीन्ह तिन्ह व्यति अनुरागे भैवक शीश याचकन दीन्हा जनवासेकह चले लिवाई न्यपद सरथ तापर प्रगधरही ॥</p>

देखि धनद धन मद पर हरही  
अनि सुन्दर दीने उ जन वासा  
जानी सिय बरात पुर आई ॥  
हृदय सुनिरि सब सिद्धि बुलाई

वस सुमान सुर जैजे करही ॥  
जह सब कह सब भाति सुपासा  
कछु निज महिमा प्रगट जनाई  
भूप पहनई करन षठाई ॥

दो० सिय आय सुशिर सिद्ध धरि गइ जहा जन वास  
लये सपदा मकल सुख सुर पुर भोग विलास ३१३

निज २ बास विलोक वराती  
बिसव भेद कछु काहन जाना  
सिय महिमा रघुनायक जानी  
पितु आगमन सुनत दोउ भाई  
सकुचत कहिन सकत गुरुपाहा  
विश्वामित्र विनय वाइ देखी  
हर्षि बन्धु दोउ हृदय लगाये  
चले जहा दसरथ जन वासे ॥

सुर सुख सकल सुलभ सब भात  
सकल जन क कर कहि बधाना  
हरष हृदय हेतु पहिचानी ॥  
हृदय न आत आनंद समाई ॥  
पितु दसन लालच मन भाई ॥  
उपजा उर संताप विशयी ॥  
पुलक अंग लोचन जल कृपे ॥  
मनो मरोवर तके पियासे ॥

दो० भूप विलोके जबाहं सुनि आवत सुतन समेत ॥  
उठे हरापि सुख भिन्धु सह चले थाहसी लेत ॥ ३१४

सुनिहि दंगडवत कीन्ह महोशा  
कोशिक राउ लिचे उर लाई ॥  
पुनि दंगवत करत दोउ भाई ॥  
भुत हिय लाइ दुमह डरव भेटे ॥  
पुनि बसिय पद शिर तिन नाये ॥  
विप्र बन्द वन्दे डडु भाई ॥ ॥  
भरत सहानुज कीन्ह प्रगासा  
हरष लबरा देष दोउ भाता ॥

वार २ पद रज धरि शीशा ॥  
कहि अशीश पूछी कुशलाई  
देखि न्यप्रति उर सुखन समाई  
सतक शरीर प्राणा जनु भेटे  
प्रेम सुदित सुनि वर उर लाये ॥  
मन भावत अशीश तिन पाई  
लिये लवाय लाइ उर रासा ॥  
मिले प्रेम परि पूरन गाता ॥

दो० पुरजन परिजन जाति जन वाचक मत्री सीत ॥  
लिये यथा विधि सबहि प्रभु परम कृपाल विनीत ३१४



रामहि देखि बरात जु डाली ॥  
 न्यक समीप मोहिहि मुत चारो  
 सुतन्ह सहित दशरथ कह देखी  
 सुमन बरषि सुर हनाहि निशाना  
 सतानन्द अरु विप्रमचिव तन  
 सहित बरात राउ सन्माना ॥  
 प्रथम बरात लगन ते आई  
 बुझानंद लोग सब लहही ॥

प्रीति की गीति न जाइ बयानी  
 जनु धनु धर्मादिक तनु धारी ॥  
 मुदित नगर नरनारि विशेषी ॥  
 नाकनरी नाचहि करि गाना  
 माराध मृत विदुय वन्दी जनै ॥  
 आयसु मांगि चले अगवाना  
 ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥  
 वदहि दिवसनिशि विधि मनकहै ॥

दो० राम भाय शाभा अबाध सुकत अबाध राउ राज  
 जहं तहं पुरजन कहहि अस मिलि नर नारि समाज ३१६

जनक सुकति मूरति बै देही  
 इनसम काहन शिव आराध  
 इनसम कोउन भयउ जगमाही  
 हमसब सकल सुकत की रामी  
 जिन जानकी राम कृषि देखी ॥  
 पुनि देखव रघुबीर विवाह ॥  
 कहहि परस्पर को किल वयनी  
 बडे भाग विधि बात बनाई ॥

दशरथ सुकत राम धरि देही  
 काहन इनसमान फल साध ॥  
 है नहि कतहं हानेउ नाही ॥  
 भये जगजन्मे जनक पुरवासी  
 को सुकती हम मरिस विशेषी  
 लेव भली विधि लोचन लाह ॥  
 यह विवाह बड लाह सुनयनी  
 नैयन अतिथि होइहे दोउ भाई

दो० वाराह वार सनेह बस जनक बालाउव सीय ॥

लेन आइहहि वन्धु दोउ कोटिकाम कमनीय ३१७

विविधि भीति होइहि अकनाई  
 तबतब राम लषगाहि निहारी ॥  
 मखि जम गम लषगा कर जोरा  
 श्याम गौर सब अंग सुहाये ॥  
 कहा एक मै आजु निहारे ॥

प्रियन काहि अस सासुर माइ  
 होइहहि सब पुर लोग सुरा  
 तैसोहि भूय संघ डइ दोठा ॥  
 ते सब कहहि देखि जे आवे  
 जनु विरचिनिज हाथ सवारै

भरतराम एकहि अनुहारी ॥  
 लषरा शत्रुसूदन इकरुमा ॥  
 मन भावाहि सुखवरिणात जाई

सहसालरिवनसकहि तरतारी  
 नरवसिखते सबअंग अनूपा  
 उषिमा कह विभुवनकोउनाही

कृ० उपमानकोउकह दासतुलसी कवि कोविद कहे ॥  
 बलबिनय विद्या शील शोभा सिन्धु इनसमयेलेहे  
 पुरनारि सकल पसारि अचल विधिहि वचन सुनावही  
 व्याहिय सुचारि उभाइ इहि पुरहम सुमंगल गावही  
 सो० कहहि परस्पर नारि वारि विलोचन पुलकतन  
 सरिव सबकरव पुरारि पुराय पयोनिधिभूषदेउ २८

इहि विधि सकल मनोरथ करही  
 जे नृपसीय स्वभस्वर अथाये ॥  
 कहत राम यश विशद विशाला  
 गये बीति कहु दिन इहिभांती  
 मंगल मूल लगन दित अवा  
 राहतिधि नरवत योग वरवारु  
 पठे दीन्ह नारद सन सोई ॥ ॥  
 सुनी सकल लीगन यह बाता

अनन्द उमागि उर भर ही ॥  
 देखि बन्धु सवतिन सुखपाये  
 निज भवन गये महिपाला  
 प्रमुदित पुरजन सकल वराती  
 हिमरितु अराहन मास सुहवा  
 लगन साधि विधि कीन्ह विचारु  
 गुराी जनकके रागाकन जोई  
 कहहि ज्योतिषी अहाहि विधात

दो० धनु धूलि बेला विमल सकल सुमंगल मूल ॥  
 विप्रन कहेउ विदेह सन जानि समय अनुकूल ॥ ३१८

उपरोहितहे कहेउ नर नाहा  
 सतानंद तव सचिव बुलाये ॥  
 शरवनिशान पगाव बड़ साज  
 शुभरा सुशासिन गावहि गीता  
 लेन चले सादर इहिभांती ॥  
 कीशाल पति का देव समाजू

अब विलस्य केकाररा काहा  
 मंगल कलश साजि सब लाये  
 मंगल कलश सगुन सब साजे  
 करहि वेद धुनि विप्रपुलीता  
 गये जहां जनवास वराती ॥  
 अति लघु लगेति नहि सुरराज

<p>भयेउ समय अब धारिय पाउ शुद्धि पीछे करि कुल विधिरत्ना</p>	<p>यह सुनि पा निशानन घाज चले संग सुनि साज सजाज ॥</p>
<p>दो० साय विभव अब धेश कर देख देव ब्रह्मादि ॥ लगे सराहन सहस सुख जानि जन्म निज वादि ॥ ३१६</p>	
<p>सुरन सुमवाल अब सर जाना शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा प्रेम पुलक तन हृदय उकाह ॥ देखि जनक पुर सुर अचरारी चितवहि चकित विलोकिताना नगर नारी नर रूप निधाना तिनहि देखि सब सुर सुर नारी ॥ विधिहि भयउ आश्रय विशेषी</p>	<p>बरयाह सुसन वजाइ निशाना चढे विमानन नाना युथा ॥ चले विलोकन राम विवाह ॥ निज ३ लोक सर्वादि लघु लीगे रचना सकल अश्लेषिक नाना सुधुर सुधर्म सुशील सुजाना भये नारत जनु विधु उजियारी निज कारागी कहु कतहु न देषी</p>
<p>दो० शिव समुजाये देव सब जनि आश्रय भूलाइ ॥ हृदय विचारहु धीर धरि सिय रघुवीर विवाइ ॥ ३१७</p>	
<p>जिन कर नाम लेत जग माही करतल होहि पदारथ चारी ॥ इहि विधि शम्भु सुरन समुजाये देवन देखे दशरथ जाता ॥ ॥ साधु समाज संग सहि देवा ॥ सोहत साथ शुभग सुत चारी मरकत केनक वरत वरजोरी पुनि रामहि विलोकि हिय हरषे</p>	<p>सकल अमंगल मूल नशाही ते सिय राम कहै उ कामारी ॥ पुनि आगे वर बसह चलावा ॥ महा सोद मन पुलकित गाता जनु तन धरे काहि मुख सेवा जनु अयवरी सकल तनु धारी देखि सुरन भै प्रीतिन थोरी न्यपहि सराहि सुमन तिन वरषे</p>
<p>दो० राम रूप नख सिरव शुभग बाराह वार निहारि पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ ३१८ केकि करठ दुति श्यामल अंगा । तडित विनिन्दक वसन सुरंगा</p>	

आह विभूषणा विविध वजाये  
 पारद विमल विभु वदन मुहावन  
 सकल अलौकिक सुन्दर ताई  
 वन्दु मनोहर सोहहिं संगी ॥  
 राजकुमार वर वजन चा वहिं  
 जेहि तुरंग पर राम विराजे  
 कहिन जाइ सव भाति सुहावा

संगल समय सव भाति सुहाये ॥  
 नयन चवल राजीव लज्जावत ॥  
 कहिन जाय सतही मन भाद्रि ॥  
 जात नचावत चपल तुरंगी ॥  
 वप्रा प्रप्रास क बिरद मुजावहिं  
 गति विलोकि रवगनायक लज्जे  
 वाज मेय जनु काम वजावा ॥

छन्द अनुब्रजि भयवता इम नसि ज रासहित अति सोह ही  
 श्री राम चन्द्र जी की वरात में राजाद सरण भरत शत्रुहन आदि अये ध्यावा सि  
 योको जनक पुर में जाना और आवा नी लेना ॥



अपने वय बल रूप गुणा गति सकल भवन विमोह ही  
 जंराम गति जीन जडाऊ जोति सुमोति मानिक तेहिलगे  
 किंकिया ललाम लगाम ललित विलोकि सुरनर मुनिवणे ३५  
 दो० प्रभु मनसहि लयलीन मन चलत वाजि कविपाष  
 भूषणा उडगारा तडित घनजनु वर बरहि नचाव ॥ ३२२

जोहि बरवाजि राम अस वारा ॥  
 शंकर राम रूप अनुरागे ॥ ॥  
 हरि हित सहित राम जब जोहे  
 निरावि राम कवि विधि हरषाने  
 सुरसेनप उर बहत उछाह ॥  
 रामहि खिन्नव सुरेश सुजाना ॥  
 देव सकल सुरपतिहि सिहाही  
 मुदित देव गारा रामहि देरवी

तोहि शारद न बरणी पारा ॥  
 नयन पंच दश अति प्रिय लागे  
 रमा समेत रमा प्रति मोहे ॥  
 अठे नयन जानि पछि माने ॥  
 विधिते उवदे लोचन लाह ॥  
 गौतम श्राप परम हित माना ॥  
 आजु पुरंदर सम कोउ नाही ॥  
 न्यसमाज डह हरष विशेषी

३॥ अति हर्षराज समाज दुह दिशि दुन्दुभी वाजिघनी  
 वरषहि सुमन सुरहरषिकाहि जयजयति जयरघुकुल मनी  
 इहिभाति जानि बसात आवत वाजने बहु वाजही ॥  
 रानी सु आसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजही ३६  
 दो० सजि आरती अपनेक विधि मंगल सकल संवारि  
 चली मुदित परिछन करन राज गामिनि बर नारि ३२३

विधु वदनी म्भग शावक लोचनि  
 पहिरे बरणा बरणा बर चीरा ॥  
 सकल सुमंगल अंगवनाये ॥  
 ककरा किंकिया नूपुर वाजहि  
 वाजिहे वाजन विविधि प्रकार  
 शची शारदा रमा भवानी ॥ ॥

सब निजतनु कविरोति मद मोचने  
 सकल विभूषणा सजे शरीरा  
 करहि गान कल कण्ठ लजाये  
 चाल विलोकि काम गजलाजिनि  
 नभ अरुनगर सुमंगल चारा  
 जे सुरतिय भुचिसहज सयानी

कपट नारिवरभेष बनाई ॥  
 कारहि गान कल संगलबानी

मिलीं सकल रनिवासहि आई  
 हरष विवसवस काइ न जानी

क० को जानि कोहि आनद वश सब ब्रह्म वर परिकन चली  
 कल गान मधुर निशात वरवाहि सुमन सुर शोभा भली  
 आनंद कन्द विलोकि इ लह सकल हिय हर्षित भई  
 अम्भोज अखुक अम्बु उमंगि सुअंरा पुलका बलि छई ॥ ३७  
 दो० जो सुखभासिय मातु मन देखिराम वर भेष ॥  
 सोन सकहि कहि कल्प शान सहस सारदा शेष ॥ ३४

नयन नीर हाठि संगल जाती ॥  
 वेदविहित अरु कुल व्यवहार  
 मन्त्र शब्द धुनि संगल गाना  
 करि आरती अर्घीतिन दीक्षा ॥  
 दसअथ सहित समाज विराजे ॥  
 समय २ सुरवर्षहि फूला ॥ ॥  
 नभ अरु नगर कोलाहल होई  
 इहि विधि राम मंडपहि आये ॥

परिकन कारहि सुदित मनरानी  
 कीन्ह भली विधि सब परिचार  
 पद पावडे परहि विधि नाना ॥  
 राम गवन मण्डप तब कीन्हा  
 विभव विलोकि लोक पति साजे  
 शांति पढ़हि सहि सुर अनुकूल  
 आपन पर कहु सुनेन कोई ॥ ॥  
 अर्घ देह आसन वैराये ॥ ॥

क० वैठारि आसन आरती करि निराव वर सुख पावहीं  
 मरीा वसन भूषणा भूरि वारहि नारि संगल गावहीं ॥  
 ब्रह्मादि सुर वर विप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं ॥ ३८  
 अब लोकि रविकुल कमल रवि कवि सुफल जोवन लेखहीं  
 दो० नाऊवारी भाट नठ राम निकावरी पाइ ॥  
 सुदित अशीशहि नाइ शिर हषे न हृदय समाइ ॥ ३२५

मिले जनक दशअथ अति प्रीती  
 मिलत महा दोउ राज विराजे  
 लही न कतहुं हारि हिय मानी

करि वैदिक लौकिक सब रीती  
 उपिमा खोजि २ कवि साजे  
 इन समये उपिमा उर आनी ॥

समधी देवि देव अनुरागे ॥  
जग विराधि उपजावा जंबते ॥  
मकल भाति सम साज समाजू  
देव गिरा सुनि सुन्दर सांची ॥  
देत पावडे अर्घ्य सुहाये ॥ ॥

सुमन वरपि यश गावन लागे  
देवे सुने व्याह वह त्वते ॥ ॥  
सम समधी देवे हम आजू ॥  
प्रीति अल्लोकि दड दिशि सांची  
सादर जनक मरुण्य हि ल्याये

ॐ मंडपा विलोकि विचित्र रचना रुचिरता सुनि मन हर  
निज पारिा जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे  
कल इष्ट सरिस वसिष्ठ पूजे विनय करि आसिष लही  
कौशिक हि पूजत परम प्रीति किरांत तीन परे कही ॥ ३६  
दो० राम देव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश ॥ ॥  
दिये दिव्य आसन सर्वाहिं सब सन लही अशीश ॥ ३७

वहरी कीन्ह कोशल पाते पूजा  
कीन्ह जोरि कर विनय वडाई ॥  
पूजे भूपति सकल बराती ॥ ॥  
आसन उचित दये सब काहु ॥  
सकल बरात जनक सन मानी  
विधि हरि हर दिश पाति दिन राऊ  
कपट विप्र वर भेष बनाये ॥  
पूजे जनक देव सम जानि ॥

जानि ईश सम भाव न वजा ॥  
कहि निज भाव विभव बहताई  
समधी सम सादर सब भांती ॥  
कहो कहा सुख एक उकाहु ॥  
दान मान विनती वरवानी ॥  
जे जानहि रघुवीर प्रभाऊ ॥ ॥  
कौतुक देखहि अति सचु पाये  
दिये सु आसन विन पहिचाने ॥

ॐ पहिचान को कही जान सबहि आपान सुष भौर मई  
आनन्द कन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनद मई  
सुरलये राम सुजान पूजे मान सिक आसन दिये  
अब लोकि सरल सुभाव प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भये ४०  
दो० रामचन्द सुखचन्द कवि लोचन चारु चकोर ॥ ॥  
कारत पान सादर सकल प्रेम प्रमीद न घोर ॥ ३८०

समय विलोकि बसिच बुलाये  
 वेगि कुंषरि श्रव श्रानह जाई  
 रानी सुनि उपरोहित बानी ॥  
 विप्रवध कुल च्छ बुलाई ॥  
 नारि वेषु जे सुर वर वासा ॥ ॥  
 तिनहि देखि मुख पावहि नारी  
 वारवार मनसा नाहि रानी ॥ ॥  
 सीय सवारी समाज बताई ॥

सादर सतानंद सुनि आये ॥  
 चले मुदित मन आयसु पाई ॥  
 प्रमुदिन सखिन समेत सयानी  
 करि कुल गीति सुमचाल बाई ॥  
 सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा  
 विन पहिचान प्राणा ते थारी ॥  
 उमारमा शारद सम जानी ॥  
 मुदित मण्डपहि चली लिवाई

कुं० चलि लाई सीताहि सखी सादर सजि सुमचाल भासिती  
 नव सप्र साजे सुन्दरी सब सत कुंजर सामिनी ॥ ॥  
 कलराज सुनि सुनि ध्यान त्यागहि कामको किल लाज ही  
 मंजीर नूपुर कलित ककरा ताल गति वरवाज ही ४९  
 दो० मोहत वनिता वृंदमहे सहज सुहावनि सीय ॥  
 कवि ललना गरा मध्यजनु सुरवमा तिय कमनीय ३२

सिय सुन्दरता बरिमान जाई  
 आवत देखि बरातिन सीता ॥  
 सबहि मन्तहि मनकोन्ह प्रतामा  
 हरषे दशरथ सुतन समेता ॥  
 सुर प्रसास करि वर्यहि फूला ॥  
 गान निशात कुलाहल भरी ॥  
 इहिविधि सीय मंडपहि आई  
 तेहि श्रवसर करि विधि व्यवहा

लघुमति वहत मनोहर ताई ॥  
 रूप राशि सब भाति पुजीता ॥  
 देखि राम भये पूरा कामा ॥  
 कहिन जाई उर श्रानंद जेता ॥  
 सुनि अशीश धुनि मंगल सुला  
 प्रस प्रभोट नवार नर नारी ॥  
 प्र मुदित शक्ति पदहि मुनिवाई  
 इह कुल गुरु सब कोन्ह आचार

कुं० आचार करि गुरु गौरि गरायति मुदित विप्र मुजावही  
 सुर प्रगट पूला लेहि देहि अशीश मुनि सुर पावही  
 मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय सुनि अनमचे



भोकनक कोपर कल्ल प्रासव करलिये परचार कर रहे ॥  
 कुलगीति प्रीति समेत रविकहि देत सब सादर किये ॥  
 इहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुमरा सिंघासनदिये ॥  
 मज बुद्धि वरवानी अगोचर प्रगाट कवि कैसे करे ॥  
 सियराम अचल कोन परस्पर प्रेम काहु न लखि परे ॥  
 वे • होम समय तनु धरि अनल अतिहित अहु तिलेहि  
 विप्रभेय धरि वेद सब कहि विवाह विधि देह ॥

जनक पाद सहि सी जग जानी  
 कुपप्र सुकृत सुरव सुन्दर ताई  
 ससय जानि सुनि वरन उलाई ॥  
 जनक वा म् द्विप्रासेह मुनयना  
 कनक कल्ल प्रासरी कोपर करे

निया सातु किमि जाय वरवानी ॥  
 सब समेटि विधी रची बनाई ॥  
 सुनत सुअसिन सादर ल्याई  
 हिमगिरि संग वनी जनु मयना ॥  
 शुचि सुगन्ध मगल जल पूरे

जनक उर में श्रीराम चनु जी अ श्रीजनकी जीठ कंतय • विवाह



निज कर मुदित राउऔ रानी ॥  
पढ़ि वेद मुनि मंगल बानी ॥  
बर विलोकि दम्पति अत्ररागे ॥

धरे रामके आगे आनी ॥  
गगन सुमन जोरि अबसरजानी ॥  
पाय पुनीत परवारन लागे ॥

छं० लगे परवारन पाय पंकज प्रेम तनु पुलका बली ॥  
नभ नगर गान निशान जय धुनि उमगिजन बहुदिगीलली  
जे पद सरोज मनोज अरि उरै सदैव विराजही ॥ ४४  
जे सुकृति मूरति विमलता मन सकल करि मलभाजही  
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई  
मकारं जिनको शम्भु सिर श्रुचिता अधिध सुवरनई  
करि मधुप मुनि मन योगि जन जैसेई अभिमति लहे मत  
ते पद परवारन भाग्य भाजन जनक जयजय सबको ॥ ४५  
बर कुंवर करतल जोरि शारवो द्वार दीउकुल सुकक  
भयो पारिाग्रहरा विलोकि विधि सुरमनुज मुनि अनंद भरे  
धुखमूल दूल्ह देखि दम्पति पुलकि तनु हलसै हिये  
करि लोक वेद विधान कन्या दान न्य भूषणा दिये  
हिमवत जिमि गिरजा महेशहि हरिहि श्रीसागर दई  
तिमि जनक रामहि सिय समर्पी विश्वकल कीरति नई  
इक ठौर करि जोरी शुभग पुनि गौरि मूरति सांवरी  
करि होमविधि वत गादि जोरी होन लागी भांवरी ॥ ४७  
दी० जय धुनि बन्दी वेद धुनि मंगल गान निशान ॥  
सुनि हरषहि वरषहि सुमन सुरतरु सुमन सुजान ३३०

कुंवारे कुंवारे कल भावर देहो ॥  
जाइ न बरनि मनोहर जोरी ॥  
रामसीय सुन्दर पारि काही ॥  
मनह मदन रति धरि बह रूपी ॥

नयन लाभ सब सादर लेहो ॥  
जो उपिमा कछु कहिये सो थोरै ॥  
जगमगादि मरिा खंभन भाही ॥  
देखहि राम विवाह अनुया ॥

दरश लालसा सकुच न थोरी  
 भये मरान सब देखत हारे ॥  
 प्रसुदित मनन भावरी फेरी ॥  
 राम सीय सिर सिंदूर देही ॥ ॥  
 अरुण पाराज जलज मारे नीके  
 वही बसिय दोन्ह अनुसासन

प्रगटत इरत बहोरि वहोरी ॥  
 जनक समान अपान बिसारे ॥  
 नेग लहित सबरीति निवेरी ॥  
 शोभा कहिन जात विधिहीके  
 शशिहि मूष अहिलोभ अमीके  
 वर डलहिन बैठे एक आसन ॥

६० वेठे बरासन राम जानके सुदित मन दशरथ भये ॥  
 तत पुलकि पुनि देख अपनि सुकृत सुरतरु फल नये  
 भरी भुवत रहा उछाह राम विवाह भासवही कहा ॥  
 कोहि भांति वरणी सिगत रसना एक मुख मंगल महा ४८

तब जलक पाइ वसिय आयसु व्याह साजि संवारि के ॥  
 मांडवी भुति कीरति उर्मिला कुवरि लई इंकारि के ॥  
 कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुरा शील गुरा शोभा सर्व  
 सबरीति प्रीति समेत कारि सो व्याह न्यप्र भरतहि दई ॥ ४८

जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरो मरी जातिके  
 सो जनक दोह्यी व्याहिल पगाहि सकल विधि सनमाविके  
 जेहि नाम भुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुरा अगरी  
 सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप शील उजागरी ॥ ५०

अनु रूप वर डलहिन परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहि  
 सब सुदित सुन्दरता सराहहि सुमन सुरगता वर्षही ॥  
 सुन्दरी सुन्दर वरणा सब एक संदये राज ही ॥ ॥

जनु जीउ उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजयी ५१  
 सुदित अवधि पति सकल सुत वधुत समेत निहारी  
 जनु पाये महिपाल मरी कपन सहित फल चारि ३३१

जसर घु वीर व्याह विधि वरणी सकल कुवर व्याहे तेहि करणी ॥

कहिन जाइ कछु दायज भूरी ॥  
 कम्बल बसन विचित्र पटौरी ॥  
 गजरज तुरंग दास अरु दासी ॥  
 वस्तु अनेक कारिये किमिलेखा  
 लोक पाल अवलोकि सिहाने  
 दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा  
 तब कर जोरि जनक मृदुवाती ॥

रहा कनक मणि मंडप पूरी  
 भांति २ वड मोलन थोरि ॥  
 धेनु अलकृत काम दुहासी ॥  
 कहिन जाइ जानहि जिन देखा  
 लीन्ह अदध पति सब सुख माने  
 उवरा जो जनवा सहि आवा ॥  
 बोले सब बरात सनमानी ॥

छं० सनमान सकल बरात सादर दान विनय बड़ाय कै ॥  
 पर मुदित महा मुनि वन्द वन्द पूजि प्रेम लड़ाय कै ॥  
 सिंहादेव मनाय सब सन कहत कर सम्युट किये  
 सुरसाधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अजुलिदिये ५२  
 का जोरि जनक चहोरि वन्दु समेत कौशल राय सो  
 बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभाय सो ॥  
 सम्वन्ध राजन रावो हम वदे अब सब विधि भये ॥  
 यह राज साज समेत सेवक जानि वी विनु गण लये ॥ ५३  
 यह दारिका पार चारिका करि पालिबो करुणा मयी ॥  
 अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हो दीवी दयी ॥  
 पुनि मानु कुल भूषणा सकल सनमान विधि समधी किये  
 कहि जात नहि विनती परस्पर प्रेम परि पूरणा हिये ॥ ५४  
 दंडारिका गंगा सुसन वरषहि राउ जन वासहि चले ॥  
 दुंदुभी धुनि वेद धुनि जस नगर कोत हल भले ॥ ॥  
 तब सरिबन मंगल गान कारत सुनीश अपसु पाइ कै  
 दुसह डलहिन सहित सुन्दरि चली कु हवर ल्याइ कै ५५  
 दो० पुनि रामहि चितव सिय सकुचत सस सकुचन  
 हरित मनोहर मीन कवि प्रेम प्रियासे नैन ॥ ॥ ॥ ३३२१

श्यामशरीर सुभाय सुहावत ॥  
 पावकजुतपद कमल सुहाये ॥  
 प्रीतिपुनीत मनोहर धोती ॥  
 कल किंकिरा कटि सूत्र मनोहर  
 पीट जनेउ महा कवि देई ॥ ॥  
 सोहत व्याह साज सब साजे ॥  
 पीत उबरना कांखां सोतो ॥  
 नैयन कमल कल कुंडल काना  
 सुन्दर भूकुटि मनोहर नासा ॥  
 सोहत भौर मनोहर साथे ॥ ॥

शोभाकोटि मनोज लजावन  
 सुनिमनमधुप रहतजहं करयो ॥  
 हरतवालरविदामिन जोती ॥  
 बाहु विशालविभूषणा सोहर ॥  
 करसुद्रिका चोरिचितलेई ॥  
 उर आयत सदभूषणा राजे ॥  
 दुहू आचरन लगे मरिामोती  
 बदन सकल सौंदर्य निधाना  
 भाल तिलक षुचिरुचिर निवस  
 मंगल मय मुकता मरिा साथे ॥

छं०

गाथे महा मरिा भौर मंजुल अंग सब चित चोरही  
 पुनि नारि सुन्दर वर विलोकहि निररिव कवितरा तोरही  
 मरिा बसन भूषणा वारि आरति करहि मंगल गावही  
 सुर सुमन वर्षाहिं सूत मागध वन्दि सुयश सुनादही ५६  
 कुहवरहि आने कुंवर कुंवरि सुआसिनिन्ह सुखपाडुके  
 अति प्रीति लौकिकरीति लागी करम मंगल राडुके ॥  
 लह कौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सादर कहै  
 रनि वास हास विलास सरवस जनमको फल सबेलेह ५७  
 निज पारिामरिा महं देखि प्रति मूरति स्वरूप निधानकी  
 चालतिन भुजवत्नी विलोकनि विरहवस भद्र जानकी  
 कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम नजाडु कहि जानहि चली ॥  
 वर कुंवरि सुन्दर सकल सरिबन लिवाडु जनवासीहि चली ५८  
 तेहि समय सुनिय अशीश जहंतहं नगर नभ आनंद महा  
 चिर्जीवह जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा ॥  
 योगीन्द्र सिद्ध सुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभी हनी ॥

चले हरषि वरष प्रसून निज श्लोकजय ३ मनी ५२  
 सहित वधूदिन कुंवर सब तब आये पितु पास ॥  
 शोभा संगल मोद भरि उमगे उ जनु जन वास ॥ ३३३

पुनि जेवनार भये उ वह भांती  
 पदत पावड वसन अनूपा ॥  
 सादर सबके पाव परवार ॥  
 धोये जनक अवाधि पाते चरणा  
 वहरि राम पद पंकज धोये  
 तोनो भाइ राम सम जानी ॥  
 आसन उचित सर्वाहि न्यप दीन्हे  
 सादर लगे परत पनवार ॥

पठये जनक बुलाय वराती ॥  
 सुतनु समेत गवन किय भूषा ॥  
 यथा योग पोढन वैठारि  
 शील सनेह जाय नहि वरणा ॥  
 जेहर हृदय कमल मह गोये ॥  
 धोये चरणा जनक निजे पानी ॥  
 बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥  
 कनकर बिल मारि परत संवारि

दो० सुपोदन सुरभी सरषि सुन्दर स्वाड पुनीत ॥ ॥  
 क्षणा मह सबके परसिगे चतुर सुआर विनीत ॥ ३३४

पंचकोर करि जेवन लागे ॥  
 भांति अनेक परे पकवाता ॥  
 परुसन लगे सुआर सुजाना ॥  
 चारि भांति भोजन विधि आई  
 कर सरुचि रंजन वह जातो ॥  
 जेवत देहि मधुर धुनि गारी ॥  
 समय सुहावन गारि विराजा ॥  
 रित नूतन मंगल पुरमाही

गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥  
 सुधा सरस नहि जाय वरवाना  
 व्यंजन विविधि नाम को जाना ॥  
 एक एक विधि वरिणान जाई ॥  
 एक रस अवारिणत भांती ॥  
 लैले नाम पुरुष अरु नारी ॥  
 हंसतराउ सुनि सहित समाजा  
 निमिय सरस दिन जामिन जाही ॥

दो० देप पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ॥  
 जनबासे गवने मुदित सकल भूपतिर ताज ॥

एहि विधि सबही भोजन कीन्हा  
 बडे भोर भूपति मारि जागे ॥ ॥  
 देरि वं कुंवर वर बधुन समेता  
 प्रात क्रिया करि गे गरु पाही

सादर सहित आव मन लीन्हा  
 जाचक मुनि गारा गावन लागे  
 किमि कहि जात मोद मद जेता ॥  
 महा प्रमोद प्रेम मन माही ॥

करि प्रणाम पूजा कर जेसी ॥ बोलै गिरा अस्मिय जु बुबोरी ॥

तुम्हरी कृपा सुनिये मुनि राजा  
श्रव सब विप्र बुलाइ गुसाई  
मुनि गुरु करि महिपालवडाई

भयेउ श्राजु मम पूरता काजा  
देहु धेनु सब भाति बनाई ॥ ॥  
पुनि पठये मुनि अन्ध बुलाई ॥

दो० वामदेव अरु देव ऋषि बालमीक जा बालि ॥

श्राये सुनि बर निकर तब कौशिकादि तपसालि ३३६

दंड प्रणाम सबहि न्यपकीन्हा  
जागि लक्ष वर धेनु संगी ॥  
सब निधि सकल अलक्षतकीन्ही  
करत विनय बहुविध नरनाह  
याइ अशीश महीश अनन्दी  
कनक बसन मणि हय राजस्यंदन  
बले परत गावन गुरागाथा  
इहि विधि राम विवाह उखाह

पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥  
काम सुरभि सम शील सुहाई  
मुदित महीप ऋषिन कह दीन्ही  
लहैउ श्राजु जग जीवन लाह ॥  
लिये वेलि पुनि याजक चन्दा ॥  
दिये वृषि रुचि रविकुल नंदन  
जय ३ दिन कर कुल नाथा ॥  
सकै न वरगा सहस सुख जाह

दो० बार बार कौशिक चरगा शीश नाइ कह राउ ॥

यह सब सुख मुनि राज तब कृपा कदाक्ष प्रभाउ ३३७

जनक सनेह शील करत ती ॥  
दिन उठि विदा श्रवधिपति मारा  
नित नूतन आदर अधिक आई  
नित नव न राउ अनंद उखाह  
बहुत दिवस बीते यहि भाती ॥  
कौशिक सतानंद सब जाई ॥  
श्रव दसरथ कह श्रायसु देह  
भलेहि नाथ काहि सचिब बलीये

न्यप सब भाति सगाह विभूती ॥  
रासहि जनक महित अनुरागा  
दिन प्रति सहस भाति पढ़नाई  
दसरथ रावन सोहाय न काह  
जनु सनेह रजु बंधे बराती ॥  
कही विदेह न्यपहि समुजाई ॥  
यदीपे काडि न सकाह सनेह ॥  
काहि जय जीव शीश नित नाये ॥

दो० श्रवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव ॥

भये प्रेम बस सचिव सुनि विप्र सभा सद राव ॥ ॥ ३३८

पुरवासी सुनि चली बराता ॥  
 सत्य गवत सुनि सब विलखाने  
 जहं जहं आबत बसे बराती ॥  
 विविधि भांति सेवा पकवाना ॥  
 भरी भरी बसन अपार कहारा  
 तुरंग लाख रथ सहस्र पचीसा  
 मत्त सहस्र दश सिंधुर साजे ॥  
 कन्नक बसन मरिा भरी २ याना

पूकत विकल परस्पर बाता ॥  
 मनइ सोभ ॥ सर सिज सकुचाने  
 तह तह सीध चलावइ भांती  
 भोजन साज न जाय बरवाना ॥  
 पठये जनक अनेक सुभ्यारा ॥  
 सकल संवारे नख अरु शीशा  
 जिनहि देखि दिशि कुजर लाजे  
 महिषी धेनु वस्तु विधि नाना

दो० दायज अमितन सकिय कोहि दोन विदेह वहीरी  
 जो अब लोकांत लोक पति लोक सम्यदा थोरि ॥ ३३६ ॥

सब समाज यहि भांति बनाइ  
 बलिहि बरात सुनाहि सब रानी  
 पुनि २ सीय गौद कर लेइ ॥  
 होइ हह संत त्त पियहि पियारी  
 सासु ससुर गुरु सेवा करह ॥  
 अति सनेह बस सरवी सयानी  
 सादर सकल कुवर समजाइ  
 बहारी बहारी भैरहि महतारी

जनक अवध पुर दोन पठाइ ॥  
 विकल सीन गारा जनु लक्ष्मि पानी  
 देइ अशीश सिखावन देहो ॥  
 चिर अहिवात अशीश हमारी ॥  
 पति रुख लखि आयसु अनुसर  
 नारी धर्म सिखवाइ हृदु बानी  
 गनिन बार २ उर लाइ ॥ ॥ ॥ ॥  
 कहहिं विरचि रची कंत नारी ॥

दो० तोहि अबसर भाइन सहित राम भानु कुलकतु  
 चले जनक मंदिर सुदित विदा करावन हेतु ॥

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये ॥  
 कोउ कह चलन चहत हहि अज  
 लेह नयन भरी रूप निहारी ॥  
 को जाने कोहि सुकृत सयानी  
 मरगा शील जिमि याव पियूषा

नगर नारि नर देखन धाये ॥  
 कीन्ह विदेह विदा कर साजू ॥  
 प्रिय पाइने भूप सुत चारी ॥ ॥  
 नयन अतिथि कीन्हे विधि अज  
 सुर तरु लहे जन्म कर भूरवा ॥



पाव नारकी हरि पद जैसे ॥  
निरखि राम सोभा उर धरह ॥  
यहविधि सवहि नयन फल देत ॥

इनकर दरशन हम कहें तैसे ॥  
निज मन फरि मूरति मरिा करह ॥  
गये कुंवर सब राज निकेत ॥

दो० रूप सिध सब बन्धु लखि हराषि उठी राने वासु  
करहि निहावर आरती महा मुदित मन सासु ॥ ३४९

देखि राम कवि अति अच्युत रागी  
रहीन लाज प्रीति उर छाड़ै ॥  
भाड़न सहित उवटि अन्हवाये  
बोलि राम सुअवसर जानी ॥ ॥  
राउ अवध पुर चहत सिधोस ॥  
सातु मुदित मन आयसु देह ॥  
सुनत वचन बिलखेउ रतवासु  
हृदय लगाय कुंवरि सब लीन्ही

प्रेम विवस पुनि पुनि पद लागी  
सहज सनेह वाराी किमि जाई  
छरस अशन अति हेतु जिवाये  
शील सनेह सकुच मय वानी ॥  
विदा होत हित हमहि पठाये ॥  
बालक जानि कख नित नेह ॥  
बेलि न सकहि प्रेम बस सासु ॥  
पतिन सहित विनती अतिकीन्ही

क० करि विनय सिय रामहि समयी जोर कर पुनि २कहे  
बलिजाउ तात सुजान तुम कह विदित गति सबकी अहे  
परि वार पुरजन सोहि राजहि प्रारा प्रिय सिय जानिबी  
तुलशी सुशील सनेह लखि निज किा करी करि मानिबी  
तुम परि पूरणा काम ज्ञान शिरो मरिा भाय प्रिय  
जनु गुन गाहक राम दोष दलन कर रााय तन ३०

असकहि रही चरणा गहिरानी  
सुनि सनेह सानी वर वानी ॥  
राम विदा मागत कर जोरी ॥  
पाइ अश्रीश बडरि शिर नाई  
संजु मधुर मूरति उर आनी ॥  
पुनि धीरु धरि कुंवरि हंकारी

प्रेम पंकजनु गिरा समानी ॥  
बड विधि राम सासु सनमानी  
कीन्ह प्रणा सब होरि बहोरी ॥  
भाड़न सहित चले रघुराई ॥ ॥  
भई सवेह सिथिल सब रानी ॥  
वार वार भेठहि महतारी ॥ ॥

पड़चाही फिरि मिलीहवहोरी ॥ बदी परस्पर प्रीति नयोरी ॥  
पुनि मिलति सखिनविलगाई ॥ बालवत्सजनु धेनु लवाई ॥ ॥

दो० प्रेम विवस नरनारि सब सखिन सहित रतिवास  
मानह कीन्ह विदेह पुर करुणा विरह निवास ३४२

धुक शारिर्कजानकी जि अये व्याकुल कहहि कहा बैदेही ॥ भये विकल खग मृग इहि भांती बन्धुसमेत जनक तव आये सीय विलोकि धीरता भागी लीन्ह राउ उर लाइ जानकी समुझावत सब सचिव सयान वाराह बार सुता उर लाई ॥	कनक पिञ्जरन राखि फराये ॥ सुनि धीरज पारि हरे नु केही ॥ मनुज दशा कैसे कहि जाती प्रेम उमरि लोचन जलछाये रहे कहावत परस विरागी मिठी महा मर्याद जानकी कीन्ह सुभाव म्रु नवसर जाने सजि सुन्दरि पालकी मगाई
---	---

दो० प्रेम विवस परिवारे सत्र जानि सुलगन नरेश  
कुंवारि चढ़ाई पालकी सुमिरि सिद्धि गरीश ॥ ३४३

बहु विधि भूप सुता समुकाई दासी दास दिये बहु तरे ॥ सीय चलत व्याकुल पुर वासी भूसुर सचिव समेत समाजा गजरथ बाज वरातिन साजे ॥ दसरथ विप्र वोलि सब लीन्ह चराा सरोज धूरि धीरे शीशा सुमिरि गजानन कीन्ह यमाना	नारि धर्म कुल रीति सिखाई शुचि सेवक जे प्रिय सियको होइ सगुणा भूम संगत राशी संग चले पड़चावन राजा ॥ सुनि गह गहे बाजने बाजे ॥ दान मान परि पूरना कीन्ह ॥ सुदित महीपति पाइ अशीशा मंगल मूल सगुणा भै नाना
--	--

दो० सुर प्रसून वर्षाहि हरषि करहि अप्सरा गान  
चले अवध पति अवधपुर सुदित वजाइ निशान ३४४

न्य की विनय महाजनको ॥ सादर सकल मोगने टरे ॥

भूषणा वसन वज्रि गज दीन्हे  
 बार बार विरदा वलि भाषी ॥  
 वही श्कोशल पति कह ही ॥  
 पुनिकह भूपति वचन सुहाये  
 राउ वहीरि उतरि भये ठाठे ॥  
 तव विदेह बोले कर जोरी ॥  
 करौ कवन विधि विनय सुहाई

प्रेम पोषि ठाठे सब कीन्हे ॥  
 फिर सकल रामहि उर राषी  
 जनक प्रेम वस फिरान चह ही  
 फिरिय महीप दूरि बडि आये ॥  
 प्रेम प्रवाह विलोचन वाटे ॥  
 वचन सनेह सुधा जनु बोरी ॥  
 महाराज मोहि दीन्ह बडा डी ॥

दो० कौशलपति समधी सजन सतमाने सब भाति  
 मिलन परस्पर विनय करि प्रीति न हृदय समाति ३४५

मुनि मण्डली जनक शिर नावा  
 सांढर पुनि भेटे जा माता ॥ ॥ ॥  
 जोरि एक रुह पारिा सोहाये  
 राम करौ केहि भांति प्र सासा ॥  
 करहि योग योरी जेहि लागी ॥  
 व्यापक ब्रह्म अलख अविनासी  
 मन समेत जेहि जानन बानी  
 महिमा निगम नेति करि कह ही

आशिरवाद सबहि सन पावा ॥  
 रूपशील गुरानिधि सब भाता  
 बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥ ॥ ॥  
 मुनि महेश मन मावस हंसा ॥  
 कोह मोह ममता मद त्यागी  
 बिदानंद निगुरा गुरा राशी ॥  
 तरकि न सकाहि सकल अनुमानि  
 जो लिह काल एक रस रह ही ॥

दो० नयन विषय मो कह भय ड सो समस्त सुरवमूल  
 सवाहिसल भजग जीव कह भये ईश अनुकूल ३४६

सवाहि भांत मोहि दीन्ह बडा डी  
 होइ सहस द्रुपारद शेषा  
 भोर भाग्य राउर गुसा गाथा  
 नैक छु कहौ एक बल भोरे ॥  
 बार बार मागो कर जोरे ॥ ॥  
 सुधि पर वचन प्रेम जनु पोषे

निज जन जानि लोन्ह अपन व  
 करहि कल्प कोटिक सरि लेषा  
 कहिन सिराहि सुनिय रघुनाथ  
 तुमरी ऊउ सनेह सुठि थारे ॥  
 मन परि हरेइ बरा जनि भोरे ॥  
 पूरा कास राम परि तोषे ॥

करि वर विनय सभुर सनमाने  
विनती बहुरि भरत सन कौन्ही

पितु कौशिक वसिष्ठ समजाने  
भिलि सुप्रेम पुनि आसिष दीन्ह

दो मिले लषरा रिपु सूदनाहि दीन्ह अश्रीशमहीश  
भये परस्पर प्रेम बस फि फि नावाहि शीश ॥ ३४७

बार बार करि विनय बडाई ॥  
जनक गह कौशिक पद जाई  
जो सुख सुयश लोकपति वहही  
सुन सुनीश सब दरशन तोरे ॥  
सो सुख सुयश सुलभ मोहि स्वामी  
कीन्ह विनय पुनि शिर नाई ॥  
चली बरात निशान बजाई ॥  
रामहि निरषि ग्राम नर नारी

रघुपति चले मग सब भाई  
चरारै न शिर नयनन लाई  
करत मनोप्य सकुचत अहही  
अगमन कछु प्रतीति मन मार  
सब सिधि तव दर्शन अनु रामी  
फिरे महीपति आशिष पाई ॥  
मुदित छोटवट सब समुदाई  
पाइ नयनफल होहि सुषारी

वा० बीच २ वरवास कार मंगलाम्नन सुख दंत ॥ ॥  
अवधि समीप पुनीत दिन पहंची आइ जनत ॥ ३४८

हने निशान पराव वह वाजे ॥  
भांरु मृदंग डिमि डिमी सुहाई  
पुरजन आवत अकनि वराता  
निजे २ सुन्दर सदन सवार ॥  
गली सकल अरगजा सिचाई  
वनावजारन जात वरवाना ॥  
सुफूल पुंग फल कदलि रसाला  
लगे शुभगत रू परसति धरसी

भेरि शंख धुनि हय गय गाजे  
सरस राग वाजे सह नाई ॥  
मुदित सकल पुलकावलि राता  
हाठवाट चौहत पुर द्वारे ॥ ॥  
जह तहें चौके चारु पुराई ॥ ॥  
चौरसा कतु पताक विताना ॥  
रोपे वकुल कदम्ब तसाला ॥  
मरिण मय अल बाल करि करी

दो विविधि भांति मंगल सकल रह २ रचे सवारी ॥  
सुर ब्रह्मादि सिहाहि सब रघुवर पुरी निहारि ॥ ३४९

भूप भवन तोहि अक्सर सोहा

रचना देखि सदन मन मोहा

<p>मंगल शकुल अनोहर ताई  जनु उकाहसव सहज सुहाये ॥  देखन हेत राम वैदेही ॥ ॥  यूपर मिलि चली सुआसिन  सकल सुमंगल सजी आरती  भूपति भवन कुलाहल होई  कोशल्यादि राम सहतारी ॥</p>	<p>रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई  तनु धारी २ दशरथ सह आयी ॥  कहई लालसा होइन केही  निज कवि निदरहि मदन विलासिनि  गावहि जनु चड भेव भारती ॥  जाइन चारो समय सुख मोई  प्रेम विवशत नू दशा विसारी ॥</p>
<p>दो० दिये हात विप्रन विपुल पूजि गारोरा पुरारो ॥  प्रसुदित परस दलिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥ ३५०</p>	
<p>प्रेम प्रसोद विवस सब साता  राम दरश हित अति अनुरागी  विविधि विधान बाजेन बाजे  हरद दूव दधि पल्लव फुला ॥  अक्षत अंकुर रोचन लाजा  कुण्डे पुरट घट सहज सुहाये ॥  शकन सुगंधन जाहि वधानी  रची आरती विधिध विधाना ॥</p>	<p>चलहिन चरणा शिथिल सब गात  परिखन साज सजन सब लागी  मंगल सुदित सुमित्रा साजे ॥  पान पुंग फल मंगल मूला  मंजुल मंजरी तुलसि विराजा  सदन शकुनि जनु नीदवनाये ॥  मंगल सकल सजहि सवराणी  सुदित काहि कल मंगल गाना ॥</p>
<p>दो० कनक थार भरे मंगलनि कमल करन लिये मात  चली सुदित परिखन करन पुलक पक्षवित गात ३५१</p>	
<p>धूप धूप नभमें वक भयऊ  सुरतह सुमन भाल सुरवरषहि  मंजुल मारो मयवंदन वारा ॥  प्रगटहि दरहि अटन परभासिन  दुंदभी धुनि घन गरजहि घोरा ॥  भुवि सुतंध वह धरषहि वारी ॥</p>	<p>सावन घन धुमंड जनु हू येऊ  मनह दिलाकि अघालि मनकरा  मनह पाक रिपु थाप सवारा ॥  चाक चपल जनु दमकाहि दामिनि  याचक चातक दाडर मोरा ॥  सुरवी सकल शशि पुरनर नारी</p>

समय जानि गुरुआयसु दीन्हा  
सुभीरु शंभु गिरजागारा राजा ॥

पुर प्रवेश रघुकुल मरिा कीन्हा  
मुदित महीपति सहित समाजा

दो० दौहि शकुन वरषाहि सुमन सुर इन्दुभी वजाइ ॥ ३५२  
विविधि चधू नाचहि मुदित मंजूल मंगल गाइ ॥

मागध सुत वन्दि मट नगर ॥  
जे धुनि विसल वेद वर वानी  
विपुल वाजने वाजने लागे  
वने बराती बरशान जाही ॥  
पुर वासिन तव राउ जुहारे ॥ ॥  
करहि निळावरी मरिा गारा चारा  
आराते करहि मुदित नर नारी  
शिविका सुभग ग्रीहारा उधारी

गावहि यश तिहू लोक उजागर  
दशादिशि सुनिये सुमंगल साने  
नभ सुर नरार लोग अनुरागे  
महा मुदित मन सुखन समाही  
दिवत रामहि भये सुखारे ॥ ॥  
वारि विलोचन पुलक शरीरा ॥  
हरषहि निरखि कुवर वरचारी  
देखिदलाहिनिहू होहि सुधारी

दो० रुद्रिविधि सवही देत सुख आये राज उधारे ॥ ॥  
मुदित मानु परछन करहि वधुन समेत कुमार ॥ ३५३

करहि आरती वाराहि वारा ॥ ॥  
भूषणा मरिा पट नाना जाती ॥  
वधुन समेत देखि सुत चारी ॥  
पुनि २ सीय राम कावे देखी ॥  
मरवी सीय सुख पुनि २ चाही ॥  
वरषाहि सुमन क्षराहि क्षरा देवा  
देखि मनोहर चारि त जोरी ॥  
देतन वनहि निपट लघुलागी

प्रेम प्रमोद कहे को पारा ॥  
करहि निळावरी अगरीात भंती  
परमानन्द भगन महतारी ॥ ॥  
मुदित सुफल जगजीवन लेखी  
गान करहि निज सुकत सगही  
नाचहि गावहि लावहि सेवा  
शारद उपमा सकल दबोरी  
इक एक रही रूप अनुरागी ॥

दो० निगम नीत कुल रीति करि अथ पावडे देत ॥  
वधुन सहित सुत परछि सब चलीलिवाइ बिकेत ॥ ३५४

चारे सिंहासन सह ज सुहाये ॥

जनु मनोज निज हाथ वनाये ॥

तिन पर कुंवरि कुंवर पैठारे ॥  
 धूप दीप नैवेद्य वेद विधि ॥  
 वारहि वार आरती करही ॥  
 वस्तु अनेक निछावरी होही ॥  
 पावो परम तनु जनु योगी ॥  
 जन्म रंक जनु पारस पावा ॥  
 सूक वदत जस शारद छाई ॥

सादर पांय पुनीत परवारे ॥ ॥  
 पूजे वर डलहिन मंगल निधि ॥  
 व्यंजन चारु चामर सिरहरही ॥  
 भरी प्रसोद मातु सब सोही ॥ ॥  
 अमृत लूखुजनु संतत रोणी ॥  
 अंधिहि लाचन लाभ सुहावा ॥  
 मानहु मसर सर जय पाई ॥ ॥

दो० इह सुरवते शत कोटि गुणा पावहि मातु अनंद ॥  
 भाइन सहित विवाह घर अ्याये रघु कुल चन्दा ॥ ३५५ ॥  
 लोक रीति जननी करहि वर डलहिन सकुचाहि ॥  
 सोद विनोद विलोकि वड राम मनहि मुसकाहि ॥ ३५६ ॥

देव पितर पूजे विधि नोकी ॥  
 सवहि बन्दि भागहि वर दाना ॥  
 अंतर हित सुर आशिष देही ॥  
 भूपति बालि वरातिन लीन्ह ॥  
 अ्याय सुपाद राखिउर रामहि ॥  
 पुर नर नारि सकल पहिराय ॥  
 याचक जन याचहि जोइ जोई ॥  
 सेवक सकल वजनि पा नाना ॥

पूजी सकल वासनी जोकी ॥  
 भाइन सहित राम कल्याना ॥  
 मुदित मातु अंचल भरि लेही ॥  
 यान वसन मरिा भूषणा दीन्ह ॥  
 मुदित गये सब निज र धामहि ॥  
 घर घर वाजहि अनंद वधाया ॥  
 प्रमुदित राउ देइ सोइ सोई ॥  
 पूरणा किये दान सन माना ॥

दो० दोहं अशीश जुहारि सब गावहि गुणा गरागाथ ॥

तव गुरु भूसुर सहित ग्रह गवन कीन्ह नरनाथ ॥ ३५७ ॥

जा वसिय अनुशासन दोन्हा ॥  
 भूसुर भोर देखि सब रानी ॥  
 पाय परवारि सकल अन्हवाये ॥  
 आदर दान प्रेम परि तोषे ॥

लोक वेद विधि सादर कीन्हा ॥  
 सादर उठी भास्य वड जानी ॥  
 पूजि भली विधि भूप जिवाये ॥  
 दित अशीश चले मन तोषे ॥

वह विधि कीन्ह गाधिसुत पूजा  
 कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ॥ ॥ ॥  
 भीतर भवन दीन्ह बर बासू ॥ ॥ ॥  
 पूजे गुरु पद कमल बहोरी ॥ ॥ ॥

नाथ मोहि सम धन्यतूजा ॥  
 रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी  
 मन जुगवत रह न्यपति ररावास्  
 कीन्ह विनय मन प्रीतिन थोरी

दो० वन्धुन समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीश  
 पुनि पुनि बन्दत गुरु चरणा देत अश्रीश मनीश ३५८

वितय कीन्ह उर अति अनुरागे  
 नेग मांगि मुनि नायक लीन्हा  
 उर धरि रामहि सीय समेता ॥  
 विप्रवधू कुल वृद्ध बुलाई ॥ ॥  
 वद्वारि बुलाई सुआसति लीन्ही  
 नेगी नेग योग सब लीही ॥ ॥  
 प्रिया पाहने पूज्य जे जाने ॥ ॥  
 देव देखि रघुवीर विवाह ॥

सुत सम्पदा रावि सब आगे ॥  
 आशिरवाद वहत विधि दीन्हा  
 हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेत  
 चीर चारु भूषणा पहिराई ॥  
 रुचि बिचारि पहिरवत दीन्ही  
 रुचि अनुरूप भूष मरिा देही ॥  
 भूपति भली भांति सतमाने ॥  
 वरषि प्रसून प्रशंसि उक्ताह ॥

दो० चले निशान वजाइ सुर निज २ पुर सुरव पाइ ॥  
 कहत परस्पर रामयश हर्ष न हृदय समाइ ॥ ३५९

सब विधि सबहि मुदित नरनाह  
 जहं रनिवास तही पग धारे  
 लिये गोद करि मोद समेता ॥  
 वधू सप्रेम गोद बैठारी ॥ ॥ ॥  
 देखि समाज मुदित रनिवास ॥  
 कहेउ भूप जिमि भयउ विवाह  
 जनक राज गुणा शील बडाई  
 वह विधि भूप भाट जिमि वररागी

रहा हृदय भरि पूरि उक्ताह ॥  
 सहित वद्वारिन कुंवर निहारे  
 को कहि सके भयउ सुख जेता  
 बार बार हिय हर्ष दुलारे ॥  
 सब के उर अग्रानंद विलास  
 मुनि मुनि हर्ष होत सब काह  
 प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥  
 रानी सब प्रमुदित मुनि कारागी

दो० सुतन समेत नहाइ न्यप बोलि लिये गुरु ज्ञाति



भोजन किये अनेक विधि धरी पांच गढ़ राति ३६०

मंगल गान करहि बर भासिनि  
अंचे पान सब काहन पाये ॥  
रामहि देखि रजोयसु पाई ॥  
प्रेम प्रसीद विनोद बडाई ॥  
कादिन सकहि श्रुति शारद शेषु  
सोमै कहौ कवन विधि बरराी  
नय सब भांति सबहि सनसानी  
वधू लरिकिनी पर घर आई ॥

भई सुख मूल मनोहर यामिनि  
स्त्रग सुगन्ध भूषित द्विद्वये  
निज २ भवन चले शिर ताई ॥  
समय समाज मनोहर ताई ॥  
वेद विरच महेश गरीशू ॥  
भूसि नारा शिर चरोकि धरराी ॥  
कहि मृदु वचन बुलाई रानी ॥  
राखहनयन पलक की नाई ॥

दो० लरिका श्रमित उनीद बस शयन करावहु जाइ  
अस कहि गये विश्राम गढ़ रामचरणा चितलाइ ३६१

भूय वचन सुनि सहज सुहाये  
सुभवा सुरभि पय फेनु समाना  
पुष बरहन बर बरराी न जाही  
रान दीप सुठि चारु चंदोवा ॥  
सेज रुचिर रचि राम उवाये ॥  
आज्ञा पुनि २ भाइन दीन्ही ॥  
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता  
भारग जात भयावनि भारी ॥

जदित कतक मारी पलंग उसाय  
कोमल कलित सुपेती नाना  
स्त्रग सुगंध मारी मंदिर मोही  
कहत न वने जान जेहि जोवा ॥  
प्रेम समेत पलंग पौदाये ॥  
निज २ सेज शयन तिन कीन्ही  
कहि सप्रेम वचन सब माता  
केहि विधि तात ताडका मारी

दो० घोर निशाचर विकट भट समर गने नहि काह  
सारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाह ३६२

मुनि गसाद बल तात तुम्हारे  
मख राववारी करि डुहं भाई  
मुनि तिय तरी लगत पगधूरी  
कमठ पीठ पवि कूट कठोरा ॥

ईश अनेक कर बरे टारे ॥  
गुरु प्रसाद सब विद्या पाई  
कीरति रही भुवत भरि पूरी ॥  
नय समाज मह शिव धनुतोरी

विश्व विजय यश जानकि पाई  
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ॥  
अज्ञ सुफल जग जन्म हमारे  
जे दिन राये तुमहि विनु देवे

आये भवन व्याहि सब भाई ॥  
केवल कौशिक कृपा सुधारे  
देखितात विधु बदन तुम्हारे  
ते विरंचि जनि पारहि लेखे ॥

दो० राम प्रतोषी सातु सब कहि विनीत वर वयन  
सुमिरि शंभु गुरु विप्र पद किये नींद वसनयन ३६३

नींदहु बदन सोहि सुठि लोना  
घर घर करहि जागरा नारी  
पुरी विराजित राजत रजनी ॥  
सुन्दरि कचु सासु लै सोई ॥  
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ॥  
वन्दी साबाध गुणा गरा गाये  
वन्दी विप्र सुर पुर पितु साता  
जननिन्ह सादर बदन निहारे

मनहु सांज सरसीरुह सोना  
देहि परस्पर मंगल गोरि ॥  
रानी कहहि विलोकहु सजनी  
फणिपति जनु धिर मरिा उर गोई  
अरुणा चूड बर बोलन लागे  
पुरजन द्वार जुहारन आये ॥  
याइ अशीश मुदित सब भाता  
भूपति संग द्वार परु धारे ॥

दो० कीन्ह शौच सब सहज श्रुचि सरित पुनीत नहाइ  
प्रात क्रिया करितात पहं आय चारिउ भाइ ॥ ३६४

भूप विलोकि लिवे उर लाइ ॥  
देखि राम सब सभा जुडानी ॥  
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये  
सुतन समेत पूजि पद लागे ॥  
कहाहि वसिष्ठ धर्म इतिहासा  
मुनिमन अराम गाधि सुतकराणी  
वैले वाम देह सब साची ॥  
सुनि अनंद भये सब काह ॥

वैठ हराष राजयस पाइ ॥  
लोचन लाभ अर्वाधि अनुमानी  
सुभरा सुआसन मुनि वैठाये  
निरादि राम देउ उर अनुरागे  
सुनहि महीष सहित गनि लासा  
मुदित वसिष्ठ विपुल विधि वराणी  
कीरत कलित लोक तिहु बाची  
राम लषणा उर अधि कउ काह

दो० मंगल सोदुकाहे नित जाहि दिवस इहि मांति

उमगी अश्वध अन्नंद भरि अधिक २ अधिकात् ३६५

सुदिन साधि कर ककराहारे  
नित नव मुख सु देखि सिहाहे  
विश्वामित्र चलत नितचहही  
दिन २ सदगुरा भूपति भाऊ  
भागत विद्या राउ अनुरागे ॥  
नाथ सकल सम्यदा तुम्हारी ॥  
करब सदा लरिकन परकोह  
असकहि राउ सहितसुतरानी  
दीन्ह अशीश विप्र बहु भाती  
राम सप्रेम संग सब भाई ॥ ॥

मंगल सोदविनाद न थारे ॥  
अश्वधजन्म याचहि विधि पाही  
राम सप्रेम विनय वसु रहही ॥  
देखि सराह महा मुनि राज ॥  
सुतन समेत ठाढ भये आगे ॥  
मैसेवक समेत सुत चारी ॥  
दरशन देत रहव मुनि मोहू ॥  
परउ चरणा मुख आवन वानी  
चलेन प्रीति गीति कहि जाती  
आयसु पाइफिरे यहंचाई ॥

हे रामरूप भूपति भगति व्याह उक्ताह अन्नंद ॥ ॥

जात सराहत मनहि मन सुदित गाधिकुलकन्द ३६६

वासुदेव रघुकुल गुरु ग्यानी  
मुनि मुनि सुयश मनहि मनराज  
वहरे लाग रजायसु भयऊ ॥  
जहं तहं राम व्याह यश गावा  
आये व्याहि राम घर जबते ॥  
प्रभु विवाह यश भयउ उक्ताह  
कविकुल जीवन पावनजानी  
तेहिते मै कछु कहा वरवानी

वहारे गाधि सुत कथा वरवानी  
वरागत आयन पूराय प्रभाऊ ॥  
सुतन समेत न्यति गृह गयेऊ  
सुयश पुनीत लोक तिहुं कावा  
बसे अन्नंद अश्वध सब तब ते ॥  
सकहिं न वररिा मीस अहि नाह  
राम सीय यश मंगल खानी ॥  
करणा पुनीत हेतु निज वानी

छ० निज गिरा पावन करणा कारणा राम यश तुलसी कहो  
रघुवीर चरित अथार वारिधि पार कवि कवने लहो  
उपवीत व्याह उक्ताह मंगल सुनहिं सादर गावहीं  
वैदेहि रामप्रसाद तेजन सर्वदा सुख पावहीं ॥ ६९

सुनि गाय कहौ गिरीशकन्याधन्य अधकारीसही  
 नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुणाभक्तिअनुपमतेलही  
 रघुवीरपद अनुरागजललोभाग्निवेगिबुजावई  
 यहजानि तुलसी दासमनक्रमवचनहरिगुणागावई  
 कठिन कालमल ग्रसिततनु साधतुककुकनहोइ  
 पद्विचारि विश्वास करिहार सुमिरैबुधि सोइ ॥  
 मनहरिपद अनुरागकरह त्यागि नानाकपट ॥  
 महा मोह निशिजाग सोवतवीतेकाल वह ॥॥  
 सियरघुवीर क्वाह जे सप्रेम सादर सुनहि ॥  
 तिनकह सदा उक्ताह मंगलायतन रामयश

इति श्रीरामचरितमनि सेकल कलि  
 कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य विज्ञा  
 न सन्तोष संपादनो नाम प्रथम सोपानः